भूमिका

इस पुस्तक के संबंध में मुझे कुछ नहीं कहना है। हिंदी मे ऐसी पुस्तक की जरूरत थी, यही समझ कर मैंने अपने एक आदरणीय मित्र के आग्रह से इसके लिखने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली।

पुस्तक मे तीन खंड है। पहले खंड मे युद्ध-संबंधी मुख्य घटनाओं की संक्षिप्त तालिका है। दूसरे खंड मे विभिन्न देशो के नक्शे और चार्ट है, जिनकी सहायता से पाठको को अंतर्राष्ट्रीय जगत् की खींच-तान और दाँव-पेच समझने में सुगमता होगी। तीसरे खंड मे कई समयोपयोगी परिशिष्ट हैं जिनके द्वारा पाठकों को विभिन्न देशो के संबंध में बहुत-सी ज्ञातव्य बातों का आसानी से पता लग जायगा।

पुस्तक को समयोपयोगी बनाने की मैंने भरसक चेष्टा की है। लड़ाई के जमाने में पाठको को जिन बातो को जानने की इच्छा या आवश्यकता हो सकती है, उस इच्छा या आवश्यकता को पूरा करने की दृष्टि से सामग्री को जुटाने का इस पुस्तक में प्रयत्न किया गया है।

नक्शे और चार्ट बनाने मे श्री कमलाशंकरसिंह, भूतपूर्व संपादक, "कला", लखनऊ, से मुझे बहुत सहायता मिली है। इसके लिए मैं उनका चिरकृतज्ञ हूँ। पुस्तक के लिखने और दोहराने मे जिन सज्जनों ने सहायता दी है, उनका नामोल्लेख न करना कृतघ्नता होगी। शीघ्र-लिपि-विशारद, श्री छत्रधारी मिश्र, का इस संबंध में विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है। उनके सहयोग के बिना इस पुस्तक का पूरा होना कदापि संभव न था। परिशिष्टों की तैयारी में श्री प्रतापनारायण

विषय		पृष्ठ

—

पहला खंड

युद्ध की महत्त्वपूर्ण घटनायें

नीचे हम वर्तमान युद्ध से सम्बन्ध रखनेवाली विशेष घटनाओं की संक्षिप्त तालिका दे रहे हैं। इसकी सहायता से, आशा है. पाठकों को घटना-क्रम के समझने में सुविधा होगी।

१ सितम्बर—जर्मनी ने, पूर्व घोषणा के विना, पोलैंड पर आक्रमण कर दिया।

३ सतम्बर—ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी को पोलैंड से अपनी फौजे हटा लेने को कहा और निश्चित अवधि के भीतर उत्तर न आने पर जर्मनी के विरुद्ध युद्ध का एलान कर दिया।

६ सितम्बर—जर्मन सेनायें वारसा से केवल ४२ मील दूर रह गईं। पोलैंड की सरकार वारसा से लुबलिन हट गई।

१० सितम्बर—वैस्टरप्लेट के किले के सामनेवाले जंगल में जर्मन-सेना के आग लगा देने पर वहाँ की पोल-सेना ने आत्म-समर्पण कर दिया। फ्रेंच-आर्मर्ड-कारों ने जर्मन प्रदेश मे प्रवेश किया। जर्मन सेनाये वारसा के निकट पहुँच गई। पोलिश सेनायें विश्चुला नदी की ओर हटीं।

रूसी सेनाओं ने, जो रूस और पोलैंड की सीमा पर एकत्र हो रही थीं, पोलैंड पर हमला कर दिया।

१७ सितम्बर—रूसी सेनाये पोलैंड में घुस गई और २४ घंटे में ४० मील बढ़ गईं। ब्रिस्टलेटास्क नामक स्थान पर ये सेनायें जर्मनी की सेना से मिल गईं।

१८ सितम्बर—जर्मन सेनाओं ने लुबलिन को जीत लिया और पोलिश सरकार पोलैंड छोड़कर भाग खड़ी हुई।

२० सितम्बर—पोलिश प्रेसीडेंट पोलैंड से रूमानिया चले गये।

२१-२२ सितम्बर—रूस और जर्मनी में पोलैंड का बँटवारा हो गया।

४ अक्टूबर—हिटलर बर्लिन से वारसा गये।

हंगैरी और रूमानिया में व्यापारिक समझौता हो गया।

जर्मनी ने आश्वासन दिया कि वह लड़ाई में जहरीली गैस का प्रयोग न करेगा।

८ अक्टूबर—वारसा के दक्षिण-पश्चिम १७,००० पोल सिपाहियों ने जर्मनों को आत्मसमर्पण कर दिया।

९ अक्टूबर—एस्टोनिया, लैटविया, लिथुएनिया, आदि, बाल्टिक प्रदेशों से जर्मनो का हटाना शुरू हो गया।

रूस की फौजों ने एस्टोनिया की सीमा की ओर बढ़ना शुरू कर दिया।

१० अक्टूबर—रूस और लिथुएनिया में सन्धि हो गई। इस सन्धि के अनुसार विलना नगर और जिला लिथुएनिया को लौटा दिया जायगा। लिथुएनिया के प्रमुख स्थानों पर रूस को पैदल और हवाई सेनायें रखने का अधिकार मिल गया।

१९ अक्टूबर—टर्की, इँगलैंड और फ्रांस में सन्धि हो गई।

२४ अक्टूबर—रूस और जर्मनी में यह समझौता हुआ कि रूस जर्मनी को १० लाख टन अनाज और चारा देगा।

२७ अक्टूबर—अमेरिका की सीनेट ने शस्त्रों के निर्यात से रोक उठा दी।

३१ अक्टूबर—रूसी सेनायें लैटविया में पहुँच गईं।

४ नवम्बर—८० हज़ार रूसी सैनिक फ़िनलैंड की सीमा पर पहुँच गये।

२८ नवम्बर—रूस के इच्छानुसार फिनलैंड ने अपनी फौजे रूसी सीमा से २५ किलोमीटर दूर हटाना मंजूर कर लिया।

२९ नवम्बर—रूस ने घोषणा की कि फिनलैंड रूस-फिनलैंड-संधि को तोड़ने के लिए ज़िमेवार है, और कहा कि अब इस संधि से रूस अपने को मुक्त हो गया।

३० नवम्बर—रूसी फौजें फ़िनलैंड की सीमा में घुसीं।

११ दिसम्बर—राष्ट्र-संघ में फिनलैंड की अपील पर विचार किया गया। सोवियट रूस ने उस बैठक का बहिष्कार किया।

१२ दिसम्बर—रूस ने राष्ट्रसंघ के प्रस्ताव को कि रूस फिनलैंड से अपनी सेनायें लौटा ले, ठुकरा दिया!

१४ दिसम्बर—राष्ट्र-संघ ने रूस को संघ से बाहर करने का प्रस्ताव बहुमत से स्वीकार कर लिया।

१५ दिसम्बर—फिनलैंड ने रेडियो-द्वारा रूस से सुलह की अपील की।

२६ जनवरी—वायरलेस द्वारा जर्मन सरकार ने रूस-फिन-संग्राम में अपनी तटस्थता घोषित की।

१६ मार्च—रूस और फिनलैंड की सन्धि फिनलैंड की पार्लियामेंट में स्वीकृत हो गई।

२० मार्च—फ्रांस में दलादिए के मंत्रि-मंडल ने इस्तीफा दे दिया और उसके स्थान पर रेनो मंत्रि-मंडल क़ायम हुआ।

२७ मार्च—फिनलैंड के मंत्रि-मण्डल ने इस्तीफा दे दिया और मिस्टर रेंडी के प्रधान मंत्रित्व में नया मंत्रि-मण्डल स्थापित हुआ।

८ अप्रैल—नार्वे की पार्लियामेंट की बैठक में मित्र-राष्ट्रों से अपील की गई कि वे नार्वे के समुद्री तट से अपनी सुरंगे और जंगी जहाज़ हटा लें।

९ अप्रैल—जर्मन सेनाओ ने डैनमार्क की राजधानी कोपनैहैगन, पर अधिकार कर लिया; साथ ही नार्वे पर भी हमला किया। नार्वे की सरकार राजधानी छोड़ कर भाग गई। जर्मनों ने ओसलो पर अधिकार कर लिया।

१७ अप्रैल—ब्रिटिश फौजे नार्वे की फौजों से मिल गईं।

१८ अप्रैल—नार्विक पर ब्रिटिश फौजो का अधिकार हो गया।

९ मई—मि० चेम्बरलेन ने इँगलैंड के प्रधान मंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया। उनके स्थान पर मि० चर्चिल प्रधान मंत्री हुए और उन्होने नया मंत्रिमंडल बनाया। हालैंड और बैलजियम पर जर्मनो ने हमला कर दिया। लक्सेमवर्ग पर भी हमला हुआ। लक्सेमबर्ग की सरकार राजधानी छोड़कर भाग गई।

१३ मई—हालैंड की रानी विल्हैलमीना इँगलैंड भाग गईं।

१४ मई—डच कमाण्डर-इन-चीफ ने हालैंड की सेनाओं को हथियार डाल देने की आज्ञा दे दी।

१५ मई—जर्मन सेनाओ ने फ्रांस के कुछ कसबो पर आक्रमण किया। जर्मन सेनाओं ने हालैंड की राजधानी हेग में प्रवेश किया।

१७ मई—बैलजियम की सरकार ब्रूसेल्स से भाग गई और जर्मन सेना ने ब्रूसेल्स और लूवेन में प्रवेश किया।

१८ मई—जर्मन सेनाओं ने ऐन्टवर्प पर अधिकार कर लिया।

१९ मई—जनरल वेगाँ फ्रांस के जनरल स्टाफ के प्रधान और मित्र-राष्ट्रों के सेनापति बनाये गये।

२३ मई—जर्मनी के भूतपूर्व सम्राट् कैसर विलियम हालैंड से जर्मनी वापस आ गये।

२४ मई—जर्मनो ने बोलोन पर अधिकार कर लिया।

२७ मई—बैलजियम के बादशाह की आज्ञा से बैलजियन सेना ने हथियार डाल दिये।

२९ मई—अँगरेजो ने नार्विक पर अधिकार कर लिया।

३१ मई—अँगरेजी सेना ने फ्लांडर्स से पीछे हटना शुरू कर दिया।

४ जून—कैले जर्मनो के हाथ मे आ गया।

५ जून—डनकर्क पर जर्मनो ने अधिकार कर लिया।

१० जून—इटैली ने मित्र-राष्ट्रो के विरुद्ध लड़ाई की घोषणा कर दी। नार्वे का बादशाह इँगलैंड भाग गया और नार्वे की सेना ने हथियार डाल दिये।

१४ जून—जर्मन सेना ने पेरिस मे प्रवेश किया।

१६ जून—आज रात को फ्रांसीसी प्रधान मंत्री, मोशियो रेनो, ने मंत्रि-मंडल-सहित इस्तीफा दे दिया। मार्शल पेते ने नया मंत्रि-मंडल बनाया।

१७ जून—मार्शल पेतें ने जर्मनी से क्षणिक संधि की प्रार्थना की। स्पेन का डिक्टेटर, जेनरल फ्रैंको मध्यस्थ बना।

१८ जून—श्री मुसोलिनो और श्री हिटलर फ्रांस की प्रार्थना पर विचार करने के लिए म्यूनिक में मिले।

१९ जून—हर हिटलर ने फ्रांस की सरकार से संधि के विषय में बातचीत करने के लिए प्रतिनिधि भेजने को कहा। फ्रांस से छः प्रतिनिधि श्री हिटलर से मिलने गये।

२५ जून—जर्मनी और फ्रांस में तथा फ्रांस और इटैली मे आज से क्षणिक संधि हो गई। इसके अनुसार युद्ध-काल के लिए फ्रांस के उत्तरी और पश्चिमी तट पर जर्मनी का अधिकार स्थायी संधि न होने तक रहेगा। फ्रेंच फौजें हथियार डाल देगी। जंगी बेड़े भी निःशस्त्र कर दिये जायँगे।

—

संसार में साम्राज्यों का वितरण
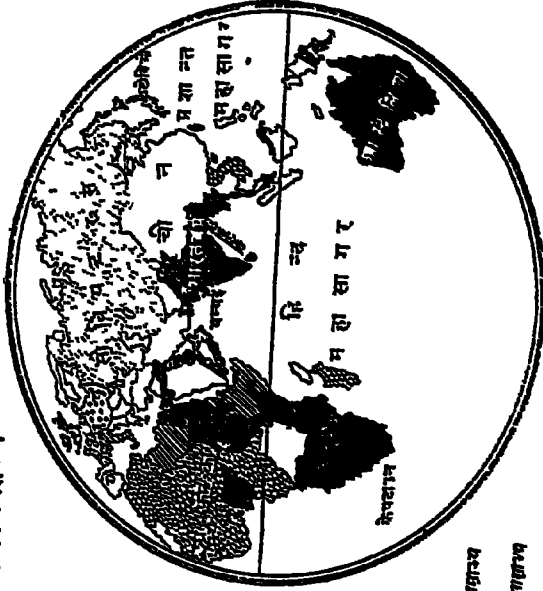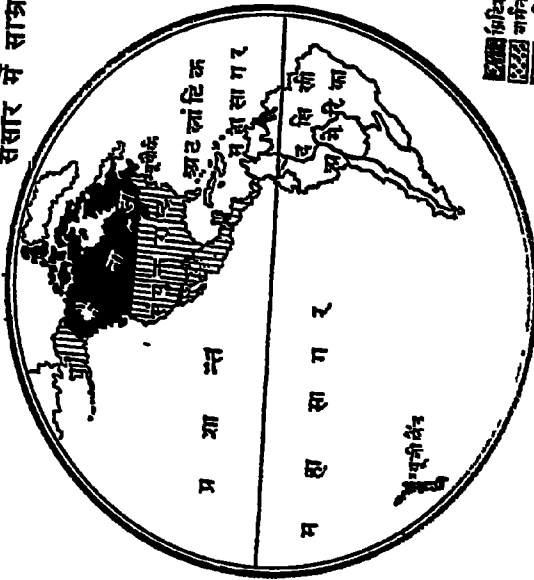
संसार में साम्राज्यों का वितरण

इस मानचित्र के देखने से पाठको को संसार में साम्राज्यों के विस्तार का आसानी से अंदाजा लग जायगा। काले रंग से रँगे हुए भाग ब्रिटिश साम्राज्य के क्षेत्रफल को सूचित करते हैं। फ़्रांस के साम्राज्य और रूस के विस्तार का भी अनुमान इस नक्शे से पाठकों को हो जायगा। नीचे हम तुलना के लिए इँगलैंड, फ़्रांस, जर्मनी, जापान, रूस, बैलजियम, हालैंड, इटैली और संयुक्त-राष्ट्र, अमेरिका, के विस्तृत साम्राज्यों के क्षेत्रफलों और जन-संख्याओं के आँकड़े दे रहे हैं :—

संख्या	देश	क्षेत्रफल (हज़ार वर्गमील में)	जन-संख्या (लाख में)
१	ब्रिटिश साम्राज्य	१,३३,५५,	५०,०८,
२	फ़्रैंच ,,	४८,३०,	१०,६८,
३	रूस ,,	८०,९६,	१६,५८,
४	इटैली ,,	२७,२४,	५,३५,
५	संयुक्त-राष्ट्र, अमेरिका	४३,९४,	१५,२७,
६	हालैंड	८,१३,	६,९७,
७	बैलजियम	९,१४,	१,८३,
८	जापान	२,६१,	९,७७,
९	जर्मनी	१६,०२,	१२,९८,

ऊपर के आँकड़ों के विषय मे एक-दो बातों को ध्यान में रखना ज़रूरी है। रूस के आँकड़ों में पोलैंड और फिनलैंड के उन भागों के क्षेत्रफलों और जन-संख्याओं के आँकड़े नहीं शामिल हैं जिन पर रूस का सितम्बर सन् १९३९ के बाद अधिकार हुआ है। जर्मनी के क्षेत्रफल और जन-संख्या के आँकड़ों के अंतर्गत हमने बैलजियम और हालैंड के सिर्फ़ योरोपीय भागों, क्षेत्रफलों और जन-संख्याओं को शामिल किया है।

भारत के कांग्रेसी सूबे

१ संयुक्त प्रांत
२ बिहार
३ उड़ीसा
४ मध्य भारत
५ मद्रास
६ बम्बई
७ सीमा प्रांत
८ आसाम
९ बंगाल
१० पंजाब
११ सिंध
कांग्रेसी सूबे
अर्ध-लीगी सूबे
स्वतंत्र दल
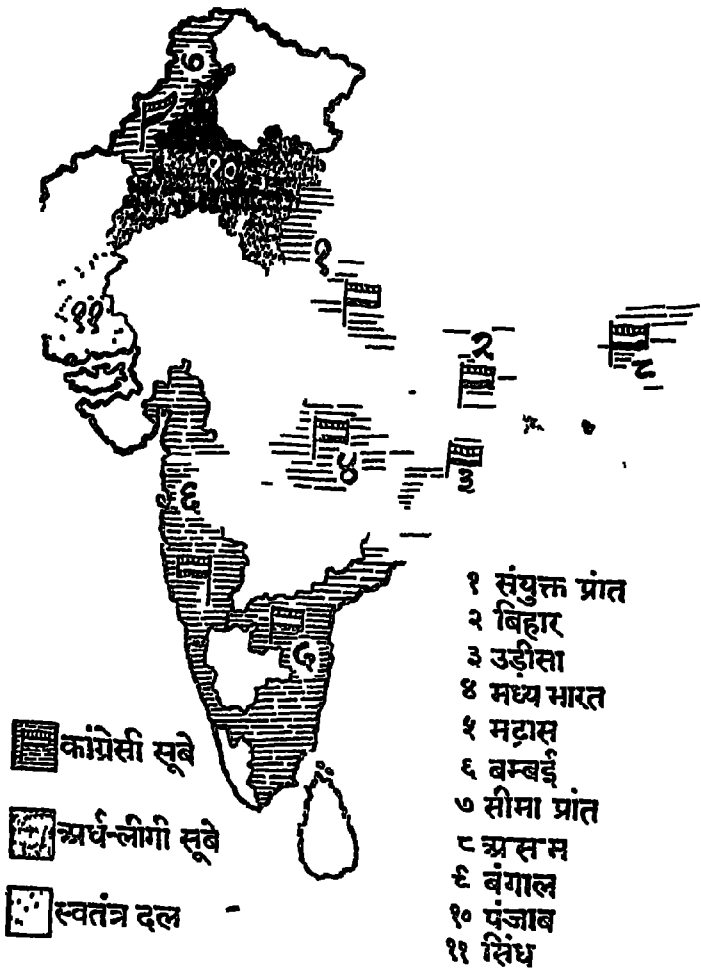
भारत के कांग्रेसी सूबे

हिन्दुस्तान में ११ प्रान्त और ४ चीफ कमिश्नरियाँ हैं। प्रान्तों का क्षेत्रफल ८ लाख वर्गमील से कुछ अधिक है और इनकी आबादी २५ करोड़ ३५ लाख है जिनमें १७ करोड़ ७१ लाख हिन्दू, ६ करोड़ ६२ लाख मुसलमान और ५१ लाख देशी ईसाई हैं। सब चीफ कमिश्नरियों का सम्मिलित रकबा १७ हजार वर्गमील और आबादी १५ लाख के लगभग है। जुलाई सन् १९३७ से सन् १९३९ के अन्तिम चरण तक ८ प्रान्तों में कांग्रेसी मंत्रि-मंडलों का दौरदौरा रहा। योरप में लड़ाई छिड़ जाने के कारण इन मंत्रि-मंडलों ने अपने-अपने पदों से इस्तीफा दे दिया क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध-घोषणा में भारतवर्ष को उसकी अनुमति के बिना शामिल कर लिया। बंगाल और पंजाब में अप्रैल सन् १९३७ से अकांग्रेसी मंत्रि-मंडल शासन कर रहे हैं। वहाँ के मंत्रि-मंडलों में लीगियों का प्राधान्य है। सिन्ध, पंजाब, सीमा-प्रान्त और बंगाल मुस्लिम-प्रधान प्रान्त हैं, क्योंकि इनमें मुसलमानों की संख्या हिन्दुओं की आबादी से अधिक है। शेष प्रान्तों में मुसलमान अल्पसंख्यक हैं। ११ प्रान्तो में ६ करोड़ ५७ लाख मुसलमान हैं। बंगाल, पंजाब, सिन्ध और सीमा-प्रान्त में कुल मिला कर ४ करोड़ ६९ लाख मुसलमान बसते हैं। इन चार प्रान्तों की मुस्लिम आबादी हिन्दुस्तान की कुल मुसलमान जन-संख्या का ७५ प्रतिशत है। कांग्रेसी प्रान्तों का सम्मिलित क्षेत्रफल ४½ लाख वर्गमील के ऊपर और आबादी १४½ करोड़ है।

भारतवर्ष
प्रान्त और रियासतें

भारत की रियासतें

भारतवर्ष में ५६२ या ५६३ देशी रियासतें हैं। इनमें से कुछ तो बहुत बड़ी हैं, और कुछ बेहद छोटी। बाज़-बाज़ तो इतनी छोटी हैं कि क्षेत्रफल और आमदनी में इनकी तुलना साधारण जमींदारियो से भी नहीं की जा सकती।

सब रियासतें अँगरेज़ी सरकार के अधीन है, यद्यपि सबको घरेलू मामलों में कम या अधिक आज़ादी प्राप्त है। ब्रिटिश सरकार बाहरी आक्रमणों और घरेलू बलवो से रियासतो को बचाने के लिए ज़िम्मेदार है। कुप्रबंध के प्रमाणित होने पर ब्रिटिश शासन देशी रियासतो के घरेलू मामलों में भी हस्तक्षेप करता है और दोषी राजा या नवाब को गद्दी से उतारने के अधिकार को काम में ला सकता है।

रियासतों का शासन स्वेच्छाचारी और अनियंत्रित है, यद्यपि प्रमुख रजवाड़ो में न्यूनाधिक सुधार हो चुके या हो रहे हैं। बड़ौदा, ट्रावन्कोर, मैसूर और कोचीन तथा हैदराबाद ने काफी शिक्षा-सम्बन्धी और औद्योगिक उन्नति की है। अधिकतर रजवाड़ों की शासन-प्रणाली दकियानूसी है।

भारतीय आज़ादी और स्वराज्य की दृष्टि से इन रियासतो का विशेष महत्त्व है। प्रजासत्तात्मक प्रान्तो और स्वेच्छाचारी शासकों के रजवाड़ों को एक संघशासन में लाने की योजना टेढ़ी समस्या बन गई है। जब तक रियासतों की प्रजा को शासन के पूर्ण अधिकार न मिल जायँ तब तक इस मसले पर प्रान्तों और रियासतों के बीच समझौता होना कठिन है।

भारतवर्ष की कुल देशी रियासतों का क्षेत्रफल ६ लाख ९० हज़ार वर्गमील है। इनकी जन-संख्या सन् १९३१ में ७ करोड़ ९१ लाख थी, जिनमें ६ करोड़ १५ लाख हिन्दू, ११ लाख सिक्ख, १ करोड़ ६ लाख मुसलमान और २४ लाख देशी ईसाई थे।

हिन्दू संघ बनाम मुस्लिम संघ
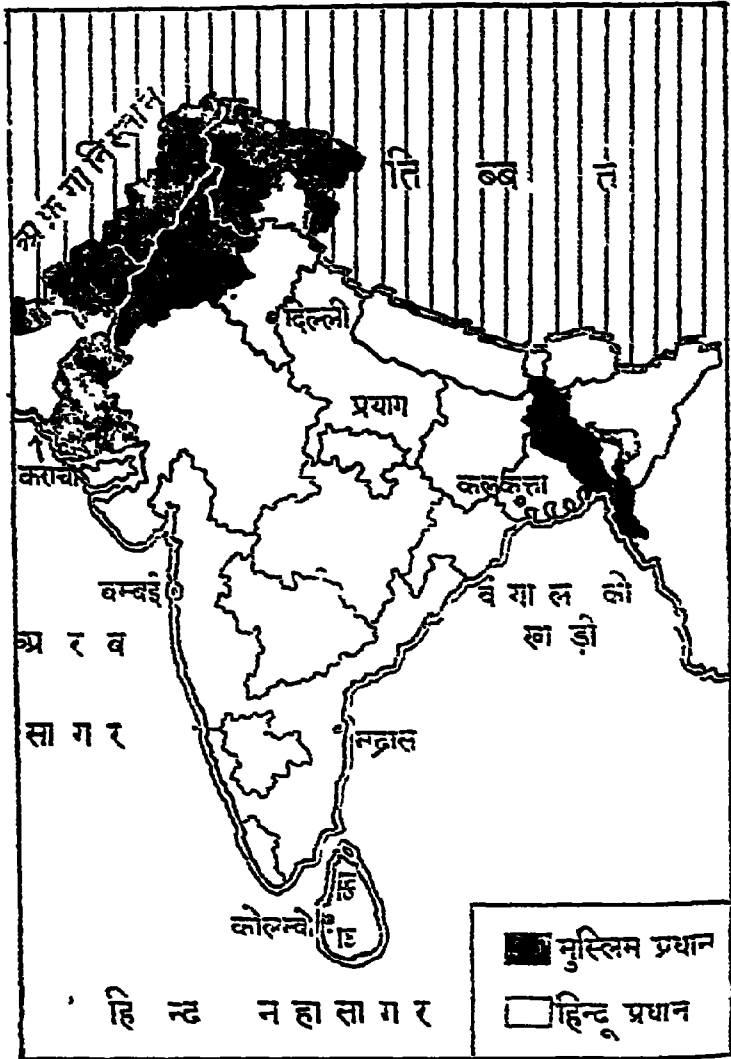
हिंदू संघ बनाम मुस्लिम संघ

मुस्लिम लीग का पिछला सालाना जलसा लाहौर मे हुआ था। इस जलसे मे यह फैसला हुआ कि हिन्दुस्तान हिन्दू और मुस्लिम हिस्सों में बाँट दिया जाय और दोनों हिस्से पूर्ण रूप से स्वतंत्र हों। मुस्लिम लीग की राय है कि जिन सूबों मे मुसलमानों की आबादी ज्यादा है, उनका एक अलग संघ बनाया जाय; और जिन सूबों में हिन्दुओं की आबादी ज्यादा है, उन सूबो को लेकर एक हिन्दू-संघ की रचना हो। सारे हिन्दुस्तान को एक संघ में बाँधने की नीति का मुस्लिम लीग जोरो से विरोध करती है, क्योंकि उसकी सम्मति में भारतीय संघ में मुसलमानो को, अल्पसंख्यक होने के कारण, सदा बहुसंख्यक हिन्दुओं का ग़ुलाम होकर रहना पड़ेगा।

ब्रिटिश गवर्नमेंट, कांग्रेस, देशी रजवाड़े, सिक्ख, जाट आदि तथा अनेक मुस्लिम दल हिन्दू-मुस्लिम बँटवारेवाले इस प्रस्ताव के विरोधी है। सब मुसलमान भी लीग की बात को एक स्वर से स्वीकार करने को तैयार नहीं है। मुस्लिम संघ की योजना के पक्ष-विपक्ष में तरह-तरह की दलीलें दोनो तरफ़ से सुनने मे आती है। इन दलीलो पर विचार करने का न तो यहाँ स्थान है, और न हमारा इरादा ही है। हम तो सिर्फ अपने पाठको को इस नक्शे-द्वारा यह बता देना चाहते हैं कि अगर मुस्लिम लीग की बात मान ली जाय और हिन्दुस्तान दो साम्प्रदायिक खंडो मे विभक्त हो जाय तो देश के दो खंडों का वास्तविक क्या स्वरूप होगा।

देश में ग्यारह प्रान्त, तीन चीफ कमिश्नरियाँ और ५६२ रजवाड़े हैं। ११ प्रान्तों में सिर्फ ४ प्रान्त ऐसे हैं जिनमें मुसलमानो की आबादी ५१% से अधिक है; लेकिन इन चार प्रान्तो में भी दो प्रान्त—बंगाल और पंजाब—ऐसे हैं, जिनको हम आसानी से दो खंडो मे बाँट सकते है; अर्थात्, एक खंड जिसमें मुसलमानों की ५१ फी सदी से अधिक आबादी है और दूसरा खंड वह जिसमें

हिन्दुओं की अधिकता है। बंगाल के २८ जिलों में से १४ पश्चिमी ज़िले हिन्दू-प्रधान हैं जिनमें मुसलमानों की आवादी कम है। इसी तरह पूर्वी पंजाब में हमें ऐसे १२ ज़िले मिलते हैं जिनमें मुसलमानों की आवादी कम है। इसलिए अगर प्रान्तो का साम्प्रदायिक बँटवारा किया गया तो मुस्लिम संघ में सिन्ध, सीमाप्रान्त, पश्चिमी पंजाब के ११ जिले और पूर्वी बंगाल के १४ ज़िले शामिल होंगे। इस संघ में एक चीफ कमिश्नरी अर्थात् बलोचिस्तान की कमिश्नरी भी चली जायगी। ५६३ रियासतों में से सिर्फ़ ६ रियासतें ऐसी हैं जिनमें मुसलमानों की आवादी हिन्दुओ की तुलना में अधिक है, अतएव इन रियासतों को भी हमें मुस्लिम संघ में मिला देना चाहिए। असम प्रान्त के सिलहट ज़िले को हम उस प्रान्त से निकाल कर मुस्लिम-प्रधान पूर्वी बंगाल में जोड़ सकते हैं, क्योंकि सिलहट की २८ लाख जनता मे १६ लाख मुसलमान हैं। काश्मीर की रियासत से पूर्वी जम्मू का भाग निकल कर हिन्दू-संघ में चला जायगा, क्योंकि इस भूखंड में हिन्दुओ की प्रधानता है।

मुस्लिम संघ में शामिल होनेवाले प्रान्तो और कमिश्नरियों का सम्मिलित रकवा १,८५,००० वर्गमील होगा और आवादी ५ करोड़ ४१ लाख होगी; अर्थात्, १ करोड़ २६ लाख हिन्दू, १४ लाख सिख और ३ करोड़ ५३ लाख मुसलमान होंगे। यदि ऊपर के आँकड़ों में उन छः देशी रियासतो के आँकड़े भी जोड़ दिये जायँ जिनमे मुसलमानो का बहुमत है तो कुल मिला कर मुस्लिम संघ का रकवा ३ लाख ६७ हज़ार वर्गमील और आवादी ५ करोड़ ८६ लाख हो जायगी। इस जन-संख्या में हिन्दू १ करोड़ ३० लाख, सिख १४ लाख और मुसलमान ३ करोड़ ९४ लाख होंगे। इसके विपरीत हिन्दू संघ रकबे में ११ लाख ५१ हज़ार वर्गमील होगा और

२८ करोड़ की आबादी होगी। इन २८ करोड़ में २२ करोड़ ६३ लाख हिन्दू, ३ करोड़ ७४ लाख मुसलमान और १८ लाख सिख होंगे।

हिन्दुस्तान के प्रत्येक ७७ मुसलमानो में से ३९ मुसलमान मुसलिम संघ की छत्र-छाया में बसेंगे, लेकिन उन्हीं के शेष ३८ भाइयो को हिन्दू संघ में रहना पड़ेगा। देशी रियासतो में रहनेवाले प्रत्येक १०६ मुसलमानों में से सिर्फ ४१ ऐसे मुसलमान होंगे जो मुसलिम संघ में चले जायँ; बाकी ६५ मुसलमानो को हिन्दू संघ में रहना पड़ेगा।

मुसलिम संघ एक ठोस राष्ट्र न होगा। उसके दो खंड होंगे, जो हिन्दू संघ की दाईं और बाईं दो खंडित भागों की तरह लटकते रहेंगे। पश्चिम में अमृतसर से लेकर पूर्वी बंगाल की सीमा तक और हिमालय से लेकर कन्या-कुमारी तक हिन्दू संघ का अखंड विस्तार होगा।

मुसलिम संघ की स्वतन्त्र स्थापना के बाद, भारतवर्ष की पश्चिमी और पूर्वी सीमाओं की रक्षा का भार मुसलिम संघ के पश्चिमी और पूर्वी खंडो को सँभालना पड़ेगा। सिन्ध, बलोचिस्तान और सीमा-प्रान्त आज दिन भी दिवालिया प्रान्त हैं। केन्द्रीय खज़ाने से उन्हें जो करोड़ों रुपयों की सहायता मिलती है, उसी के बल पर उनका घरेलू काम किसी तरह चलता है। बटवारा हो जाने पर मुसलिम संघ के इन प्रान्तों को केन्द्र से इस तरह की सहायता नहीं मिल सकेगी। इधर तो आमदनी बंद हो जायगी और उधर फ़ौजी ख़र्च का बहुत बड़ा बोझ मुसलिम संघ के प्रान्तों के मत्थे पड़ जायगा। यह विचारणीय बात है कि आर्थिक दृष्टि से क्या मुसलिम संघ हिन्दुस्तान के पश्चिमी और पूर्वी सीमाओं की रक्षा का भार निकट-भविष्य में उठा सकेगा ?

भारत के पश्चिमी पड़ोसी - अफ़गानिस्तान, ईरान और रूस
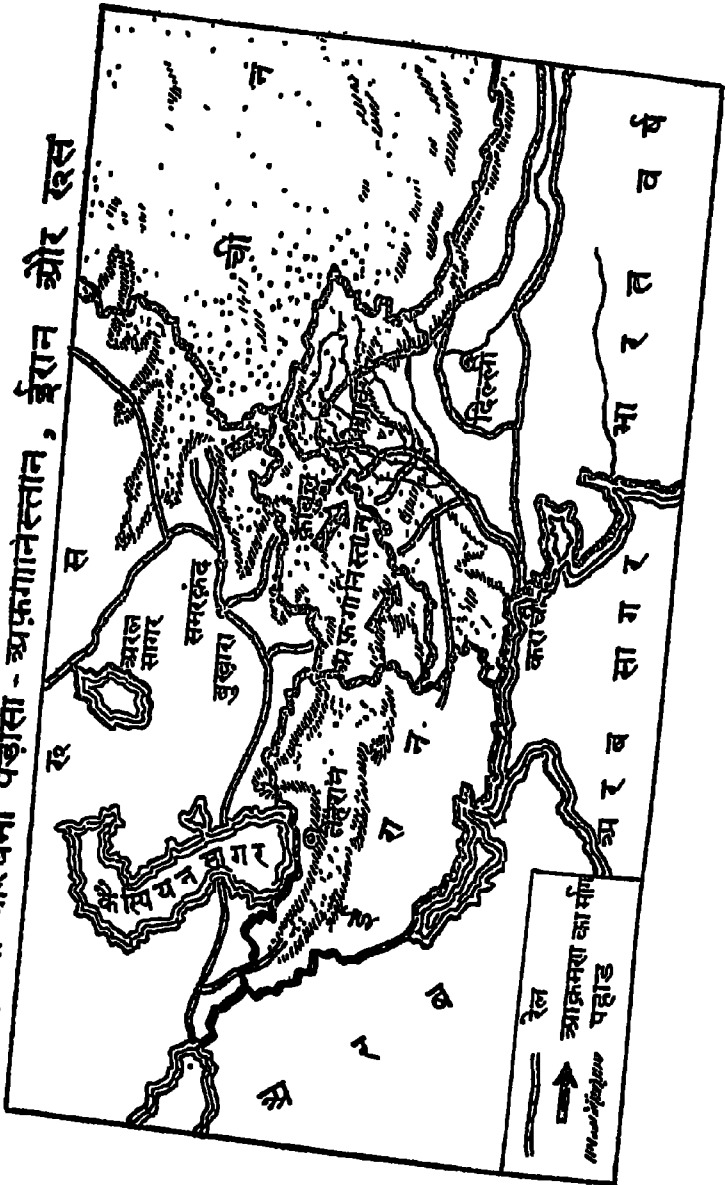
भारतवर्ष के पश्चिमी पड़ोसी

भारतवर्ष के उत्तर में चीन और रूस, उत्तर-पश्चिम में अफ़ग़ानिस्तान और पश्चिम में ईरान है। अफ़ग़ानिस्तान का हिन्दुस्तान से बहुत पुराना सम्बंध चला आता है। चंद्रगुप्त मौर्य के समय से हिंदुस्तान की रक्षा की कुंजी अफ़ग़ानिस्तान ही रहा है। रूस अफ़ग़ानिस्तान के उत्तर मे है। जब तक अफ़ग़ानिस्तान स्वतंत्र है तब तक भारतवर्ष को रूस से कोई विशेष ख़तरा नहीं पहुँच सकता, लेकिन मौजूदा लड़ाई में हालैंड, बैलजियम, डैनमार्क और नार्वे की दशा को देख कर यह अब नहीं कहा जा सकता कि एक सुसज्जित विदेशी सेना की गति को रोकने में अफ़ग़ान कहाँ तक समर्थ हो सकते हैं। हवाई जहाजो ने भी परिस्थिति में व्यापक उलट-फेर कर दिया है। अफ़ग़ानिस्तान प्रगति मे आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है, लेकिन देश ग़रीब है और आधुनिक लड़ाई के साधन बहुत महँगे हैं।

शाह रजाशाह साहब पहलवी के प्रयत्नों से ईरान अपने युगों के पुराने कोढ़ के दूर करने में तत्परता के साथ लगा है। मिट्टी के तेल के कारण ईरान का अंताराष्ट्रीय महत्त्व बहुत बढ़ा-चढ़ा है। ग्रेट ब्रिटेन को ईरान से मिट्टी के तेल की प्राप्ति बहुत बड़े परिमाण में होती है। इस दृष्टि से ईरान की स्वतंत्रता ग्रेट ब्रिटेन के हित मे परमावश्यक है; क्योकि यदि ईरान पर किसी दूसरी शक्ति का प्रभुत्व स्थापित हो जाय तो मिट्टी के तेल की प्राप्ति ग्रेट ब्रिटेन के लिए कठिन हो जायगी। सैनिक दृष्टि से ईरान कमजोर है और रूस यदि भारतवर्ष पर हमला करना चाहे तो उसके लिए दो ही मार्ग हो सकते हैं। ईरान या अफ़ग़ानिस्तान से होकर वह हिन्दुस्तान की ओर बढ़ सकता है। दोनों ही मार्ग प्राकृतिक दृष्टि से दुर्गम हैं, और भारत की रक्षा के यथोचित प्रबन्ध की ओर अब अधिकाधिक ध्यान दिया जा रहा है। (ईरान का नक्शा देखिए।)

—

भारत के पूर्वी पड़ोसी: बर्मा और श्याम
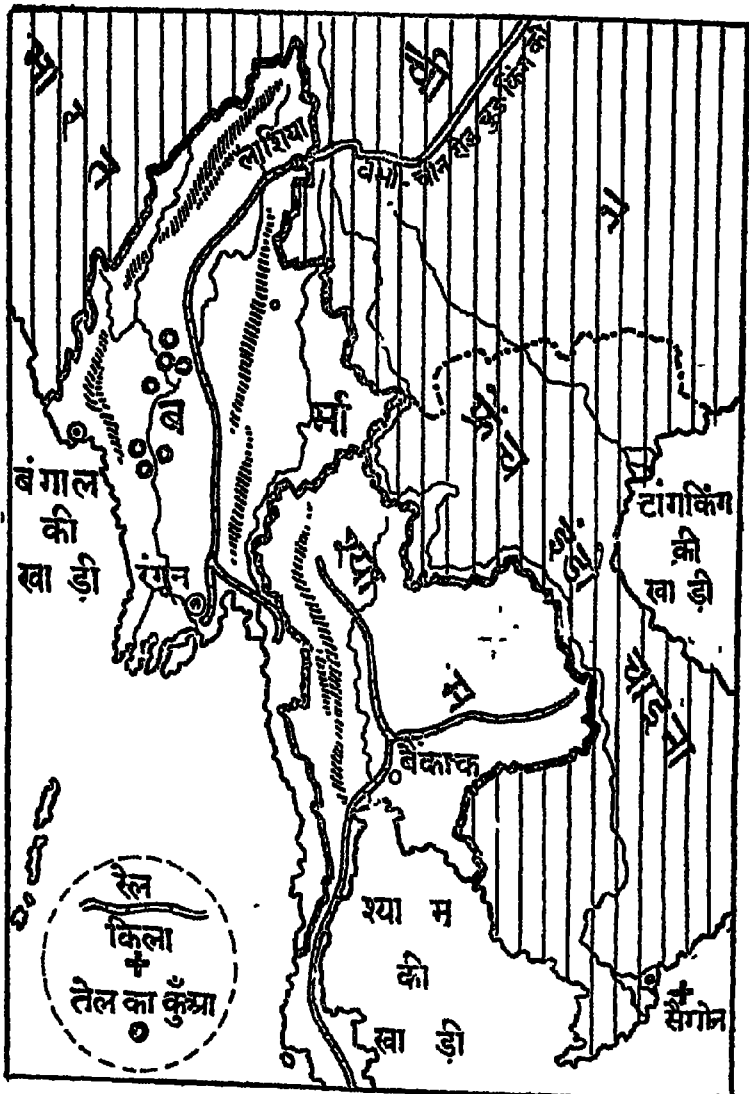
भारत के पूर्वी पड़ोसी

बर्मा और श्याम

बर्मा वर्षों तक भारत का एक प्रांत रहा, लेकिन सन् १९३५ के गवर्नमेंट आफ़ इंडिया एक्ट के अनुसार वह अप्रैल १, १९३७, से ब्रिटिश साम्राज्य का एक अलग राज्य बन गया। जहाँ तक बाहरी आक्रमणों से बचाने की ज़िम्मेदारी का प्रश्न है वहाँ तक भारतवर्ष और बर्मा अप्रैल १, १९३७, के बाद भी एक ही हैं। हिन्दुस्तान से बर्मा को अलग करने के विषय में भारतीय जगत् मे काफी मतभेद है, और इस प्रस्ताव का सन् १९३५ के पहले घोर विरोध भी हुआ। बाहरी आक्रमणों का मुकाबिला करने मे बर्मा उतना ही सबल या निर्बल है जितना भारतवर्ष।

श्याम का राज्य बर्मा के परली तरफ़ है। इसके उत्तर और पूर्व मे फ्रांस का इंडोचीन, दक्षिण में श्याम की खाड़ी और पश्चिम में बर्मा है। आज दिन भी इस देश में हिन्दू और बौद्ध संस्कृतियों की प्रधानता है। धर्म की दृष्टि से, श्याम बौद्ध है। पिछले सालों ने यहाँ अनेक राजनीतिक हलचलें देखीं। उन्हीं का यह परिणाम था कि मार्च सन् १९३५ में श्याम के नरेश प्रजाधिपोक को गद्दी छोड़नी पड़ी। इसका अंताराष्ट्रीय महत्त्व बहुत अधिक है। हिंदुस्तान की रक्षा के लिए श्याम का किसी शक्तिशाली राष्ट्र के हाथ मे चला जाना बहुत बड़े खतरे की बात होगी। वह वर्षों से जापान और ग्रेट ब्रिटेन की विरोधी नीतियो का अखाड़ा बन रहा है। कुछ वर्ष पहले श्याम का ग्रेट ब्रिटेन के साथ बहुत अधिक व्यापारिक सम्बन्ध था, लेकिन सन् १९३१—३४ में जापान ने श्याम के साथ अपने व्यापार में पँचगुनी वृद्धि कर ली।

ग्रेट ब्रिटेन

ओर्कनी द्वीप
स्कैपा फ्लो
उत्तरी
ऐवरडीन
रोसिथ
एडिनबरा
सागर
ग्लासगो
लंडनडेरी
बेलफास्ट
डबलिन
मैनचेस्टर
लिवरपूल
बरमिंघम
कौर्क
क्वीसटाउन
बेयरहेवेन
कार्डिफ़
लंदन
चैथम
टेम्स नदी
पोर्ट्समाउथ
डीवनपोर्ट
जर्सी
पेरिस
+ समुद्री व्यूह
राजधानी
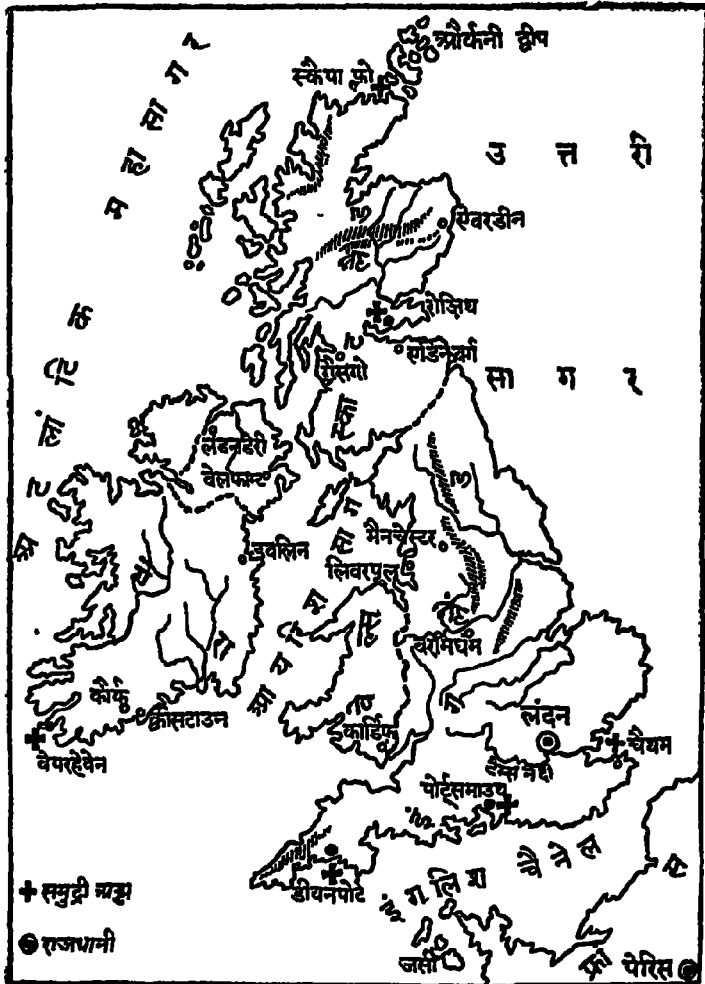
ग्रेट ब्रिटेन

ग्रेट ब्रिटेन इस समय योरप की रण-भूमि मे अकेला खड़ा मानव-स्वाधीनता, अंतःकरण की स्वतंत्रता, व्यक्ति के अधिकारों और निर्बल राष्ट्रों के स्वतंत्र-जीवन की रखवाली के लिए जर्मनी और इटैली के दुर्दमनीय हमलो का सामना करने को खड्ग-हस्त है। सन् १०६६ ई० के बाद से अब तक इँगलैंड पर किसी विदेशी सेना ने हमला नहीं किया, लेकिन मालूम होता है कि जिस काम को नैपोलियन नहीं कर सका, उसे अब हिटलर करने जा रहा है। यदि ग्रेट ब्रिटेन इस युद्ध में हार गया तो योरप में आज़ादी [का आखीरी चिराग भी बुझ और वह फिर एक बार अकथ बर्बरता के घटाटोप अंधकार में विलुप्त हो जायगा। ग्रेट ब्रिटेन लड़ेगा और बहादुरी के साथ लड़ेगा। अगर ग्रेट ब्रिटेन पर जर्मनो का कब्ज़ा हो गया तो भी ब्रिटिश-साम्राज्य उस समय तक जर्मनी और इटैली के खिलाफ लड़ता रहेगा जब तक योरप में बर्बर तानाशाही का खात्मा न हो जायगा। कैनाडा, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड ग्रेट ब्रिटेन की सहायता के लिए जी जान तोड़ कर कोशिशें कर रहे हैं। अमेरिका का संयुक्तराष्ट्र भी ग्रेट ब्रिटेन को हर प्रकार की सामग्री मुक्त-हस्त भेज रहा है। ब्रिटिश साम्राज्य की अँगरेज़ी-भाषी प्रजा बरबस रडिएर्ड किप्लिंग की उन प्रसिद्ध पंक्तियों को इस समय दोहरा रही है, जिनका भावार्थ है—'कौन जियेगा यदि इँगलैंड मर गया; कौन मरता है यदि इँगलैंड जीता रहा।'

भारतवर्ष के सभी दल जर्मन और इटैलियन बर्बरता के विरोधी हैं। यदि ग्रेट ब्रिटेन इस समय भारत की स्वाधीनता के मसले को उदारता, विश्वास और निर्भीकता के साथ तय कर दे तो इस युद्ध में हिन्दुस्तान के अपार जन-बल तथा उसके अथाह सांपत्तिक साधनो का सहयोग इँगलैंड को सहज ही मे प्राप्त हो जाय।

जर्मनी

उत्तरी सागर
डेनमार्क
बाल्टिक सागर
विल्हेल्मशेवेन
कील
स्टेटिन
कोनिग्सबर्ग
ब्रेमेन
हनोवर
एल्ब नदी
बर्लिन
फ्रेंकफर्ट
एसेन
कोलोन
राइन नदी
लिपजिग
ब्रेसलाऊ
पोलैंड
रूस
रुमानिया
प्रेग
पिल्सेन
नूरम्बर्ग
स्टटगार्ट
म्यूनिक
आस्ट्रिया
स्लोवाकिया
उज़्गोरोड
डेन्यूब नदी
हंगेरी
बेसल
स्विट्ज़रलैंड
जर्मनी के कब्जे में
किला
समुद्री अड्डा
१९१८ में जर्मनी का छीना हुआ भू-भाग
१९१९ के बाद जर्मनी की वृद्धि

जर्मनी

सन् १९१९ की संधि के बाद जर्मनी का विस्तार १ लाख ८१ हज़ार वर्गमील और जन-संख्या ६ करोड़ ६२ लाख के लगभग थी। सार लैंड और आस्ट्रिया पर अधिकार मिल जाने के बाद सन् १९३८ में उसका क्षेत्रफल २ लाख १४ हज़ार वर्गमील और जन-संख्या ७ करोड़ ३० लाख हो गई। मार्च सन् १९३९ में जर्मनी ने चैकोस्लोवाकिया के राष्ट्र का अंत कर दिया और इस तरह २९ हज़ार वर्गमील और १ करोड़ निवासी उसकी अधीनता में आ गये। सितम्बर सन् १९३९ में पोलैंड की विजय से जर्मनी के क्षेत्रफल में ६८ हज़ार वर्गमील की और निवासियों में लगभग २½ करोड़ की वृद्धि हुई। नार्वे, डैनमार्क, हालैंड और बैलजियम पर क़ब्ज़ा कर लेने से उसके विस्तार में २४ लाख वर्गमील और आबादी में २ करोड़ ३० लाख की बढ़ती हो गई। अर्थात्, सन् १९३३ से जून सन् १९४० तक सात साल की अवधि में जर्मनी के शासन का क्षेत्रफल १ लाख ८१ हज़ार से बढ़ कर ५॥ लाख वर्गमील के समीप पहुँच गया, और उसके मातहतो की संख्या ६। करोड़ से २३ करोड़ के लगभग हो गई। जिन देशों की स्वाधीनता उसने इस समय कुचल दी है, वे फिर निकट भविष्य में उसके चंगुल से छुटकारा पाकर स्वतंत्र हो जायँगे—इसमे हमें तनिक भी सन्देह नहीं है। फ़्रांस ने भी जर्मनी के सामने घुटने टेक दिये।

इंगलैंड का घेरा

उत्तरी सागर
हल
नार्विच
यारमथ
लंदन
साउदैम्पटन
डोवर
बोलोन
इंगलिश चैनेल
हाव्र
फ्रांस
पेरिस
ऐम्सटरडम
हेग
घेन्ट
ब्रुसेल्स
लीज
लक्सेमबर्ग
जर्मनी
बर्लिन
ब्रेमेन
हैमबर्ग
राजधानी
प्रमुख किला
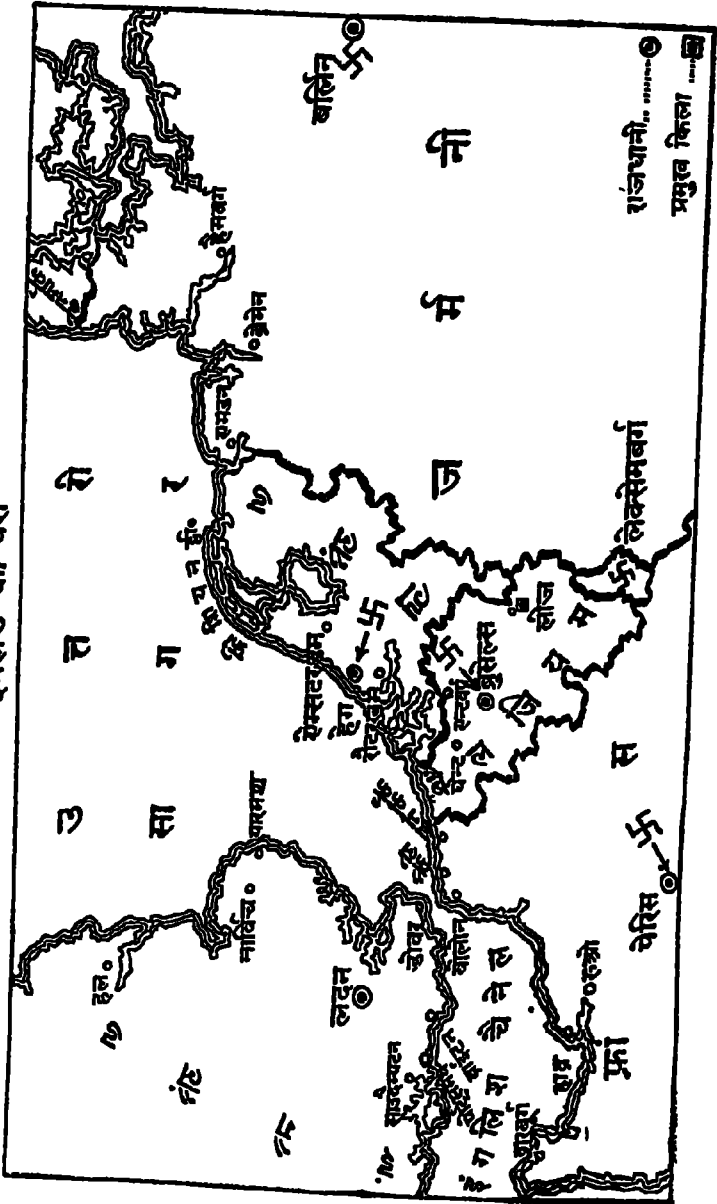
इँगलैंड का घेरा

क्या फ्रांस के पतन के बाद, जर्मनी ग्रेट ब्रिटेन के समुद्री व्यापार को रोकने की चेष्टा करेगा, और क्या वह अपने इस मन्सूबे में सफल भी हो जायगा? आजकल यही प्रश्न सबकी ज़बान पर है। लंदन में अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र का जो राजदूत है, उसने हाल ही मे इसी घेरे की आशंका के विषय मे वक्तव्य देते हुए कहा है कि संसार के इतिहास में सबसे बड़े घेरे का अब आरम्भ होनेवाला है। नार्वे से लेकर फ्रांस के दक्षिणी तट तक जर्मनो का अधिकार है। योरप के पश्चिमी तट के प्रायः सभी बन्दरगाहों और हवाई जहाजों के अड्डे जर्मनो के अधिकार मे है, और इन स्थानो से ग्रेट ब्रिटेन के पूर्वी तटो पर आसानी से शत्रु हमला कर सकता है। फ्रांस, बैलजियम और हालैंड इँगलैंड और स्काटलैंड के बहुत समीप हैं। कहीं-कहीं तो केवल २१-२२ मील ही का अन्तर है।

हाल में जो अस्थायी संधि फ्रांस ने जर्मनी और इटैली के साथ की है, उसकी एक यह भी शर्त है कि फ्रैंच नाविक बेड़ा जर्मनों के हवाले कर दिया जायगा, और यद्यपि उन्होंने उसके अधिकांश को निरस्त्र करने का वचन दिया है, लेकिन ऐसे वादो को नात्सी शासक प्रायः भूल जाया करते है। इँगलैंड के प्रधान मंत्री ने फ्रांस की सरकार-द्वारा की गई संधि मे फ्रैंच नाविक बेड़े से सम्बन्ध रखनेवाली उपर्युक्त शर्त की स्वीकृति की तीव्र निन्दा की है क्योकि वह इँगलैंड के साथ फ्रांस की संधि के विपरीत है। इस शर्त के कारण समुद्री परिस्थिति और भी विषम हो गई है। अब ग्रेट ब्रिटेन के जंगी बेड़े की जिम्मेदारी कहीं अधिक गम्भीर और गुरुतर हो जायगी क्योकि ब्रिटेन के जीवन के लिए समुद्री मार्ग का निरापद रहना नितान्त आवश्यक है।

इटैली
ज र्म नी
प्रमुख किला
समुद्री अड्डा
पहाड़
दर्रा
स्विट्ज़रलैंड
ब्रेनर दर्रा
सिम्पलन
लिटिल सेंट बर्नर्ड
मिलान
वेनिस
पोला
ट्यूरिन
पो नदी
माउंट सेनिस
जेनेवा
स्पेज़िया
फ्लोरेंस
यूगोस्लाविया
एड्रियाटिक सागर
कोर्सिका
(फ्रा०)
रोम
स्कूतारी
डुराज़ो
ब्रिंडिसी
सार्डीनिया
नेपल्स
टिरैनियन सागर
आयोनियन सागर
कगलिआरी
मेसिना
पालर्मो
कटानिआ
पैटलेसिया
भूमध्य सागर

इटैली

इटैली के राजा का नाम विक्टर इमैन्युएल तृतीय है, पर वहाँ का असली भाग्य-विधाता वह व्यक्ति है जिसका नाम सिन्योर मसोलिनी है। भूमध्य सागर के किनारे पर बसे हुए देशों पर अधिकार जमा कर रोमन साम्राज्य का ख्वाब वह रात-दिन देखा करता है। उसने इटैली में अनियंत्रित सत्ता कायम कर रक्खी है। दुनिया की स्वतन्त्रता को कुचलने और योरपीय संस्कृति की दीप-मालिका को बुझाने मे यदि फासिस्ट इटैली नात्सी जर्मनी का साथी बना है तो इसमें कौन-सी अचरज की बात है ?

सदियो तक छोटी-छोटी रियासतों में छिन्न-भिन्न होने के कारण, इटैली की एकता केवल भौगोलिक रही; लेकिन उन्नीसवीं शताब्दी के तीसरे चरण मे फ्रांस की सेनाओं और ग्रेट ब्रिटेन की राजनीतिक सहायता की बदौलत वह आस्ट्रिया-हंगैरी के चंगुल से मुक्त होकर एक स्वतन्त्र राष्ट्र हो गया। सन् १९१४ के बहुत पहले से वह जर्मनी और आस्ट्रिया-हंगैरी का मित्र था। लेकिन पिछले महायुद्ध के आरंभ मे वह तटस्थ ही बना रहा। अंत मे इटैली ने जब देखा कि इँगलैंड और फ्रांस के जीतने की संभावना है तब वह, चट जर्मनी और आस्ट्रिया-हंगैरी का साथ छोड़ कर, इँगलैंड और फ्रांस का साथी बन बैठा। मित्र-राष्ट्रों ने उसके साथ जो वादे किये थे, उनकी १९१९ की सन्धि में पूर्ति न हुई। तभी से इटैली असंतुष्ट चला आता है। अबीसीनिया पर जब उसने हमला किया, उस समय भी फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन ने उसका साथ देने से इनकार कर दिया। तब से तो वह जर्मनी का पक्का साथी बन गया। स्पेन की प्रजासत्ता को खत्म करने मे इसका खास हाथ था। एलबेनिया के राज्य को भी १९३९ के आरंभ में वह चट कर गया। दस महीने तटस्थ रहने के बाद, जर्मनों की आशातीत सफलता से प्रभावित होकर, इटैली अब अपने पुराने उद्धारकों—इँगलैंड और फ्रांस—के खिलाफ लड़ाई मे कूद पड़ा है।

——

फ्रांस
इंगलैंड
बैलजियम
लीज
नामूर
कैले
बौलोन
शरबूर्ग
हावर
सैन नदी
पेरिस
वर्डून
मेट्ज़
ब्रेस्ट
लायर नदी
नान्ते
सेंट नाज़ेयर
बेलफोर्ट
लियोन
रौशफोर्ट
बिस्के की खाड़ी
बोर्डो
गैरोन न०
मार्सेल्स
टूलो
भूमध्य सागर
स्पेन
आक्रमण का मार्ग
प्रमुख किला
समुद्री अड्डा
पहाड़
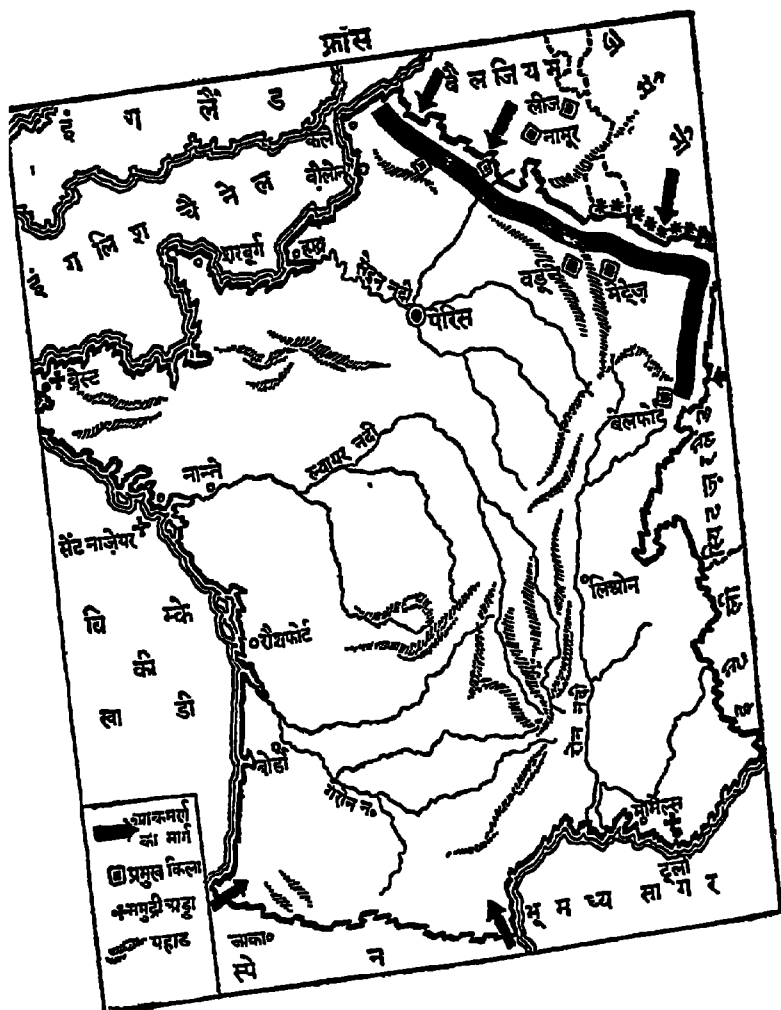
फ़्रांस

आज फ़्रांस की दशा अत्यन्त शोचनीय है। जर्मनी की मार से फ़्रांस इस समय खून से लथ-पथ, हतबुद्धि और किंकर्त्तव्य-विमूढ़ है। नैपोलियन का फ़्रांस, गैम्बटा का फ़्रांस, क्लेमासों का फ़्रांस आज हिटलर और मसलोनी के सामने संधि की भिक्षा नत-मस्तक माँग रहा है। संस्कृति का नायक और मानव-स्वतन्त्रता का पुजारी फ़्रांस आज अपने राजनीतिज्ञो की निन्दनीय कुनीतियो और अपने सेना-नायको की भयंकर भूलो का पराजय के रूप में प्रायश्चित्त कर रहा है। जिस राष्ट्र के अखंड प्रताप और दुर्जेय पराक्रम की धाक संसार में छाई थी, उसका इतने अल्प समय में विध्वंस हो जाना जितना कारुणिक है, उतना ही वह विस्मय-पूर्ण भी है।

लेकिन फ़्रांस की आत्मा अजेय है, अमर है। बन्दी होकर भी वह किसी का बन्दी नहीं रह सकता। अपने इतिहास मे फ़्रांस ने अनेक बार दुर्दिन देखे हैं और हर बार अपनी पराजय से बल संचित कर उसने अपनी वीरता से विजय-लक्ष्मी को फिर से जयमाल पहनाने के लिए विवश किया है। विलासी फ़्रांस पराजय की धूलि से फिर उठेगा और उठेगा द्विगुणित बल और उत्साह के साथ और फिर एक बार संसार के उत्थान और संस्कृति के प्रसार मे वह अपने पूर्व-पद को गौरवान्वित करेगा।

'रहिमन चुप ह्वै बैठिये, देखि दिनन कौ फेर।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहै बेर॥'

फ़्रांस के चन्द्रानन पर हिटलरी राहु की छाया इस समय अवश्य है, लेकिन है वह क्षणिक। उसकी विपदा में उसके साथ हम संवेदना प्रकट करते हैं और उसका अभिवादन करते हुए कहते हैं, 'वीर, खिन्न मत हो क्योंकि तेरा भरोसा मानव स्वतन्त्रता को है, और तू ही तो आस है और शपथ है मानव प्रगति और विकास की !'

अस्थायी संधि के बाद फ्रांस
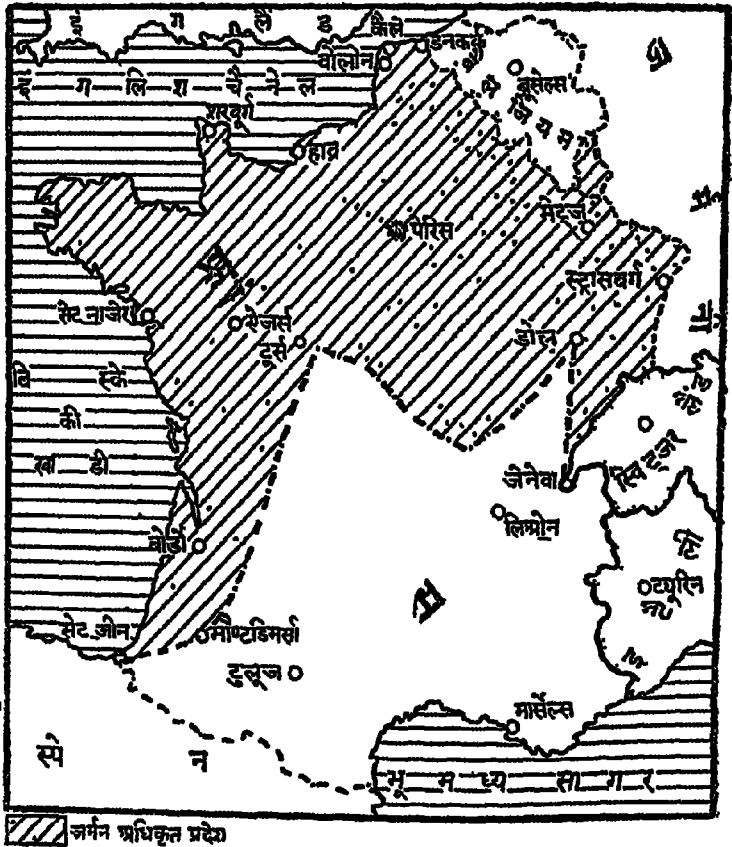
अस्थायी संधि के बाद फ्रांस

जून २५ को फ्रेंच सेना ने हथियार डाल दिये और फ्रांस ने अपने दुश्मनों को आत्म-समर्पण कर दिया। इस वीर देश की यह दुर्गति होगी, इसकी किसको कुछ दिन पहले स्वप्न मे भी आशंका थी ? आत्म-समर्पण जिन शर्तों पर जर्मनी ने स्वीकार किया है, उनका व्यौरा ज्यों का त्यों हम नीचे दे रहे हैं। अस्थायी संधि की निम्न शर्तें हैं—

(१) लड़ाई शीघ्र बन्द कर दी जाय। जो फ्रेंच फौजे आत्म-समर्पण कर चुकी है, वे अपने हथियार रख दे। (२) जर्मन हितो की रक्षा के लिए निम्नलिखित लाइन के उत्तर और पश्चिम के प्रदेश पर जर्मनों का कब्ज़ा होगा। जनेवा से डोल-चैलोन-सूर-सेओन, पैरेला-मोनियल, मोलिन्स, बर्गेस, वियरज तक और फिर वहाँ से २० किलोमीटर के पूर्व की ओर और, फिर वहाँ से दक्षिण की ओर ऐंजोपू लेमा रेलवे के समानान्तर मोन्टडी मारसन, सजीन डी पाइडडी बन्दरगाह तक। इस प्रदेश के जिन क्षेत्रों पर अभी तक कब्जा नहीं हुआ है, उन पर इस संधि के होते हुए ही कब्ज़ा कर लिया जायगा।

(३) अधिकृत प्रदेशो के समस्त भागो मे जर्मनी को, केवल स्थानीय शासन-प्रबन्ध को छोड़कर, वे सभी अधिकार प्राप्त होंगे जो किसी विजयी राष्ट्र को प्राप्त होते हैं। फ़्रांस तत्सम्बन्धी सभी प्रकार की सुविधाये प्रदान करेगा। ब्रिटेन के साथ युद्ध समाप्त हो जाने के बाद जर्मनी फ्रांस के पश्चिमी समुद्रतट के अधिकृत बन्दरगाहो की संख्या घटा कर न्यूनतम कर देगी। फ्रेंच सरकार अपनी इच्छा के अनुसार यह निश्चय करने के लिए स्वतन्त्र होगी कि वह अपनी राजधानी जर्मनी-द्वारा अधिकृत क्षेत्र के किसी स्थान में या पेरिस ही मे स्थापित करे। लेकिन यदि फ्रेंच सरकार पेरिस मे राजधानी कायम करे तो उस हालत मे जर्मनी उसे अधिकृत तथा अनधिकृत दोनो प्रदेशो की शासन-व्यवस्था-सम्बन्धी आवश्यक सुविधाये प्रदान करेगा। (४) शान्ति और व्यवस्था के लिए आवश्यक सेनाओ को छोड़कर, बाकी समस्त जल, स्थल और हवाई सेनाये निर्धारित समय के भीतर निरस्त्र कर दी जायंगी। अधिकृत प्रदेशो की फ्रेंच सेनाएँ

अनधिकृत प्रदेशों में लाई जायँगी, जहाँ पर वे सैनिक सेवा से मुक्त कर दी जायँगी। इन सेनाओ को पहले, विराम-संधि के मौके पर जहाँ वे हो, वहीं उन्हें अपने हथियार रख देने पड़ेंगे। (५) गारंटी के तौर पर जर्मनी यह माँग करेगा कि फ्रांस के समस्त तोपखाने, टैंक, टैंक-विध्वंसक तोपें, वायुयान, पैदल सेनाओ के शस्त्रास्त्र, गोला-बारूद, आदि, को अच्छी हालत में उन प्रदेशो मे समर्पित कर दिये जायँ जिन पर जर्मनी कब्जा नहीं करेगा। जर्मनी यह निर्धारित करेगा कि ये सब किस तादाद मे समर्पित किये जायँगे। (६) अनधिकृत प्रदेश के सभी शस्त्रास्त्र और रण-सामग्रियाँ, जो सनदी फ्रैंच सेनाओं के काम के लिए जरूरी न होंगी, जर्मनी या इटैली के नियंत्रण में जमा कर दी जायँगी। अनधिकृत प्रदेश मे नई युद्ध-सामग्रियो का बनाया जाना फौरन बन्द कर देना पड़ेगा। (७) अधिकृत प्रदेशों में स्थल और समुद्र-तट की रक्षा के सभी शस्त्रास्त्र अच्छी हालत में जर्मनी के हवाले कर देने होगे। सब गढ़, आदि, जर्मनी को सुपुर्द कर देने होगे। (८) केवल उस भाग को छोड़ कर जो औपनिवेशिक साम्राज्य में फ्रैंच-हितो की रक्षा के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया गया है, बाकी समस्त फ्रैंच नौसेना के जहाज़ निश्चित बन्दरगाहों मे एकत्र किये जायँगे और वहाँ वे, जर्मनी अथवा इटली के नियंत्रण में, निरस्त्र कर दिये जायँगे। जर्मन-सरकार गम्भीरतापूर्वक यह घोषित करती है कि वह इस युद्ध में अपने उद्देश्यो की पूर्ति के लिए बन्दरगाहों में रक्खे गये फ्रैंच नौसेना के जहाजों का उपयोग करने का इरादा नहीं रखती, केवल फ्रैंच समुद्रतट की देख-भाल के लिए आवश्यक जहाजों ही से काम लिया जायगा। (९) नौसेना तथा अन्य रक्षा-सम्बन्धी सूचनाएँ फ्रांस जर्मनी को देगा। सुरंगो के हटाये जाने का कार्य फ्रैंच नौसेनाएँ करेंगी। (१०) बाकी बची हुई सशस्त्र सेनाओ के साथ फ्रैंच सरकार कोई आक्रमणकारी कार्रवाई न करेगी। फ्रैंच सेनाओ के आदमी फ्रांस छोड़ कर बाहर जाने से रोके जायँगे। कोई माल ग्रेट ब्रिटेन को नहीं भेजा जायगा। कोई भी फ्रैंच व्यक्ति जर्मनी के विरुद्ध किसी राष्ट्र के साथ मिलकर कार्य नहीं कर सकता। (११) कोई भी फ्रैंच व्यापारी जहाज़ बन्दरगाह से रवाना न होगा। व्यापारिक जहाज़-रानी शुरू करने के पहले जर्मन और इटैलियन सरकारो से आज्ञा

प्राप्त करनी होगी। जो व्यापारिक जहाज़ फ्रांस के बाहर हैं वे वापस बुला लिये जायँगे और यदि ऐसा संभव न होगा तो उन्हें तटस्थ राष्ट्रों के बन्दरगाहों मे चले जाना पड़ेगा। (१२) कोई भी फ्रेंच वायुयान फ्रेंच भूमि न छोड़ेंगे। फ्रेंच हवाई स्टेशन जर्मन अथवा इटैलियन नियंत्रण में रहेंगे। फ्रेंच अनधिकृत क्षेत्रों में रहनेवाले समस्त विदेशी वायुयान जर्मनो के हवाले कर दिये जायँगे। (१३) अधिकृत प्रदेश के सभी फौजी सामान और स्टाक आदि पूरी तौर से जर्मनी के हवाले कर देने होंगे। बन्दरगाह, स्थायी किलेबंदियाँ और जहाजों के तैयार किये जाने के स्थान जिस अवस्था मे इस समय हैं उसी अवस्था में रहने दिये जायँगे, वे विध्वंस अथवा खराब न किये जायँगे। यही बात यातायात के साधनो, खास कर रेलवे लाइनों और सड़कों, के भी सम्बन्ध मे की जायगी। (१४) फ्रेंच प्रदेश के समस्त हवाई स्टेशन बन्द कर देने पड़ेंगे। (१५) फ्रेंच सरकार को अनधिकृत प्रदेश के मार्ग से जानेवाले इटैली और जर्मनी के व्यापार में यातायात-सम्बन्धी सुविधाएँ देनी होगी। (१६) फ्रेंच सरकार को अधिकृत प्रदेश की आबादी को वापस करना होगा। (१७) अधिकृत प्रदेश की बहु-मूल्य वस्तुएँ अनधिकृत प्रदेश में लाने अथवा उन्हें विदेशों मे भेजे जाने से फ्रेंच सरकार रोकेगी। (१८) फ्रेंच प्रदेश पर कब्ज़ा करनेवाली जर्मन सेनाओं पर जो खर्च होगा वह फ्रांस से वसूल किया जाय। (१९) युद्ध में पकड़े गये समस्त जर्मन कैदियो को मुक्त कर देना होगा। जर्मन सरकार ने जैसा बताया है, फ्रांस में अथवा उसके समुद्र-पार उपनिवेशों में रहनेवाले जर्मनों को जर्मन सरकार के हवाले कर देना होगा। (२०) इस लड़ाई में जो फ्रेंच कैदी बनाये गये हैं वे संधि समाप्त होने के समय तक कैद ही में रहेंगे। विराम-संधि की धारा (२१) में फ्रांस-द्वारा समर्पित की गई युद्ध-सामग्रियो की सुरक्षा की गारंटी दी गइ है। (२२) जर्मन फौजी कमीशन फ्रांस-इटैली विराम-संधि के साथ सहकारिता-पूर्वक कार्य करेगा। (२३) वर्तमान विराम-संधि स्थायी संधि होने के समय तक जायज़ रहेगी। लेकिन फ्रांस ने जो वचन दिये हैं, उन्हें यदि उसने पूरा न किया तो यह संधि किसी भी क्षण भंग हो सकेगी।

रोम-बर्लिन धुरी

उत्तरी सागर
डेनमार्क
हालैंड
लंदन
पेरिस
फ्रांस
बर्लिन
रोम
मेजोर्का
सार्डीनिया
सिसली
अल्बानिया
भूमध्य
जर्मनी के कब्ज़े में
सहायक राष्ट्र

रोम-बर्लिन धुरी

'रोम-बर्लिन धुरी' अन्तारराष्ट्रीय जगत् के चलन सिक्के में से एक है। सन् १९३६ मे जब एबीसीनिया के साथ युद्ध मे फ्रांस, इंगलैंड और रूस ने इटैली का विरोध किया तब इटैली ने जर्मनी का आश्रय लिया। स्पेन मे दोनो ने मिलकर जनरल फ्रैंको की सहायता की। सन् १९३८ मे जब जर्मनी ने आस्ट्रिया पर क़ब्ज़ा किया तब इटैली ने उसका कोई विरोध नहीं किया, यद्यपि सन् १९३४ मे इसी बात पर यह उसका सशस्त्र विरोध करने के लिए तैयार था। जब सितम्बर सन् १९३२ मे जर्मनी ने चैकोस्लोवाकिया पर हाथ मारा तब मार्च सन् १९३९ में इटैली ने एलवेनिया को अपने राष्ट्र का अंग बना लिया। फासिस्ट इटैली और नात्सी जर्मनी इस अन्तारराष्ट्रीय धुरी के दो पहिए हैं। इसका उद्देश है भूमध्य सागर के पड़ोसी देशो पर इटैलियन आधिपत्य का विस्तार और मध्य, पूर्वी और दक्षिणपूर्वी योरप में जर्मनी की राजनीतिक प्रभुता का प्रसार। सन् १९३६ से दोनो की घनिष्ठता बराबर बढ़ती जाती है, और दोनो ही स्वाधीन देशो पर अत्याचार करने मे एक-दूसरे का साथ देते है। स्पेन और हंगेरी रोम-बर्लिन धुरी की नीति के अनुयायी और समर्थक हैं। जब जापान ने रूस के विरोध मे जर्मनी और इटैली से संधि कर ली, तब से रोम-बर्लिन धुरी के स्थान में बर्लिन, रोम और टोकियो के 'त्रिभुज' की संस्थापना हो गई। इस समय इटैली फ्रांस और इँगलैंड के ख़िलाफ़, जर्मनी का साथ दे रहा है, और गर्म खबर है कि स्पेन भी इन दो अन्तारराष्ट्रीय हड़बोंगो को लूटमार मे मदद देनेवाला रहा है। फ्रांस की शोचनीय पराजय को देख कर जापान भी अपने दाँत पैने करने लगा है। उसने धमकी दी है कि अगर फ्रैंच-शासित इण्डोचीन के मार्ग से चीनी सरकार को शस्त्रास्त्र ले जाने से फ्रैंच सरकार न रोकेगी तो जापानी फौजें इण्डोचीन पर हमला कर देंगी। उसकी टेक निभ गई। फ्रांस उसके सामने भी झुक गया।

स्विट्ज़रलैंड

ज र्म नी
बेलफोर्ट
राइन नदी
बाजेल
कांसटेंस
सेंटगाल
ज्यूरिख
फ्रा
स्वि ट्‌ ज र लैं ड
बर्न
लोसेन
स्पूजेन
जेनेवा
ग्रेट सेंट बर्नर्ड
इ टै ली
आक्रमण का मार्ग।
राजधानी
दर्रा
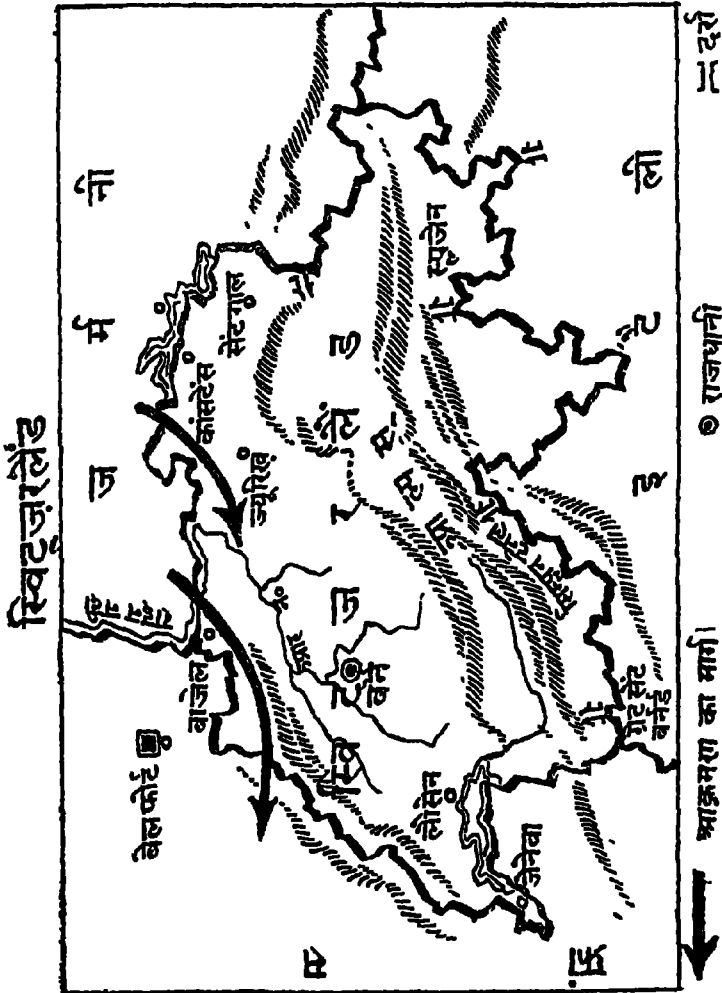
स्विट्ज़रलैंड

स्विट्ज़रलैंड पश्चिम-उत्तर में फ्रांस, उत्तर और पूर्व में जर्मनी तथा दक्षिण मे इटैली से घिरा है। लोगों को भय था कि फ्रांस पर हमला करने के लिए जर्मनी पहले निष्पक्ष किन्तु दुर्बल स्विस राष्ट्र पर धावा मारेगा, लेकिन डैनमार्क, बैलजियम और लक्समबर्ग की निष्पक्षता को कुचलता हुआ जर्मनी फ्रांस में धँस गया। इसी लिए स्विट्ज़रलैंड अभी तक स्वतन्त्र बना है।

स्विट्ज़रलैंड का क्षेत्रफल लगभग १९००० वर्गमील है। आबादी ४१½ लाख, जिनमें १० लाख जर्मन, ८½ लाख फ्रेंच और २½ लाख इटैलियन, भाषा-भाषी है। तीनो ही भाषाएँ समान रूप से राष्ट्र-भाषाये और राज-भाषायें भी है।

स्विट्ज़रलैंड एक आदर्श राज्य है। इसकी शासन-प्रणाली प्रजा-सत्तात्मक है, और इसमें बसनेवाली विभिन्न जातियो मे समान रूप से स्विस नागरिकता का मान है।

स्विट्ज़रलैंड पार्वतीय देश है। यहाँ की घड़ियाँ जग-विख्यात है। १९३६ में १ करोड़ ९६ लाख घड़ियाँ यहाँ से विदेशों को भेजी गई। आयात और निर्यात के आँकड़े परिशिष्ट में पाठको को मिल जायेंगे।
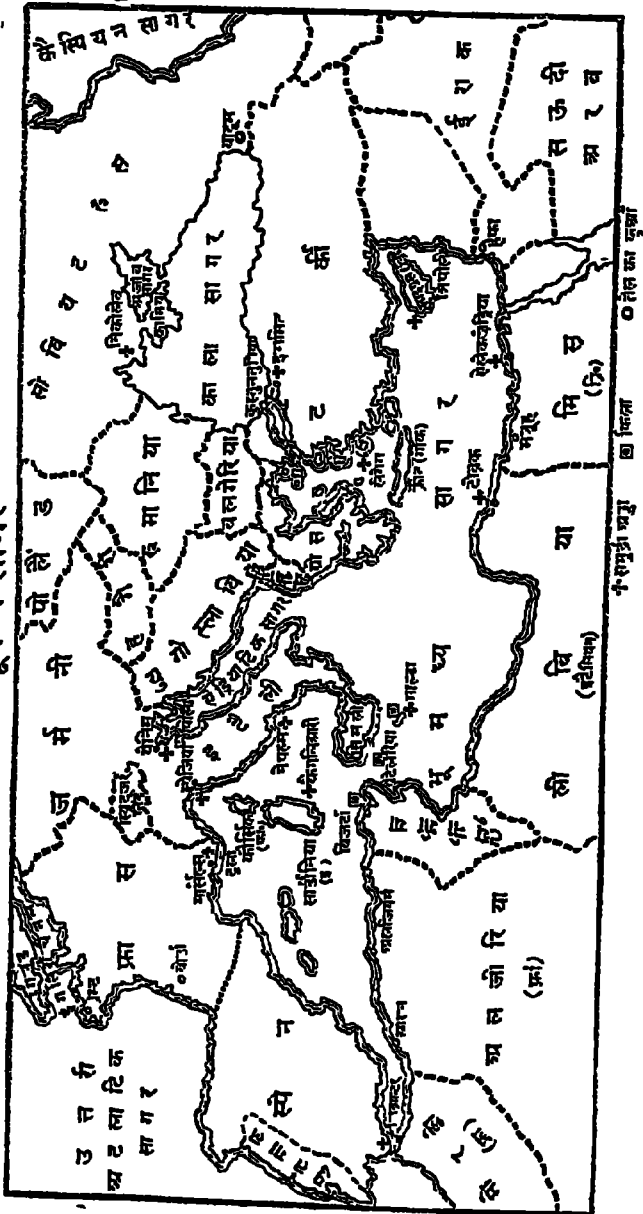
भूमध्य सागर

भूमध्य सागर का तट मानव सभ्यता और संस्कृति का लीला-स्थल है। प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक काल में मिस्र, फ्यूनीशिया, क्रीट, ग्रीस, कार्थेज और रोम, एक के बाद एक, इसी के चरणो में उत्पन्न हुए, इसी की रेती पर खेले और इसी की छाया मे पनपे और फले-फूले। जैसे प्राचीन काल मे वैसे ही आज दिन भी यह छोटा-सा समुद्र राष्ट्रो के उत्थान और पतन को प्रभावित करता हुआ संधि के समय मे यात्रा का सुगम साधन और युद्ध-काल मे संघर्ष का क्षेत्र है। इटैली तो इसे अपने जीवन और विकास का एकमात्र कारण बताता है। फ़्रांस इसी के द्वारा अपने उत्तरी अफ़्रीकन उपनिवेशो के साथ संबंध क़ायम रख सकता है। इँगलैंड के लिए तो इसका और भी अधिक महत्त्व है। भारत और आस्ट्रेलिया का यहीं से होकर सबसे निकट मार्ग है। तीनो ही राष्ट्र, अतएव, भूमध्य सागर पर अपना अकंटक आधिपत्य जमाये रखना चाहते है। मौजूदा लड़ाई मे, फ़्रांस की पराजय के बाद, इँगलैंड को अकेले भूमध्य सागर पर प्रभुत्व के लिए इटैली से मोर्चा लेना होगा। उत्तर सागर, ब्रिटिश चैनल और एटलांटिक मे नार्वे के उत्तरी कोने से फ़्रांस के दक्षिणी तट तक अँगरेज़ी नाविक शक्ति से मुक़ाबिला करने के लिए जर्मनी के जङ्गी जहाज़ो, वायुयानो और पनडुब्बी नौकाओ के अड्डे जर्मनी को मिल गये हैं। भूमध्य सागर में इटैली के विरुद्ध इँगलैंड को अभी तक फ़्रांस के जङ्गी बेड़े का सहयोग

प्राप्त था। अब अकेले इँगलैंड को भूमध्य सागर में इटैली का, और अपने पूर्वी तट की रक्षा के लिए उत्तर सागर से एटलांटिक महासागर तक जर्मनी का, सामना करना पड़ेगा।

भूमध्य सागर के टापुओं को ध्यान से देखिए—बैलरिक, सार्डीनिया, सिसली, डाडेकेनीज़ और रोड्स के टापू इटैली के हाथ में हैं। मर्साई और तूलां के फ्रेंच बन्दरगाह भी इटैलियन बेड़ों को अब आश्रय देंगे। जिब्राल्टर, माल्टा, साइप्रेस अँगरेज़ी गढ़ हैं। पश्चिम में जिब्राल्टर और पूर्व में अलैक्ज़ेंड्रिया भूमध्य सागर के पश्चिमी और पूर्वी दो फाटकों को बन्द करने की अँगरेज़ो के हाथ मे दो कुंजियाँ हैं।

फ्रांस की पराजय से अँगरेज़ों के जंगी बेड़े की ज़िम्मेदारियाँ बहुत बढ़ गई है। हवाई जहाज़ो के मामले मे भी, फ्रांस के हथियार डाल देने के बाद, भूमध्य सागर में इटैली के हवाई बेड़े का सामना करना एकदम से आसान न होगा। अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र के राष्ट्रपति ने कुछ समय पहले कहा था कि जर्मनी के पास हवाई जहाज़ो की संख्या फ्रांस और इँगलैंड के हवाई जहाज़ो की सम्मिलित संख्या से अधिक है। फ्रांस के हट जाने पर सिर्फ इँगलैड के मुकाबिले मे जर्मन हवाई बेड़ा संख्या मे और भी अधिक बलशाली हो गया है। यद्यपि इँगलैंड को अमेरिका और कैनाडा से प्रतिदिन अधिकाधिक संख्या मे हवाई जहाज़ मिलने लगे है और इँगलैंड मे भी उनके बनाने की गति मे निरंतर बढ़ती होती जाती है, लेकिन इटैली और जर्मनी की सम्मिलित शक्ति का मुकाबिला करने के लिए इँगलैड को समय की आवश्यकता है। साथ ही, हमे यह न भूलना चाहिए कि फ्रांस

और बैलजियम की लड़ाई ने यह साबित कर दिया है कि मशीनों से भी अधिक मशीन-चलानेवालो की बहादुरी और दिलेरी पर लड़ाई में हार-जीत निर्भर होती है। इसलिए यद्यपि इँगलैंड इस समय घोर संकट का सामना कर रहा है और उसके साथी फ़्रांस ने उसके साथ भयङ्कर विश्वासघात किया है तो भी भूमध्य सागर में वह इटैली का डटकर मुकाबिला करेगा।

भूमध्य सागर एक छोटा-सा समुद्र है जहाँ पनडुब्बी नौकायें मनमाना खेल खेल और बड़े-बड़े जल-पोतों को आसानी से रसातल को भेज सकती हैं। इटैली के पास सितम्बर सन् १९३९ में, कहा जाता है, ८७ पनडुब्बी नौकाये थीं और उसके मच्छड़-नौकाओं की तादाद भी बहुत काफी थी। बड़े-बड़े जहाज़ो पर हमला करने के लिए ये मच्छड़-नौकायें खतरनाक हैं।

भूमध्य सागर के रण-क्षेत्र में होनेवाली लड़ाई पर संसार के भावी भाग्य का निपटारा होगा, क्योंकि जो भूमध्य सागर में राज्य करेगा उसी का स्वेज़ नहर और लाल सागर पर शासन भी होगा। भारत, मिस्र, अरब प्रायद्वीप और फ़िलिस्तीन—इन सबकी भूमध्य सागर के साथ लंगडोर लगी है। इसलिए भी हम अपने पाठकों से कहेगे कि भूमध्य सागर के मान-चित्र को ध्यान से वे देखें और यहाँ पर होनेवाले संघर्ष के महत्त्व को और उसके भावी परिणामों को हृदयङ्गम करें।
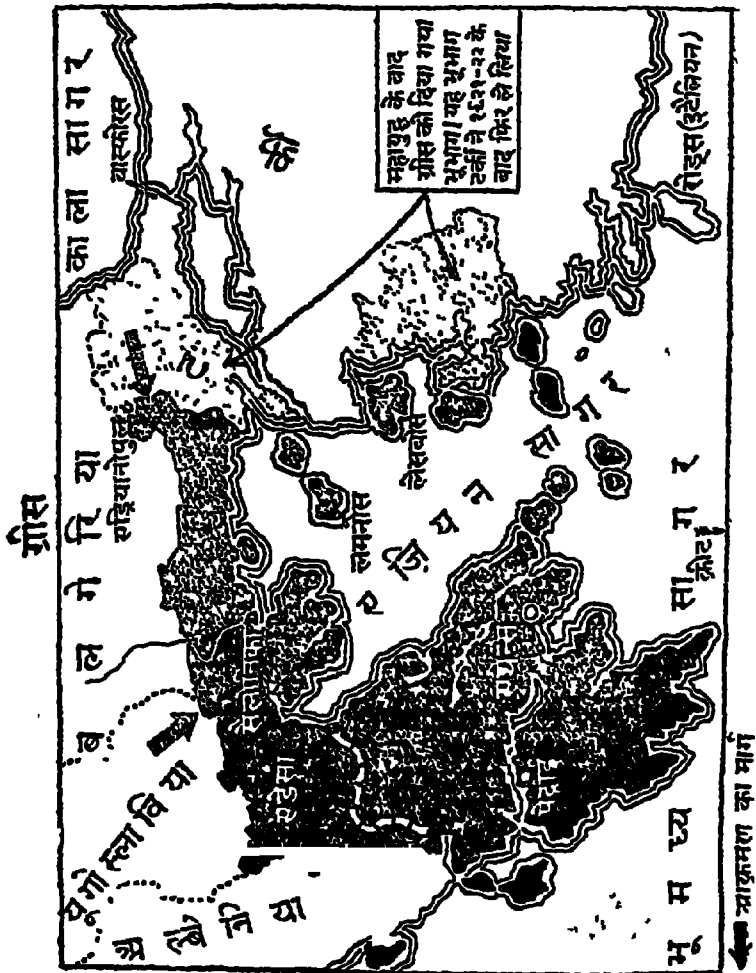
ग्रीस

पुरातन ग्रीस के विभव को विलुप्त हुए सदियाँ गुजर गईं। आज का ग्रीस तो उस पुरातन की स्मृति-मात्र भी नहीं रह गया है। बालकन प्रायद्वीप के दक्षिणी तट का वह एक छोटा-सा राज्य है। पिछले महायुद्ध में वह निष्पक्ष रहा, लेकिन अन्त में मित्र-राष्ट्रों का साथ देने के लिए उसे मजबूर होना पड़ा। सन् १२ में टर्की को परास्त करने के बाद उसने सेलोनिका और उसके पूर्व-पश्चिम के प्रदेशों पर कब्ज़ा कर लिया। रोड्स और डाडेकैनीज नामक टापुओ पर, जो वास्तव मे ग्रीक हैं, इटैली का झंडा फहराता है। इसी लिए इटैली से उसका मनमुटाव है।

ग्रीस के उत्तर में एलबेनिया, युगोस्लाविया और बलगेरिया के राज्य हैं। उत्तर और पूर्व मे टर्की है। पश्चिम मे समुद्र और समुद्र के उस पार इटैली है। १९३९ में इटैली ने एलबेनिया पर अधिकार कर लिया। अतएव इटैली से ग्रीस को पश्चिम और उत्तर से खतरा है। उत्तर में बलगेरिया इसके सेलोनिका नामक प्रांत पर अपना अधिकार जमाने के लिए छटपटा रहा है। टर्की के साथ ग्रीस की मैत्री की संधि है। टर्की तो इसकी मदद करेगा ही, और इँगलैंड भी। आक्रमण होने पर इसकी रक्षा के लिए वचनबद्ध है।

हंगेरी
रूस
मिसकोलक्ज
डेब्रेजेन
बुडापेस्ट
हं गे री
डेन्यूब नदी
जेगेड
यूगोस्लाविया
रूमानिया
रूमानिया और यूगोस्लाविया द्वारा अधिकृत भूभाग
आक्रमण का मार्ग
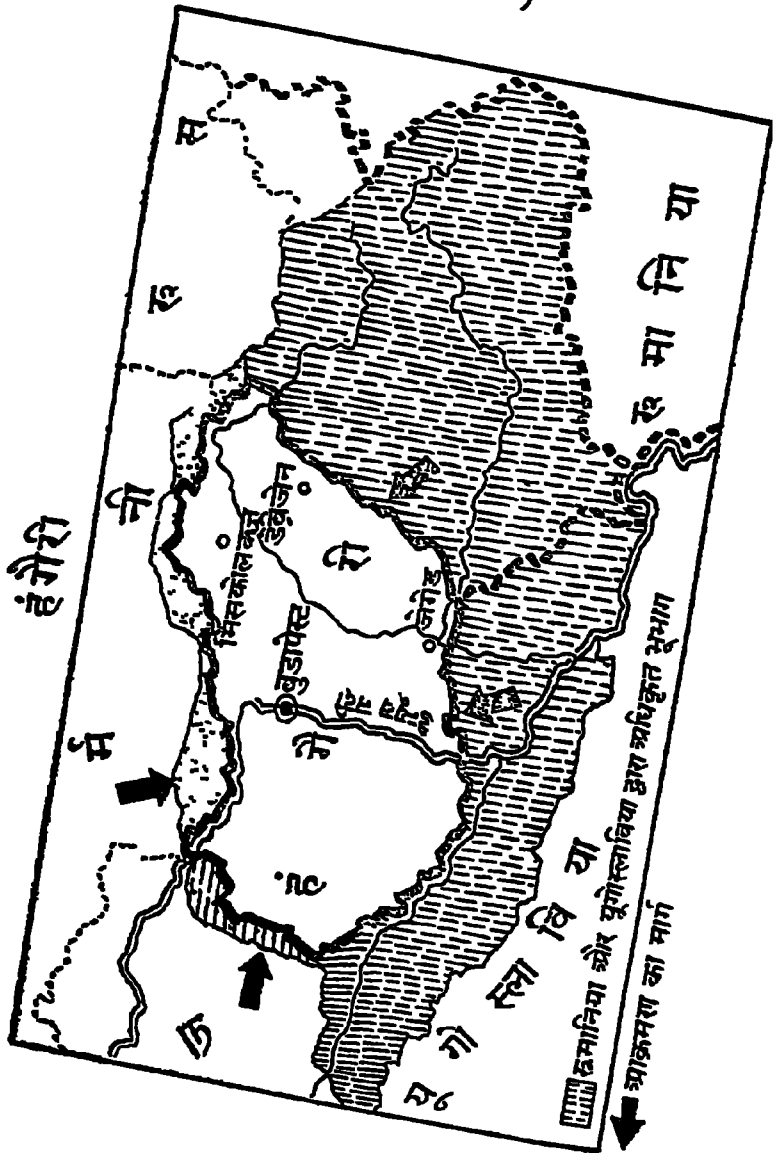
हंगेरी

हंगेरी राजनीतिक मामलों में इटैली और जर्मनी का पिछलगुआ है---इटैली का अधिक, जर्मनी का कम। १९१८ के पहले आस्ट्रिया और हंगेरी संयुक्त-राष्ट्र थे, लेकिन १९१८ में, मित्र-राष्ट्रों की विजय के बाद, हंगेरी का आस्ट्रिया से सम्बन्ध तोड़ दिया गया और उसे एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में जीवित रहने का वरदान तो मिला लेकिन अंग-भंग होने के बाद। ट्रैंसिलवेनिया का प्रांत हंगेरी से छीन कर रूमानिया को दे दिया गया। उसके उत्तरी भाग का कुछ अंश काट कर चैकोस्लोवाकिया में जोड़ दिया गया। बानात का इलाका यूगोस्लाविया को मिला। १९३९ में जब जर्मनी ने चैकोस्लोवाकिया के राष्ट्र का खून किया, उस समय हंगेरी ने चैकोस्लोवाकिया के उस हिस्से पर फिर से अधिकार कर लिया जिसका वह अपने को अधिकारी समझता था। ट्रैंसिलवेनिया को रूमानिया से छीनने की घात में वह बैठा है। रूस या जर्मनी रूमानिया पर बढ़े नहीं कि हंगेरी भी ट्रैंसिलवेनिया पर टूट पड़ेगा। यूगोस्लाविया पर भी उसकी वक्र दृष्टि है। इटैली यदि यूगोस्लाविया की ओर बढ़े तो वह इस मामले में इटैली का सहायक बन कर उसे अंग-भंग करने के लिए तैयार है।

युगोस्लाविया
जर्मनी
हंगैरी
रूमानिया
जागरेब
क्रोट
सबोटिका
बेलग्रेड
पोला
बोसनियन
स्कुटारी
अलबेनिया
बलगेरिया
ग्रीस
एड्रियाटिक सागर
इटैली
आक्रमण
समुद्री अड्डा
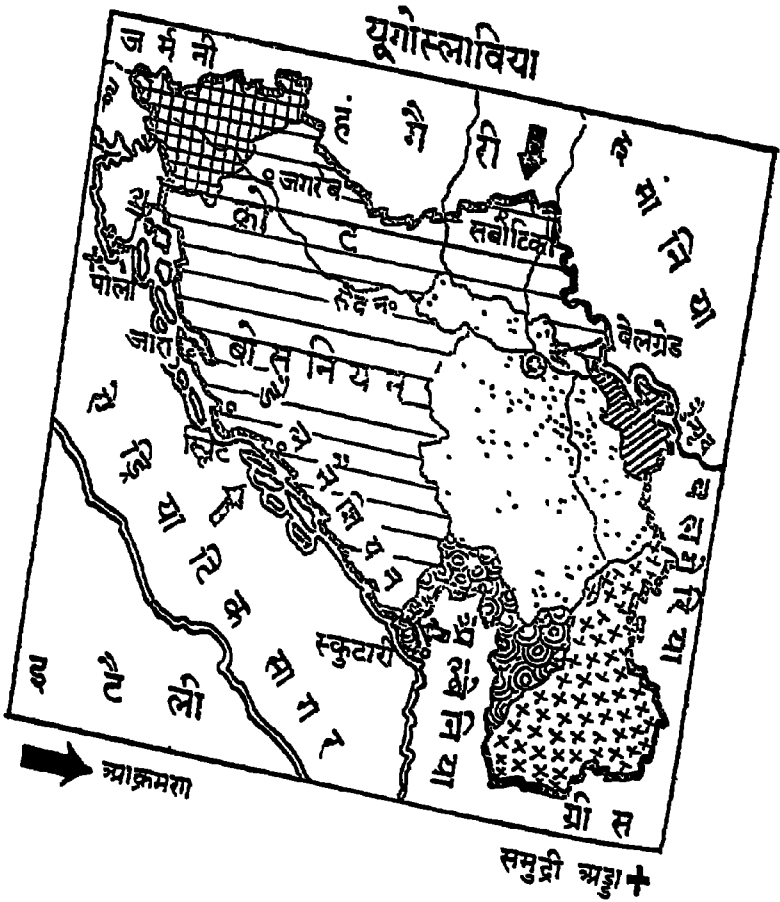
यूगोस्लाविया

यूगोस्लाविया १९१८ के पहले का सर्विया है जिस पर आस्ट्रिया के अगस्त १९१४ मे आक्रमण करने के कारण सन् १४-१८ के महायुद्ध का सूत्र-पात हुआ था। उस समय फ्रांस, इँगलैंड और रूस ने सर्विया का साथ दिया और जर्मनी तथा आस्ट्रिया-हंगैरी के साम्राज्यो के विरुद्ध लड़ाई मोल ली। जब १९१८ मे मित्र-राष्ट्रों की विजय हुई तव सर्विया को मित्र-राष्ट्रों ने उसके पड़ोसी शत्रु-राष्ट्रो से उनके भू-खंडो को काट कर भेट किये। उसी समय सर्विया ने अपना नाम बदल कर यूगोस्लाविया कर दिया। आस्ट्रिया-हंगैरी से स्लोवेनिया, क्रोशिया, डेलमेशिया और बोसनिया के प्रांत उसे मिले। मैसेडोनिया १९१३ मे उसे विजय के बाद टर्की से प्राप्त हुआ और १९२३ मे सेलोनिका के बंदरगाह के पास काफी लंबा-चौड़ा भू-भाग भी उसे मिल गया। १९२४ मे वरास के प्रदेश पर भी उसका कब्जा हो गया, जिसे इटैली हथियाना चाहता था।

क्षेत्रफल ९६००० वर्गमील, और आवादी १ करोड़ ३९ लाख। यूगोस्लाविया मे अनेक जातियो के लोग रहते हैं जिनमें पारस्परिक खींच-तान के कारण राष्ट्र की नाव प्रायः डॉवाडोल रहा करती है। सर्ब अपने राष्ट्र के अन्य जातिवालों को उपेक्षा की दृष्टि से देखते है। बलगेरिया, इटैली और हंगैरी इस ताक में हैं कि किसी तरह वे अपने सजातियों को सर्बों की अधीनता से मुक्त कर ले।
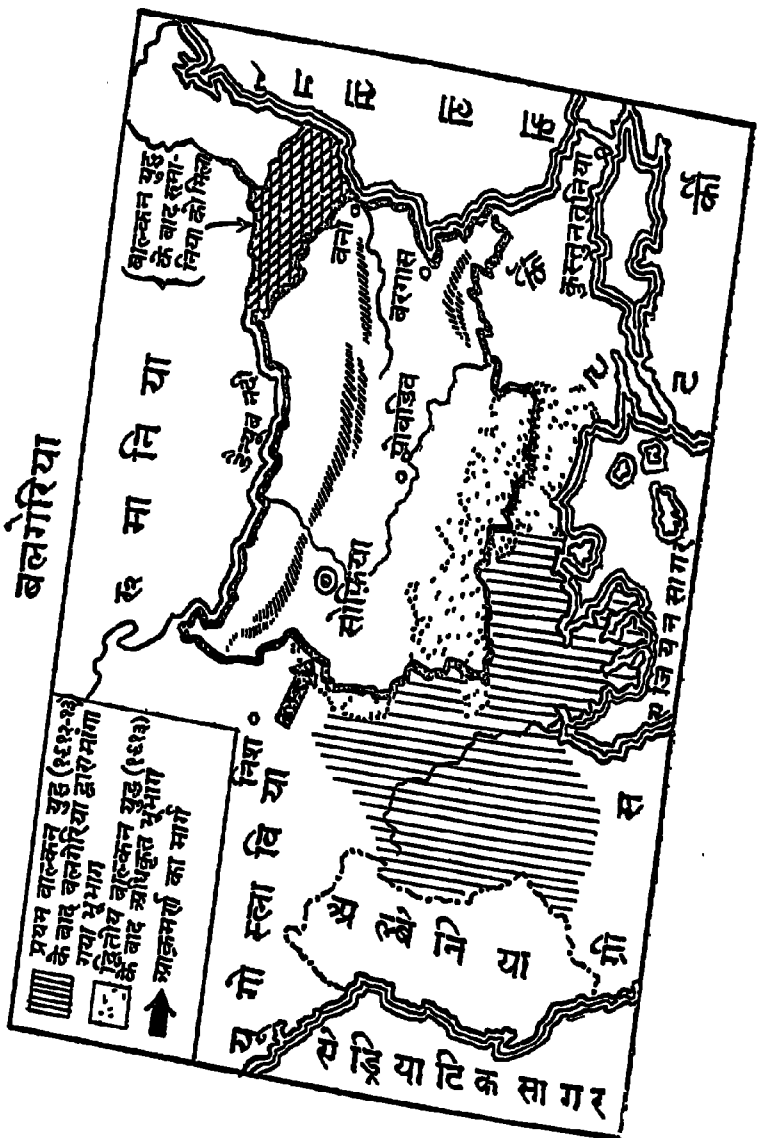
बलगेरिया

बलगेरिया बालकन प्रायद्वीप की एक जटिल समस्या है। सन् १२ मे यही अपने पड़ोसियो मे सबसे अधिक शक्तिशाली था। सन् १३ में जब बालकन के राष्ट्रों—बलगेरिया, सरबिया, मांटीनिग्रो और ग्रीस—ने टर्की को हराया तब लूट मे बटवारे के समय इसके साथियो ने इसे नींबू और नमक चाटने को देकर संतुष्ट करना चाहा। सर्बिया ने टर्की का मैसेडोनिया नामक प्रांत हड़प कर लिया। ग्रीस ने सेलोनिका पर क़ब्जा कर लिया। रूमानिया दोब्रुजा ले भागा। १९१४-१८ वाले युद्ध मे बलगेरिया ने मित्र-राष्ट्रों के खिलाफ जर्मनी का साथ दिया। १९१८ में जर्मनी की पराजय के बाद बलगेरिया के कुछ टुकड़े काटकर उसके पड़ोसी दुश्मनों को मित्र-राष्ट्रों ने दे दिये। इसी लिए बलगेरिया असंतुष्ट है—बेहद नाखुश है। पड़ोसियो के साथ सहयोग करने के लिए वह तैयार नहीं। उसे चिन्ता है उन प्रदेशों को फिर से प्राप्त करने की, जिनको उसके पड़ोसी दबाये बैठे हैं। सर्बिया (वर्तमान यूगोस्लाविया), ग्रीस और रुमानिया—इन सबके खिलाफ उसे शिकायतें हैं; और बलगेरिया के असंतोष के कारण ही बालकन राष्ट्र एक होकर अपनी रक्षा करने की कोई योजना बनाने में आज तक सफल नहीं हुए। इधर यह हाल; उधर इटैली, जर्मनी और रूस बालकन प्रायद्वीप मे अपनी सत्ता और प्रभाव को बढ़ाने की फिक्र में है। महाराष्ट्रो की नीतियो की मुठभेड़ का केन्द्र बालकन प्रायद्वीप है; और वह अपनी रक्षा नहीं कर सकता क्योंकि बलगेरिया असंतुष्ट और खिन्न है और अपने पड़ोसियो के विभव को देखकर उसका कलेजा खौल उठता है

———
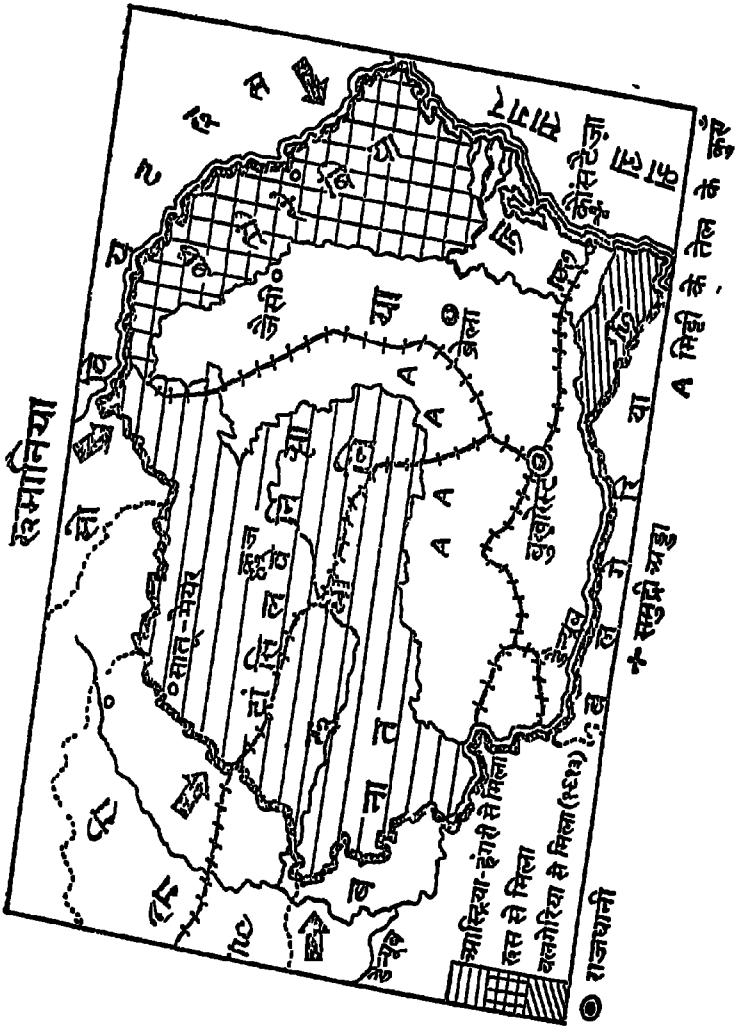
रूमानिया

रूमानिया बालकन प्रायद्वीप का एक प्रसिद्ध राष्ट्र है। क्षेत्रफल १ लाख १३ हज़ार वर्गमील और आबादी लगभग २ करोड़। राजधानी बुखारेस्ट। राजा का नाम केराल द्वितीय। गत महासमर के बाद रूमानिया के हाथ पराजित राष्ट्रों की काफ़ी जागीर लगी। ट्रानसिलवेनिया उसे हंगेरी से मिला। बूकोवीना का रूमानियन प्रांत पहले आस्ट्रियन था। वैसैरेबिया सन् १८ के पहले रूसी था। डोब्रुजा उसने बलगेरिया से सन् १४ के बाद छीन लिया था। इन कारणों से रूस, जर्मनी, हंगेरी और बलगेरिया रूमानिया को बुरी निगाह से देखते हैं; और सभी इस ताक मे हैं कि वे अपने पुराने प्रदेशो पर फिर से काबिज़ हो जायँ। जर्मनी और रूस से रूमानिया को विशेष रूप से खतरा है, यद्यपि रूस ने यह घोषणा कर दी है कि वैसैरेबिया के मामले का निपटारा वह युद्ध के द्वारा नहीं करना चाहता। इँगलैंड और फ्रांस ने अप्रैल १९३९ में यह वादा किया था कि यदि रूमानिया पर किसी ने हमला किया तो ये दोनो महाराष्ट्र उसका साथ देंगे।

रूमानिया का सांपत्तिक महत्त्व मिट्टी के तेल और खाद्य पदार्थों के कारण विशेष है। सन् १९३८ मे रूमानिया मे ६० लाख टन मिट्टी का तेल निकाला गया।

नार्वे, डैनमार्क, हालैंड, बैलजियम और अब फ्रांस को जर्मनी के पाशविक बल के सामने नतमस्तक देखकर, रूमानिया के राजा केराल ने इटैली और जर्मनी का साथ देने ही मे अपने राष्ट्र का हित समझा है। लिखते समय अखबारो में यह समाचार प्रकाशित हुआ कि रूमानिया में भी अब एक ही राजनीतिक-दल रहने पायेगा जिसके सभापति स्वयमेव राजा होंगे। व्यक्ति के तन और धन पर राष्ट्र को सम्पूर्ण अधिकार होगा और वैदेशिक नीति के मामले में धुरी की महाशक्तियो—जर्मनी और इटैली—का साथ रूमानिया देगा।
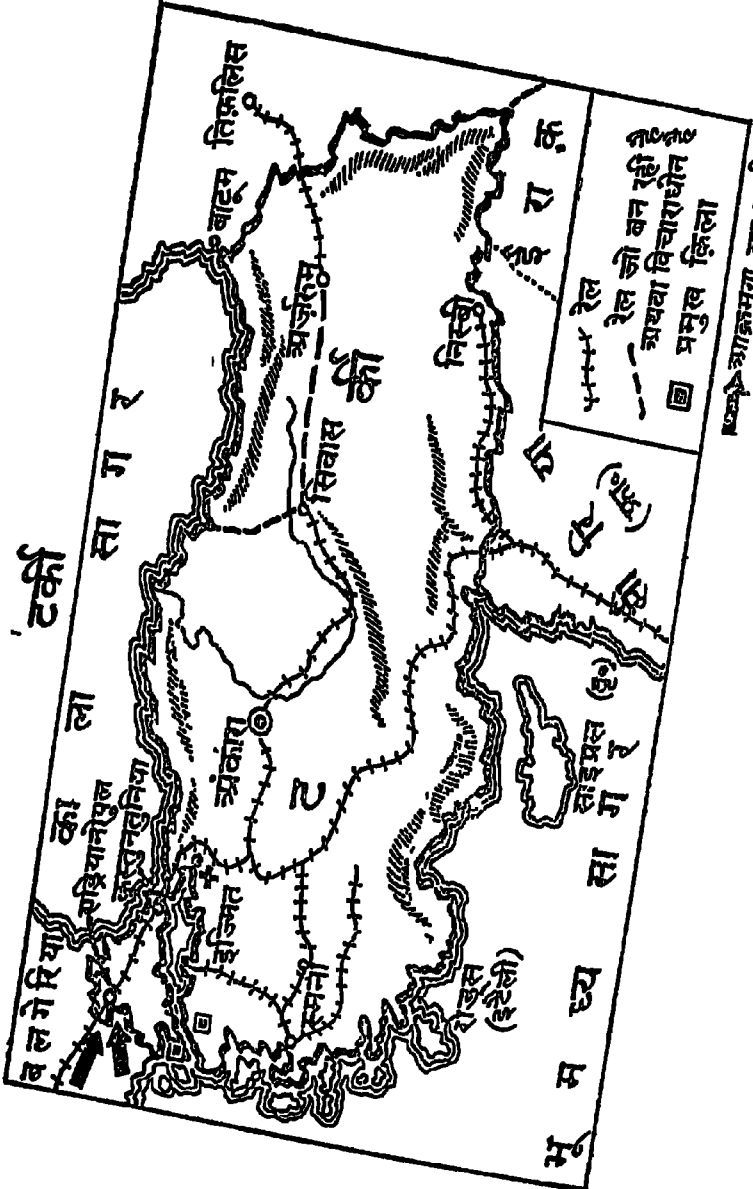
टर्की
बलगेरिया
काला सागर
एड्रियानोपुल
कुस्तुनतुनिया
इज़्मित
अंकारा
स्मर्ना
ट
सिवास
अर्ज़रूम
की
बाटूम
तिफ़लिस
निस्बी
रोडस
(इटैली)
ईराक़
भूमध्य सागर
साइप्रस (बृ०)
(फ्रां०)
रेल
रेल जो बन रही है अथवा विचाराधीन है
प्रमुख क़िला
आक्रमण का मार्ग

टर्की

टर्की का साम्राज्य किसी समय योरप में कुस्तुन्तुनिया से लेकर हंगैरी तक, अफ़्रीका के महाद्वीप मे इजिप्ट, ट्युनिशिया, ट्रिपोली और सूडान तक और एशिया के महाद्वीप में एशिया माइनर, सीरिया, ट्रांस-जार्डन, फिलिस्तीन, इराक और अरब प्रायद्वीप मे फैला हुआ था। १९१३ में बालकन राष्ट्रो ने टर्की को परास्त कर योरप में इसके राज्य के क्षेत्रफल को बहुत संकुचित कर दिया। इजिप्ट बहुत पहले ही स्वतंत्र हो चुका था। ट्रिपोली सन् १९१० के कुछ समय बाद इटैली के कब्जे में चला गया। विगत महायुद्ध मे ईराक, सीरिया, फिलिस्तीन, ट्रांस-जार्डन और अरब प्रायद्वीप से भी इसका शासन उठ गया। सन् १४ के बहुत पहले से योरप के राजनीतिज्ञ टर्की के राष्ट्र को 'योरप का मरीज' कहते थे। विगत महायुद्ध में जब टर्की हार गया तब लोगो को यह विश्वास हो गया कि उसका सूर्य अब सदा के लिए अस्त हो जायगा, लेकिन इस मरणासन्न टर्की में एक नये प्रतिभाशाली नेता का उदय हुआ, जिसका नाम ग़ाज़ी कमाल अतातुर्क था। इसने १९२२ में ग्रीस की स्मरना के मैदान मे वह जबरदस्त मरम्मत की और उसको उभाड़नेवाले फ्रांस और इंगलैंड का इतनी मर्दानगी के साथ मुकाबिला किया कि लोगो ने समझा कि अब ख़ैरियत इसी में है कि एशिया माइनर में तुर्कों से छेड़छाड़ न की जाय। कमाल अतातुर्क ने राजधानी कुस्तुन्तुनिया से हटा कर अंकारा मे स्थापित की। अनेक सामाजिक, साम्पत्तिक और राजनीतिक परिवर्तनो के द्वारा उसने रूढ़वादी तुर्कों को बीसवीं सदी के सजीव और सतर्क प्रतिनिधियो का समकक्ष बना दिया।

काला सागर
ओडेसा
मा नि या
गैलट्ज़
सुलीन
बुखारेस्ट
कांसटैंज़ा
बरगास
का ला सा ग र
कुस्तुनतुनिया
मारमारा सागर
स
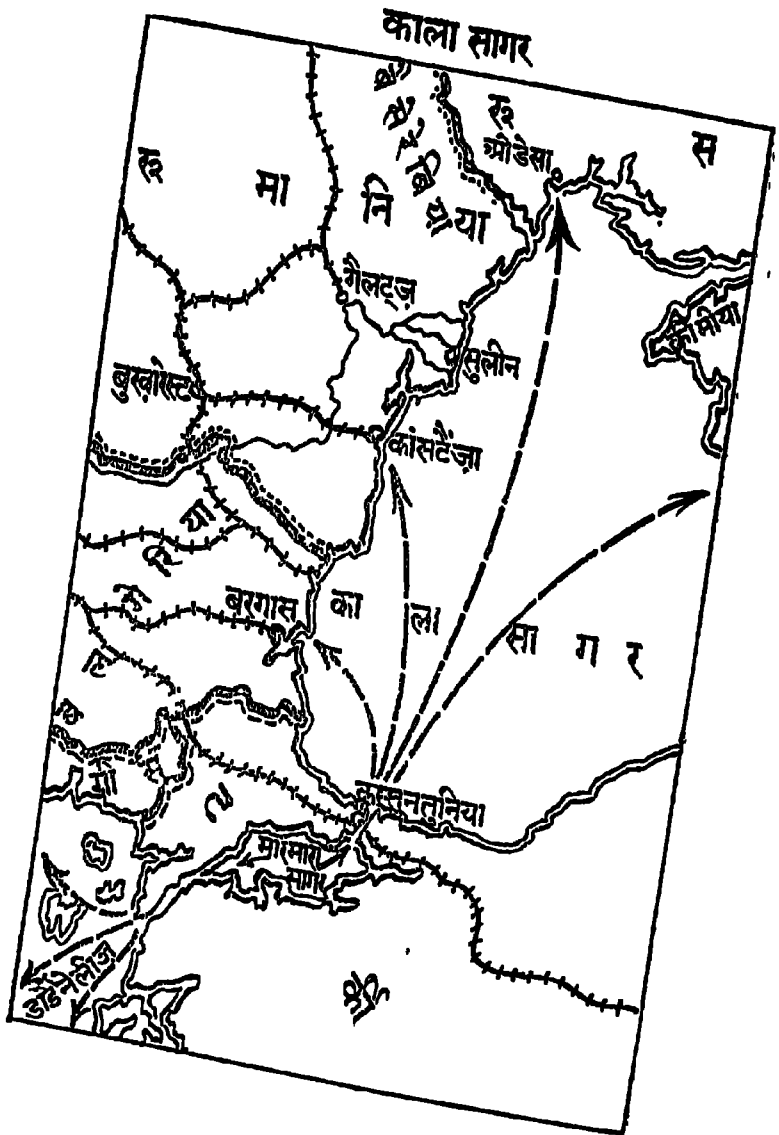
काला सागर

काला सागर दक्षिण-पूर्वी योरप के राष्ट्रों के लिए बड़े महत्त्व का है। यही उनके सांपत्तिक जीवन के लिए फेफड़े का काम देता है। रूस, रूमानिया और बलगेरिया भूमध्यसागर तक काले सागर ही के मार्ग से पहुँच सकते हैं, लेकिन इन दो समुद्रों के बीच में डार्डनैल्स नामक जल-डमरूमध्य की पतली नली है। यही इन दो सागरों को एक दूसरे से मिलाती है। अतएव जिस राष्ट्र का इस जल-डमरूमध्य पर कब्जा है वही क्या शांति मे और क्या लड़ाई मे काले सागर के आश्रित देशों को भारी क्षति पहुँचा सकता है। टर्की इस जल-डमरूमध्य का मालिक है और इसी लिए उसका सामरिक दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में इतना अधिक महत्त्व है।

रूस
आर्केंजल
लैडोगा भील
लेनिनग्रैड
पस्कोव
वोल्गा नदी
पर्म
मास्को
लि थु नि या
लिथ्यू
पोलोटस्क
मिंस्क
वार्सा
कीव
डान नदी
अस्त्राखान
कैस्पियन सागर
ओडेसा
निकोलेव
मा नि या
काला सागर
समुद्री अड्डा
राजधानी
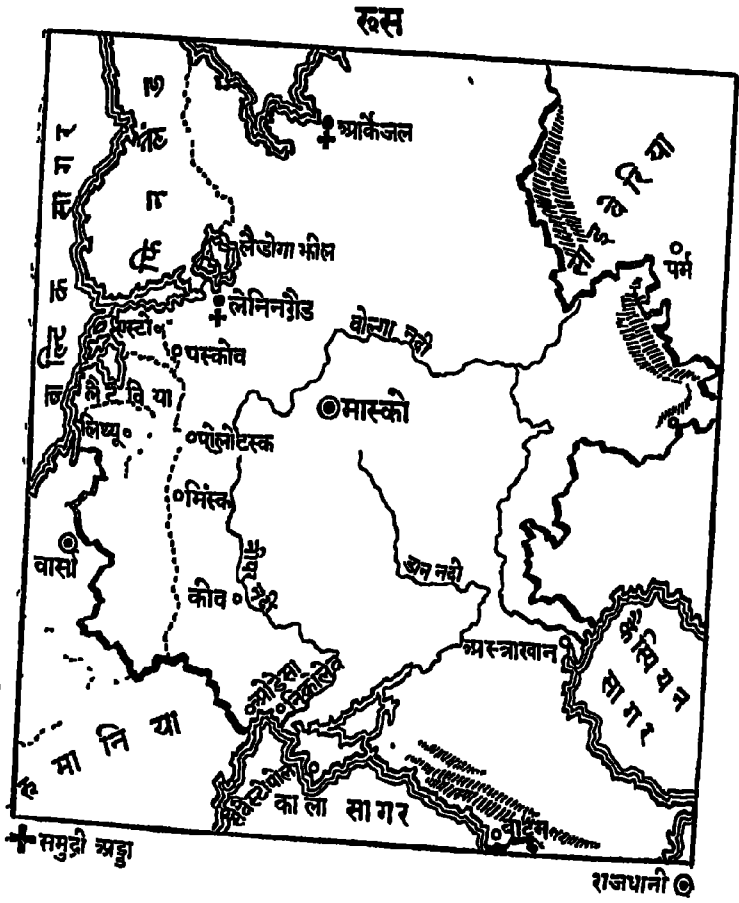
रूस

रूस एशिया और योरप के उत्तर में एक भीमकाय दानव की तरह फैला हुआ है। सन् १९३१ में इसका क्षेत्रफल ८१ लाख वर्ग-मील और आबादी १६ करोड़ ५८ लाख थी। १९३९ के सितम्बर में इसने पोलैंड के पूर्वी हिस्से पर अधिकार जमाया और १९४० के आरम्भ में फिनलैंड का काफी बड़ा हिस्सा, युद्ध में विजयी होने के बाद, हथिया लिया। लिथुएनिया, एस्टोनिया और लैटविया अब इसके संरक्षित राज्य हैं। इस तरह पूर्व में जापान और पश्चिम में जर्मनी इसके पड़ोसी हैं। रूमानिया पर रूस और जर्मनी की एक-सी आँख लगी है। मंगोलिया पर जापान और रूस अपना-अपना क़ब्ज़ा करना चाहते हैं।

रूस इस समय सामरिक दृष्टि से संसार का सबसे अधिक बलशाली राष्ट्र है। इसकी जन-शक्ति और साम्पत्तिक बल को देखकर योरप के सभी छोटे और बड़े राष्ट्र इसका मुँह ताक रहे हैं। यह १९४० की सबसे बड़ी कौतुक-पूर्ण समस्या है कि रूसी ऊँट किस करवट बैठेगा। क्या जर्मनी की बढ़ती हुई शक्ति को वह चुपचाप बढ़ने देगा? फ्रांस के अस्त होने और ग्रेट ब्रिटेन की पराजय को वह बिना हाथ-पैर हिलाये पी जायगा? जर्मनी, इटैली और जापान साम्यवादी रूस के जन्मजात शत्रु हैं। संसार के भावी मान-चित्र की लकीरें खींचने में रूस का कितना हाथ होगा, यह कहना इस समय असंभव है। वर्तमान युद्ध के आरम्भ से एक युग का अंत और दूसरे युग का उदय हुआ। इस युग-परिवर्तन को किस प्रकार और कितने अंश में वह प्रभावित, नियंत्रित और निरूपित करेगा—इस पहेली के गर्भ में भविष्य की रूप-रेखा छिपी है। इस समय तो जर्मनी और इंगलैंड दोनों ही उसकी ड्योढ़ी पर खड़े सहायता के लोलुप दिखाई देते हैं।

पोलैंड का बटवारा

बाल्टिक
सागर
डैंज़िग
लिथ्यूनिया
लैटविया
विलना
कोनिग्सबर्ग
पूर्वी प्रशा
वार्सा
स्लोवाकिया
हंगेरी
रूमानिया
+ समुद्री अड्डा
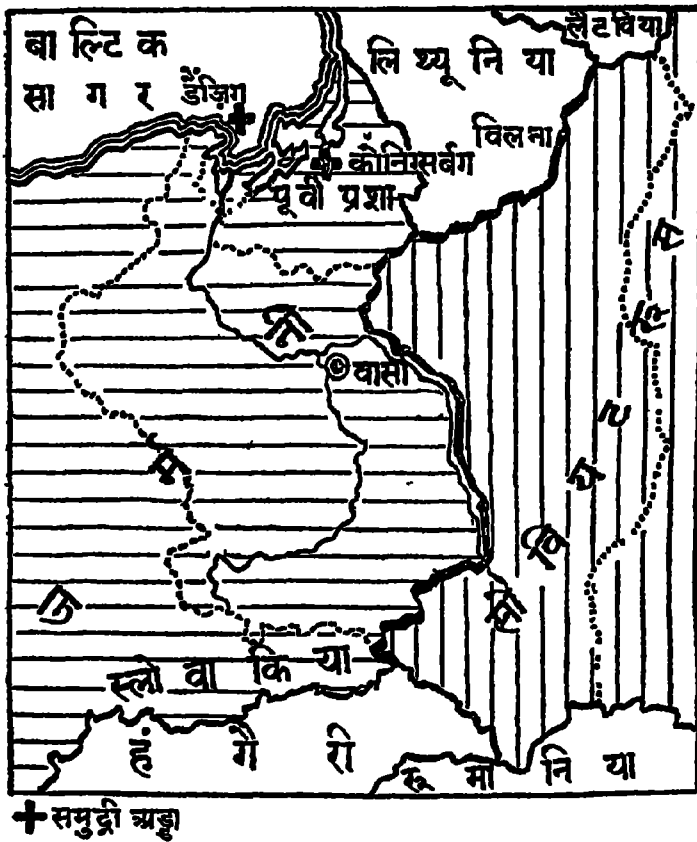
पोलैंड का बटवारा

जर्मनी ने सितम्बर सन् १९३९ मे पोलैंड पर हमला कर वर्तमान महासमर का श्रीगणेश किया। बात की बात मे पोलैंड धराशायी हो गया और उसकी लोथ को जर्मनी और रूस ने आपस में बाँट लिया। पोलैंड का यह बटवारा उसके इतिहास में कोई नई बात नहीं है। सन् १७७२,१७९३ और १७९५ के बटवारो से प्रशा (आधुनिक जर्मनी) ने पोलैंड के ७ हज़ार वर्गमील पर, रूस ने १ लाख १ हज़ार वर्गमील पर और आस्ट्रिया ने ३१ हजार वर्गमील पर क़ब्ज़ा कर लिया था। गत महायुद्ध के बाद पोलैंड के स्वतंत्र राष्ट्र की फिर से स्थापना हुई। पोलैंड ने १९३८ के सितम्बर मे चैकोस्लेवाकिया के राज्य के एक हिस्से को, जिसका क्षेत्रफल ४०० वर्गमील से कुछ अधिक था, हड़प कर लिया।

सितम्बर १९३९ के पूर्व पोलैंड का क्षेत्रफल लगभग १½ लाख वर्गमील था और उसके निवासियो की संख्या ३। करोड़ थी। विगत सितम्बर के बटवारे से पोलैंड के ६८ हज़ार वर्गमील और २½ करोड़ निवासियो पर जर्मनी का, और ८२ हज़ार वर्गमील और कुछ कम १ करोड़ निवासियों पर रूस का, आधिपत्य हो गया। रूस ने अपने हिस्से मे से कुछ अंश लिथूएनिया को दे दिया। पोलैंड का लोहा और कोयला जर्मनी को मिला और उसका तेल रूस को। जंगलात और कृषिप्रधान भाग भी रूस ही के हिस्से में पड़े।

बाल्टिक के राष्ट्र
विपुरी
हेलसिंकी
लेनिनग्राड
टेलिन
एस्टोनिया
रीगा
लैटविया
लिथुएनिया
कउनास
कोनिग्सबर्ग
जर्मनी
आक्रमण का मार्ग
समुद्री अड्डा
राजधानी
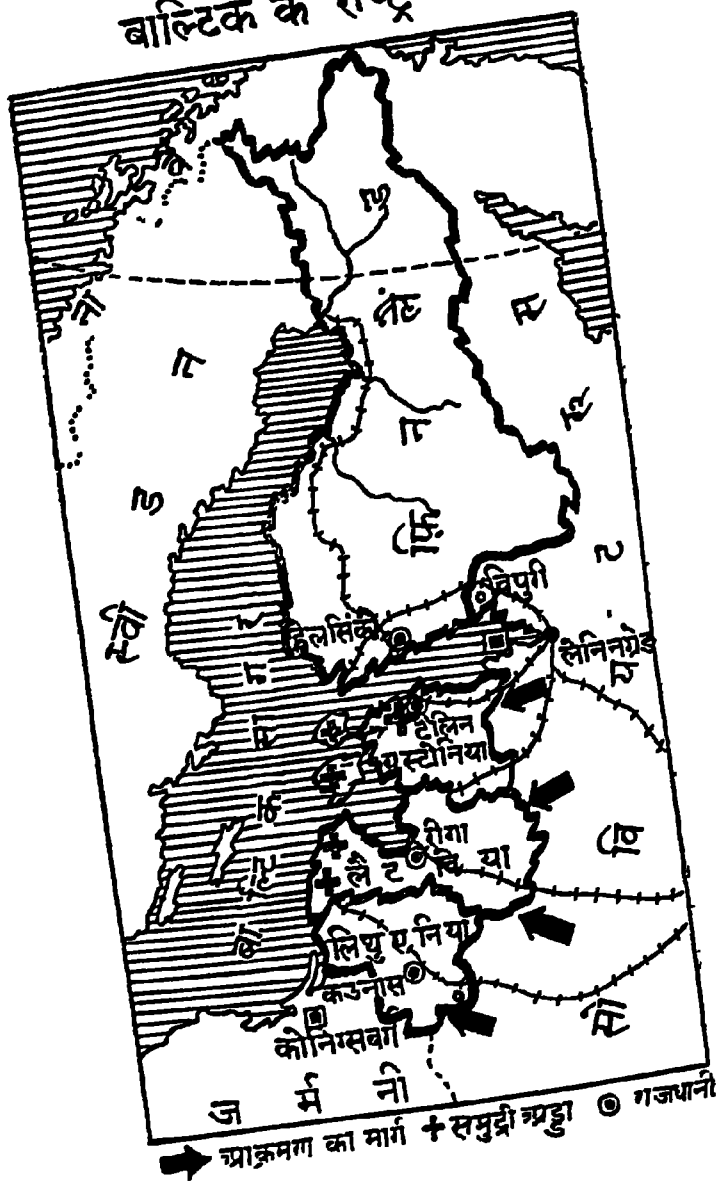
बाल्टिक के राष्ट्र

जैसे इटैली भूमध्य सागर को 'इटैलियन झील' कहता है वैसे ही बाल्टिक सागर अभी तक 'जर्मन झील' समझा जाता था। उत्तर में बाल्टिक का महत्त्व क्या सामरिक और क्या व्यापारिक दृष्टि से कुछ कम नहीं है। लिथुएनिया, एस्टोनिया, लैटविया, स्वीडैन, नार्वे, फिनलैंड, जर्मनी और रूस बाल्टिक सागर पर आश्रित हैं। अभी तक इस जलाशय पर जर्मनो की प्रभुता थी लेकिन वर्तमान युद्ध के छिड़ने के कुछ पहले रूस-जर्मन-संधि के बाद से बाल्टिक राष्ट्रों पर जर्मन-प्रभाव का लोप और रूसी सत्ता का विस्तार होने लगा। एस्टोनिया, लिथुएनिया, लैटविया और फिनलैंड रूस के संरक्षित राष्ट्र हो गये हैं। पहले तोन देशों में रूस ने जल, थल और हवाई अड्डे स्थापित किये। जल और थल की लड़ाई के लिए रूसी सेनायें और जंगी जहाज इन देशों में स्थायी रूप से रहने लगे। इस तरह रूस ने बाल्टिक सागर पर अपनी प्रभुता जमा ली और जर्मनी को बाल्टिक सागर का 'जर्मन झील' से 'रूसी झील' में परिवर्तन, खून की घूँट की तरह, चुपचाप पी जाना पड़ा। वर्तमान युद्ध मे रूस की तटस्थता के बदले में जर्मनी को यह क़ीमत देनी पड़ी। भविष्य ही बतायेगा कि यह सौदा जर्मनी के लिए सस्ता है, या महँगा।

स्कैंडिनेविया

योरप के उत्तर में स्कैंडिनेविया नाम का एक प्रायद्वीप है। इसमें दो राष्ट्र हैं—स्वीडैन और नार्वे। नार्वे और स्वीडैन बड़े प्रगतिशील, व्यवसायी, साहित्य और कला के पोषक और विद्या-व्यसनी और शांति के पुजारी हैं। १९वीं शताब्दी का सबसे बड़ा नाटककार इसी स्कैंडिनेविया की संसार को सबसे बड़ी देन है। 'नोबुल-पुरस्कार' का दाता इसी प्रायद्वीप का निवासी था। साधारण मनुष्य का जीवन सामाजिक, राजनीतिक और सांपत्तिक दृष्टि से जितना समुन्नत स्कैंडिनेविया में है, उतना शायद ही संसार के किसी देश के निवासियों को प्राप्त हो। वर्तमान युद्ध के छिड़ने पर दोनो ही राष्ट्रों ने अपनी निष्पक्षता की घोषणा की और भरसक इस बात की कोशिश की कि वे पूर्णरूप से प्रतिद्वंद्वियों के बीच में तटस्थ रहे, लेकिन जर्मनी ने नार्वे को पैरों तले कुचल ही डाला। नार्वे का राजा, राजवंश और मंत्रि-मंडल इँगलैंड भाग गये। अँगरेजी और फ्रांसीसी सेनायें, जो जर्मन सेनाओं का विरोध करने में नार्वे की सहायता करने के लिए भेजी गई थीं, फ्रांस पर आक्रमण होने के बाद वापस चली आईं। सारे नार्वे पर इस समय जर्मनी का कब्जा है। छल-कपट से जर्मनी ने नार्वे के दक्षिणी भाग पर जिस आसानी से अपना अधिकार जमाया, उसका उदाहरण संसार के इतिहास में मिलना कठिन है। स्वीडैन स्वतंत्र है—अभी तक। लेकिन नार्वे की दशा को देखते हुए उसकी स्वतंत्रता का मूल्य ही क्या?

अफ़्रीका में इटैली
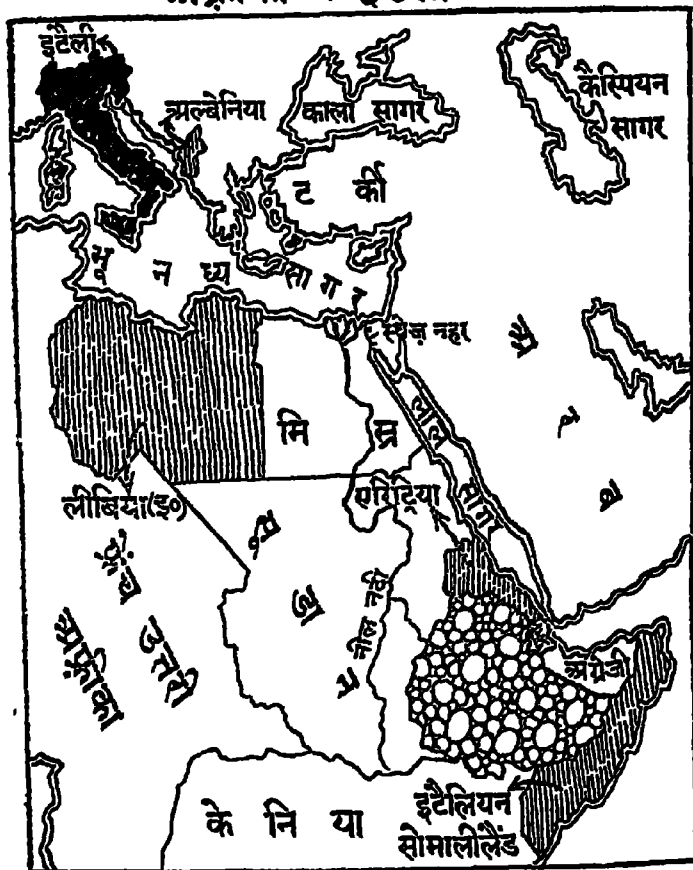
एबीसीनिया (इटैलियन)

अफ्रीका में इटैली

१९ वीं सदी अफ्रीका के लूट की सदी कही जा सकती है। इँगलैंड, फ्रांस, स्पेन, बेलजियम, जर्मनी और इटैली ने अफ्रीका की प्राकृतिक दौलत को हथियाने की ग़रज़ से महाद्वीप पर मांसलोलुप गिद्धों की तरह टूट पड़े। इँगलैंड, फ्रांस और बेलजियम ने उसके बहुत बड़े हिस्से पर अधिकार जमा लिया। अँगरेज़ी साम्राज्य इस महाद्वीप के बहुत बड़े खण्ड पर इस समय अपनी सल्तनत जमाये बैठा है। गत महायुद्ध के बाद जर्मनी के कई अफ्रीकन उपनिवेशो का शासन भी 'मैन्डैट' के रूप में अँगरेज़ों के हाथ में आ गया। इटैली यद्यपि भूमध्यसागर का राष्ट्र है, परन्तु अफ्रीका की उसे चंद बोटियाँ ही मिलीं। एबीसीनिया की विजय से इटैली भी अब अपने अफ्रीका-स्थित साम्राज्य की डींग हाँकने लगा है। मिस्र का पड़ोसी, लीबिया, अफ्रीका के उत्तर में है। इस पर इटैली का राज्य है। एबीसीनिया, एरीट्रिया और इटैलियन सुमालीलैंड से इटैली का पूर्वी अफ्रीका में एक ठोस साम्राज्य क़ायम हो गया है, लेकिन एबीसीनिया पर अभी तक उसका पूरा-पूरा अधिकार नहीं हो पाया। इस पूर्वी अफ्रीकन साम्राज्य के कारण इटली स्वेज़ नहर और लालसागर मे इधर कुछ साल से अपने विशेषाधिकारों पर ज़ोर देकर इँगलैंड तथा फ्रांस के साथ बराबरी का दावा पेश कर रहा है। इस समय फ्रांस और इँगलैंड के विरुद्ध इटैली जिन बातों को लेकर जर्मनी का साथ दे रहा है, उनमें लाल सागर और स्वेज़ के मसले भी शामिल हैं।

अफ़्रीका में ग्रेट-ब्रिटेन
अदन
सोमालीलैंड
यूगांडा
केनिया
टैंगानिका
न्यासालैंड
उत्तरी और
दक्षिणी
रोडेशिया
गेम्बिया
दक्षिणी लिओन
गोल्ड कोस्ट और
अशान्टी
नाइजीरिया
बेचूनालैंड
प्रोटेक्टरट
दक्षिणी पश्चिमी
अफ्रीका (मैंडेट)
यूनियन आफ साउथ
अफ्रीका
स्वाज़ीलैंड
बसूटोलैंड
केपटाउन
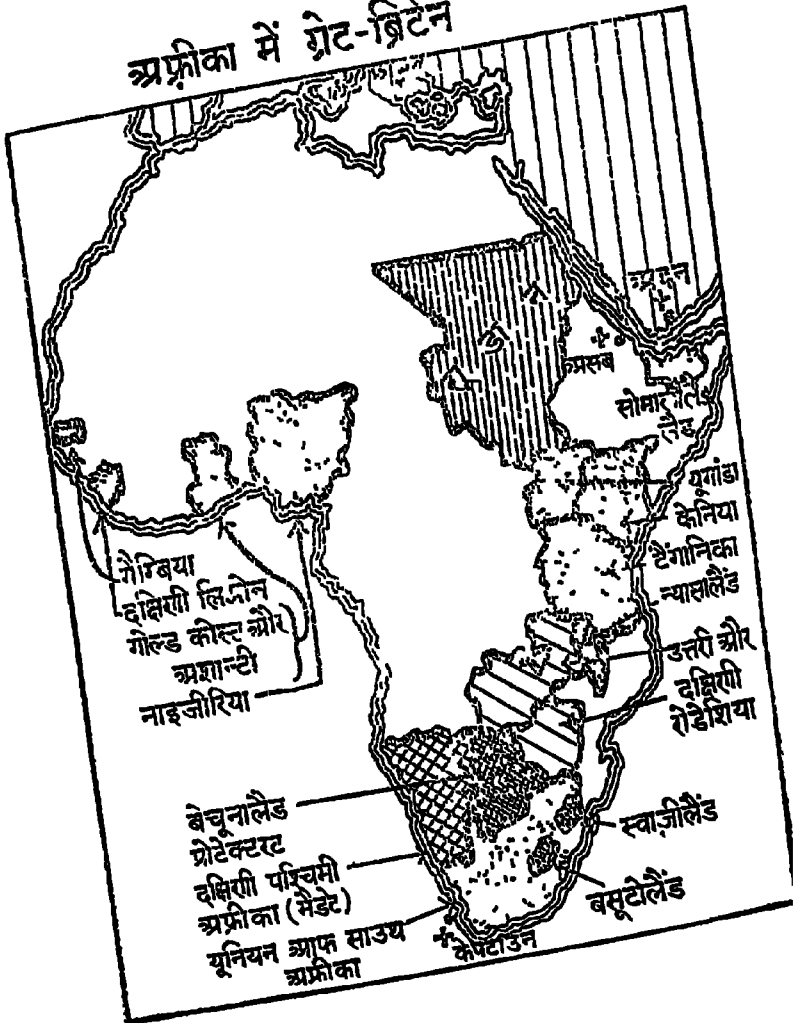
अफ़्रीका में ग्रेट ब्रिटेन

इटैली के लड़ाई मे आ जाने के कारण अफ़्रीका मे ग्रेट ब्रिटेन के संबंधित, संरक्षित या अधीन देशों का महत्त्व इस समय बहुत बढ़ गया है क्योकि इटैली का भी इस महाद्वीप मे काफी प्रसार है। इन पर हमला करने के लिए ग्रेट ब्रिटेन को अपने अफ़्रीकन उपनिवेशों से काफी सहायता मिलेगी। अफ़्रीका में ग्रेट ब्रिटेन के साम्राज्य का क्षेत्रफल ३८ लाख १९ हज़ार वर्गमील और आबादी ६ करोड़ ६ लाख है। दक्षिण में हिन्द महासागर से लेकर उत्तर में भूमध्य सागर तक अफ़्रीका के पूर्वी तट पर ब्रिटिश-साम्राज्य के विभिन्न उपनिवेश शृंखलाबद्ध श्रेणी में फैले हुए है। अफ़्रीका के मध्य और पश्चिम तटो के विस्तृत भू-भागो पर भी अँगरेजी साम्राज्य का अधिकार है। छोटे-बड़े सब मिलाकर अँगरेजों के २३ उपनिवेश अफ़्रीका मे है जिनमे से दक्षिणी अफ़्रीका, रोडेशिया, केनिया, युगंडा, टंगनाइका, सुडान, मिस्र, नाइजीरिया और पश्चिमी गोल्डकोष्ट प्रमुख हैं। इटैलियन लीबिया पर मिस्र से और एरीट्रिया या एबीसीनिया पर केनिया की ओर से अँगरेजी हमले बराबर जारी है।

इटैली से लड़ाई छिड़ जाने के कारण इँगलैड और हिन्दुस्तान के बीच में आने-जानेवाले जहाजो का लाल सागर, स्वेजनहर और भूमध्य सागर के मार्ग से होकर आना-जाना बंद कर दिया गया। अब इँगलैड से जितने जहाज हिन्दुस्तान, वर्मा, चीन, जापान, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैड के लिए रवाना होते है या इन देशो से इँगलैड को जाते हैं उन्हें अफ़्रीका के दक्षिणी अन्तरीप पर स्थित बंदरगाह, केप आफ गुड होप, से होकर अफ़्रीका के पश्चिमी तट के किनारे-किनारे आना-जाना पड़ता है। इस मार्ग-परिवर्तन के कारण समुद्री-मार्ग की दूरी ३-४ हजार मील हो गई है। अब इँगलैड माल ले जाने में समय भी अधिक लगता है और खर्च भी अधिक होता है।

ईरान
तब्रीज़
अस्त्राबाद
तेहरान
यज्द
शुस्तर
ई रा न
दुजदाब
बसरा
बुशायर
बन्दर
अब्बास
की खाड़ी
अ र ब
सागर
अ र ब
तेल के कुएँ
रेल
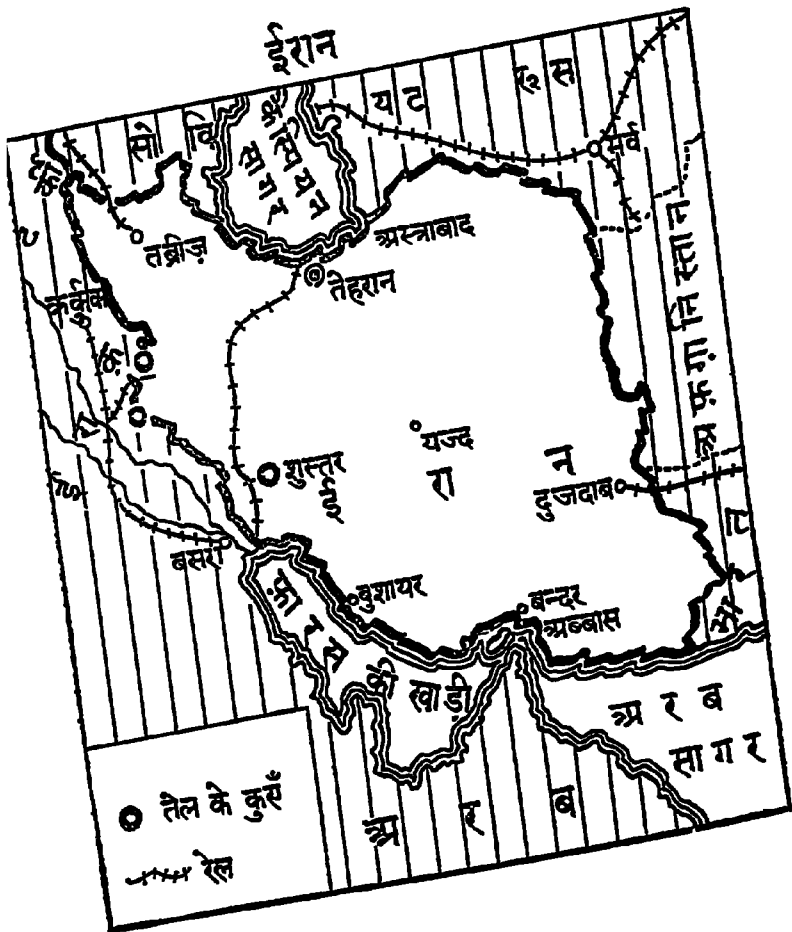
ईरान

प्राचीन नाम परसा, परसिया या फारस। क्षेत्रफल ६¼ लाख वर्गमील से कुछ अधिक। आबादी १½ करोड़। प्राचीन और मध्य कालीन युगों मे इस राष्ट्र की बड़ी शान और ख्याति थी, लेकिन बाद में घरेलू झगड़ों के कारण यह दुर्बल हो गया। १९०७ में रूस और ग्रेट ब्रिटेन ने ईरान का बटवारा कर लिया ताकि अपने-अपने हिस्सों पर दोनों अविरोध अपने प्रभाव को बढ़ा सकें; लेकिन रूस में १९१७ के साम्यवादी विप्लव के बाद वहाँ की तत्कालीन सरकार ने ईरान-सम्बन्धी इस सन्धि को रद्द करने की घोषणा कर दी और सन् १९१८ में अँगरेजी फौजें भी वहाँ से लौट आईं। ईरान का अंताराष्ट्रीय महत्त्व मिट्टी के तेल के कुओं के कारण विशेष है। शाह रजाखाँ पहलवी, जो शुरू में ईरानी फौज के एक अफसर थे, १९२५ में ईरान के बादशाह बन बैठे। तब से शाह के प्रयत्न से वहाँ अनेक बुनियादी सुधार हुए हैं, और ईरान की निर्जीव हड्डियों में फिर से नवजीवन का संचार होने लगा है।

दक्षिणी ईरान में मिट्टी के तेल के जो कुएँ हैं उनका मालिक ऐंग्लो-ईरानियन आयल कम्पनी है जिसमें ब्रिटिश सरकार का प्रचुर धन लगा है। सन् १९३८ में १ करोड़ ३ लाख टन तेल की निकासी हुई। ईरान के विदेशी व्यापार का ४० सैकड़ा सोवियट रूस के हाथ है। इसके बाद जर्मनी और ग्रेट ब्रिटेन का नम्बर है।

रेलों की कमी है। सड़कों का एक तरह से अभाव है। मरु-भूमि और पहाड़ी प्रदेश इसके साम्पत्तिक विकास में अड़ंगे का काम करते हैं। शाह रजा पहलवी ने एक रेलवे लाइन बनवाई है, जो उत्तर में कैस्पियन-सागर से आरम्भ होकर दक्षिण में ईरान की खाड़ी तक चली गई है।

सिंगापुर

भारतवर्ष
कलकत्ता
चीन
फ्रेंच इन्डो-चीन
कैन्टन
फारमोसा (जापानी)
हांगकांग
फिलीपाइन्स
मैनीला
श्याम
सैगोन
सिंगापुर
बोर्नियो
मोलक्काज
बैटाविया
डच ईस्ट इन्डीज
जावा
पोर्ट डार्विन
केपटाउन को
आस्ट्रेलिया
समुद्री अड्डा
ब्रिटिश
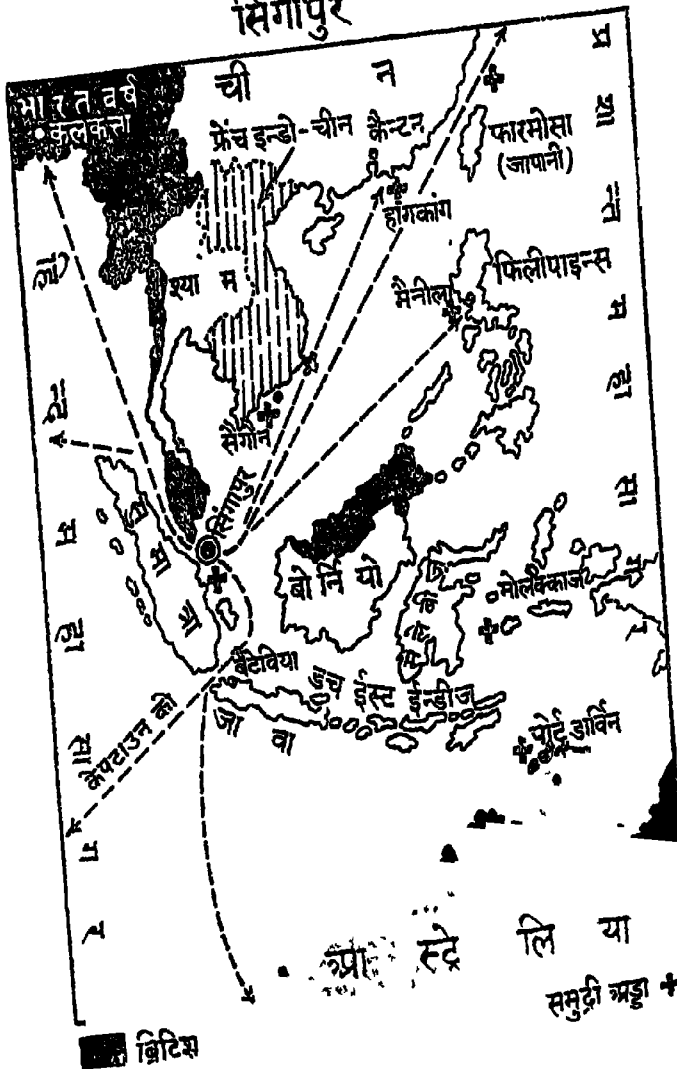
सिंगापुर

सिंगापुर सुदूर पूर्व में ग्रेट ब्रिटेन का सबसे बलशाली गढ़ है। वह जापान की छाती की ओर मुड़ी हुई कटार है। यहाँ से ग्रेट ब्रिटेन जापानी आक्रमण से अपने पूर्वी साम्राज्य की रक्षा आसानी के साथ कर सकता है। भारत, बर्मा और श्याम, मलय प्रायद्वीप चीनी ब्रिटिश उपनिवेश और आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड—इन सबकी रक्षा के लिए सिंगापुर ब्रिटेन के शाही जंगी बेड़ो का प्रधान केंद्र है। चीन, जापान, आस्ट्रेलिया और पश्चिमी अमेरिका से भारत को आने के मार्ग के बीचोबीच खड़ा, सिंगापुर अँगरेज़ी प्रभुता का सशस्त्र संरक्षक संतरी है।

सिंगापुर के सामुद्रिक अड्डे का निर्माण १९३९ में समाप्त हुआ। १२ करोड़ के ऊपर इसकी बनवाई में खर्च हुए।

ब्रिटिश दृष्टि-कोण से सिंगापुर का महत्त्व क्या है, यह सर स्टेम्फोर्ड रैफ़ैल्स के कथन से स्पष्ट हो जाता है। १८१९ में जब सिंगापुर पर अँगरेज़ों ने क़ब्ज़ा किया तब सर स्टेम्फोर्ड रैफ़ैल्स ने लिखा था—'चीन, जापान, श्याम और कंबोडिया पर,—पड़ोसी टापुओं की कौन कहे,—इसके (सिंगापुर के) द्वारा हमारा प्रभाव स्थापित हो जाता है।

—

इंडो चीन

लैनचाऊ
सियान
हैंकाउ
चुङकिङ
सुइफू
क्वेयाङ
क्वेलिन
कुनमिङ
चीन
कैन्टन
हांगकांग
नानिङ
लाशियो
माण्डले
हनोई
चीन सागर

रेलवे लाइन
सड़क
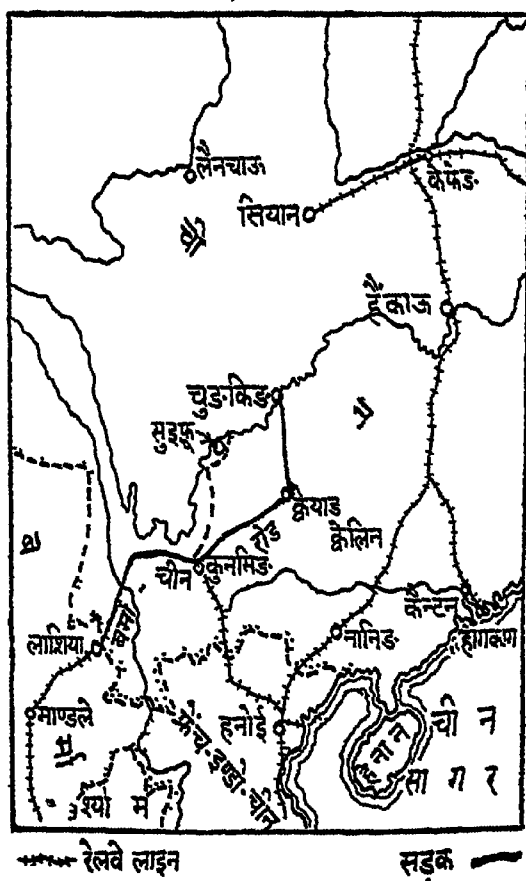
इंडोचीन

जून १९४० को लंदन से यह समाचार प्रकाशित हुआ कि जापान ने चीन-जापान-युद्ध में फ्रैंच इंडोचीन के मार्ग से चीन को मदद पहुँचाने के विरुद्ध टोकियो-स्थित फ्रैंच राजदूत से आपत्ति की, और कहा जाता है कि यदि इंडोचीन के द्वारा फ़्रांस चीन की सरकार को सहायता देना न बन्द करेगा तो जापानी फौजों को इस सहायता को रोकने के लिए उचित कार्यवाही करनी पड़ेगी। चीन शस्त्रास्त्र इंडोचीन के द्वारा भी मँगाता रहा है और जापान इस व्यापार को बन्द करने पर तुला हुआ है। जापान ने जर्मनी और इटैली को भी यह संदेश भेजा है कि फ्रैंच इंडोचीन की राजनीतिक और साम्पत्तिक स्थिति मे, योरप में फ़्रांस की पराजय के कारण, कोई उलट-फेर नहीं होना चाहिए। फ़्रांस ने जापान की बात मान ली और वादा किया है कि इंडोचीन के मार्ग से चीन की सरकार को युद्ध-सामग्री की प्राप्ति रोक दी जायगी।

इंडोचीन का रकबा २ लाख ८१ हज़ार वर्गमील और आबादी २ करोड़ ३९ लाख है जिसमें योरपियनो की संख्या ४२ हज़ार से कुछ अधिक है। सन् ३८ में इंडोचीन का सालाना आय-व्यय ८९ करोड़ २१ लाख फ्रैंक क्रमशः था। इंडोचीन कृषि-प्रधान देश है और धान विशेष रूप से यहाँ बोया जाता है। इलायची, शकर और चाय यहाँ से दूसरे देशो को जाती हैं। १९३७ में ४७ लाख टन कोयला, १० हज़ार टन जस्ता, ३२ सौ टन टीन खदानो से निकाली गई। सन् ३७ मे यहाँ से १५ लाख टन से ऊपर चावल का निर्यात हुआ, जिसका मूल्य १,०९,३८ लाख फ्रैंक था। रबर, मछली, कोयला और कालीमिर्च, आदि, की भी काफी निकासी हुई।

चीन
सोवियट रूस
मंगोलिया
उर्गा
उलियासुताई
मंचूक्यो
कोरिया
पेकिंग
टीनसीन
लैंचाऊ
नानकिंग
शंघाई
हैंगचाऊ
चुङकिंग
फारमोसा (जापानी)
हांगकांग
यूनानफू
हैनान
दक्षिण चीन सागर
यारकन्द
तिब्बत
भारतवर्ष
बंगाल की खाड़ी
आक्रमण का मार्ग
जापानी सत्ता में
चीन की राष्ट्रीय सरकार के अधीन

चीन

इस समय चीन शक्तिशाली जापान के साथ जीवन-मरण की लड़ाई लड़ रहा है। जुलाई ७, १९३७ से युद्ध का आरंभ हुआ और इसकी समाप्ति की धुँधली रेखा भी अभी नहीं दिखाई पड़ती।

चीन प्रजा-सत्तात्मक राष्ट्र है। चीन के १८ प्रान्तो का क्षेत्रफल १५ लाख वर्गमील से ऊपर है। यदि इसमें मंगोलिया, सिंगक्याङ, तिब्बत और मंचूरिया को भी जोड़ ले तो इसका रकबा ४२॥ लाख वर्गमील हो जायगा। आबादी ४० करोड़ है, और उपर्युक्त प्रदेशों को जोड़ कर वह ४६ करोड़ के पड़ोस मे पहुँच जायगी।

मंचूरिया को जापान ने १९३१ में हड़प लिया और उसका मंचूकुओ नाम रख वहाँ पर अपने नियंत्रण में एक कठपुतली शासन स्थापित कर दिया। वाह्य मंगोलिया पर सोवियट रूस का, भीतरी मंगोलिया पर जापान का और सिङ्क्याङ पर सोवियट रूस का प्रभुत्व है। तिब्बत वर्षों से स्वतंत्र है। चीन के निजी १८ प्रान्तों में से १३ में जापानी फौजों ने अधिकार जमा लिया है। चीन के प्रमुख नेता, मार्शल च्याङ्काई-शेक बड़ी दृढ़ता और वीरता के साथ जापानी आक्रमण का विरोध कर रहे है। रूस, ब्रिटेन और अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र से चीन को सहानुभूति और सहायता मिल रही है।

जापानियों ने चीन के समस्त पूर्वी तट पर अपना अधिकार जमा लिया है। इंडोचीन का भी रास्ता पिछले सप्ताह में बन्द हो गया। चीनी-सरकार इस समय जो कुछ युद्ध-सामग्री बाहर से मँगाती है उसके समुद्री-मार्ग दो ही हैं—एक रूसी साइबेरिया का ब्लाडीवास्टक और दूसरा बर्मा का रंगून।

इस चीन-जापान-युद्ध की आग में चीन की राष्ट्रीय आत्मा तप कर नई आभा से जगमगा उठी है। एक मन, एक संकल्प, एक विचार से, चीन अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए जो भगीरथप्रयत्न कर रहा है उसकी कहानी इतिहास में स्वर्णाक्षरो से लिखी जायगी।

जापान
सोवियट रूस
ओखोटस्क सागर
कोमसोमोलस्क
सखालिन
ओमिनातो
व्लाडीवोस्टक
जापान सागर
कोरिया
टोकियो
योकोहामा
पोर्टआर्थर
पीत सागर
चिन्हाई
सासेबो
शंघाई
पूर्वी चीन सागर
फारमोसा
प्रशान्त महासागर
जापानी साम्राज्य
आक्रमण का मार्ग
समुद्री अड्डा
जापानी संरक्षण में

जापान
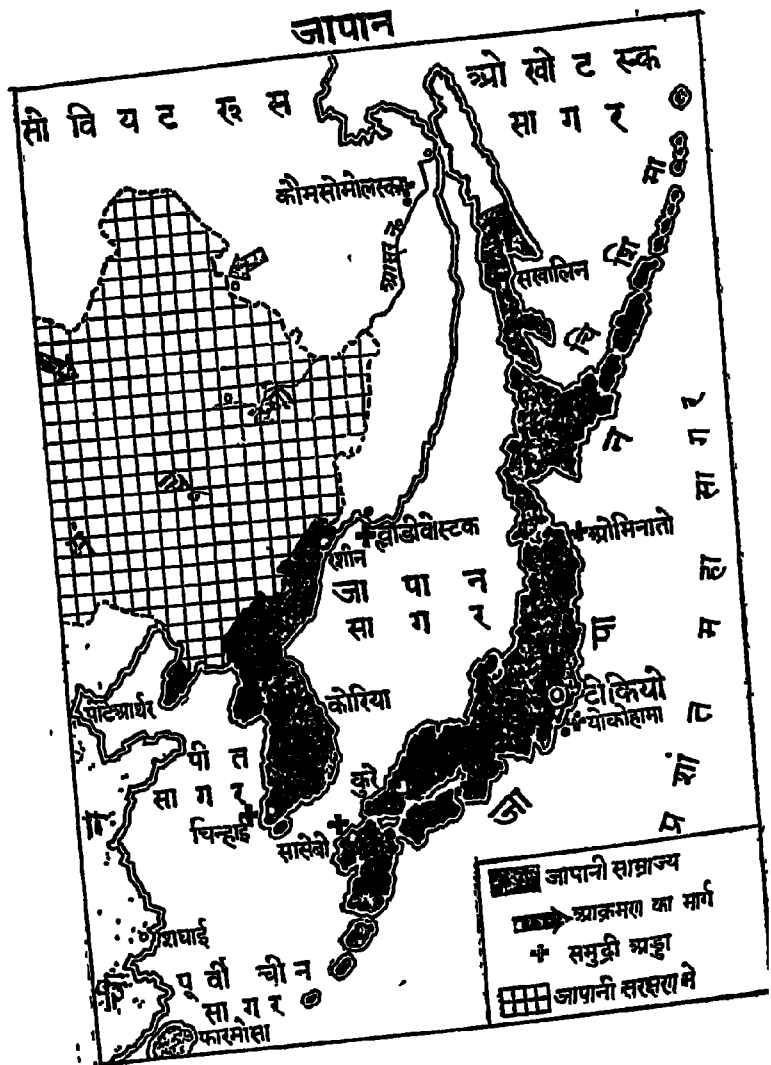
१६वीं शताब्दी में इँगलिस्तान की योरप में जो दशा थी उससे भी गिरी हुई दशा जापान की १८७० के पूर्व थी, लेकिन पिछले ७० वर्ष में जापान ने संसार के सामने राष्ट्रीय उत्थान का अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत कर दिया है। १८९५ में बौने जापान ने भीमकाय चीन को पछाड़ कर जगत् को चकित कर दिया। १९०५ में रूस-जापान-युद्ध में इसने रूस को इतना रगड़ा कि दुनिया अचंभे में ताकती ही रह गई। तब से इसका विकास दिन दूना और रात चौगुना बढ़ने लगा। पहले इसने कोरिया पर अधिकार जमाया। ३१ मे चीन के मंचूरिया नामक प्रांत को इसने अपने कब्जे मे कर लिया और वहाँ एक कठपुतली शासन स्थापित किया। सन् ३७ से यह चीन में ऊधम मचा रहा है। १८ चीनी प्रांतों में से १३ में इसने अपना आतंक जमा लिया है।

जापान सुदूर-पूर्व में किसी दूसरे महाराष्ट्र की प्रभुता को नहीं देखना चाहता। समस्त एशिया का वह उसी तरह संरक्षक बनना चाहता है, जिस तरह अमेरिका का संयुक्त-राष्ट्र उत्तरी और दक्षिणी अमेरिकाओं में किसी बाहरी राष्ट्र के प्रभाव या हस्तक्षेप का सशस्त्र विरोध करने के लिए तैयार है। रूस, ग्रेट ब्रिटेन और अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र के स्वार्थों और हितो की सुदूर-पूर्व में जापान के स्वार्थ और हितों के साथ प्रतिकूलता है। चीन में यदि जापान स्थायी रूप से जम गया तो उसकी शक्ति दुर्दमनीय हो जायगी; लेकिन ऐसा संभव नहीं दिखाई देता, क्योंकि चीनी इस विदेशी अत्याचारी को अपने देश से निकाल कर अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए सर्वस्व स्वाहा कर लड़ रहे हैं।

प्रशान्त महासागर
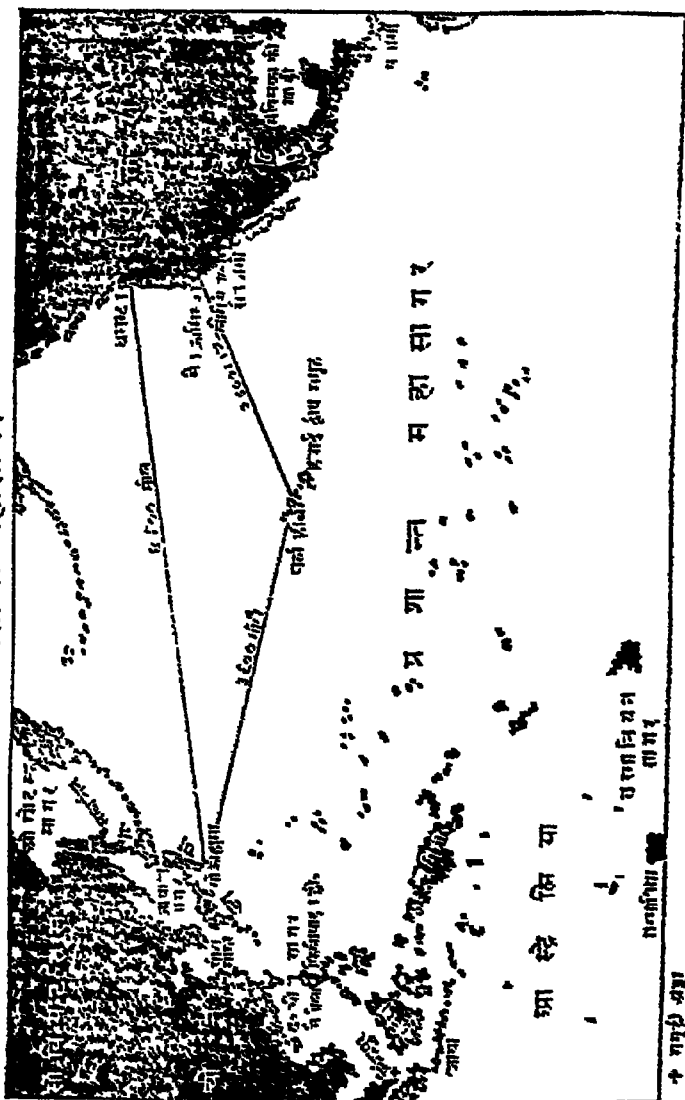
प्रशांत महासागर

जापान और अमेरिका का भावी रण-क्षेत्र

प्रशांत महासागर में किसकी प्रभुता होगी? जापान चाहता है कि इस सुविस्तृत जल-खंड पर उसी का एकच्छत्र राज्य रहे। अमेरिका का संयुक्त-राष्ट्र उसके इस दावे का प्रबल विरोधी है और इस मामले में ग्रेट ब्रिटेन भी चुप नहीं रह सकता है। सुदूर पूर्व में अँगरेज़ी राज्य का काफी विस्तार है। यहीं पर आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड उसके दो प्रमुख उपनिवेश हैं जो स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में ब्रिटिश कामनवेल्थ आफ नेशन्स के शक्तिशाली अंग हैं। चीन में हाङ्काङ अँगरेज़ों का एक दूसरा उपनिवेश है। मलय प्रायद्वीप में भी अँगरेजी प्रभुता है। चीन में अँगरेज़ों ने ४५ करोड़ पौंड लगा रक्खे है। प्रशांत महासागर में जापानी प्रभुता के कारण अपने इन हितो और स्वार्थों पर आघात की संभावना के सामने ग्रेट ब्रिटेन कदापि चुप वैठा नहीं रह सकता। अमेरिका के भी चीन के साथ वहुत विस्तृत व्यापारी संवंध हैं। फिलीपाइन द्वीपपुंज अमेरिका के संरक्षण में है। प्रशांत महासागर मे और भी कई ऐसे टापू हैं जिन पर संयुक्त-राष्ट्र का अधिकार है। जापान अपनी नाविक शक्ति को वड़ी तेजी से वढ़ा रहा है और इसका उत्तर ग्रेट ब्रिटेन ने सिंगापुर के नाविक अड्डे को वनाकर दिया है। अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र ने भी अपनी सारी सामुद्रिक शक्ति इसी प्रशांत महासागर में जमा कर रक्खी है। जापान और संयुक्त-राष्ट्र के राजनीतिज्ञ और रणनायक रात-दिन प्रशांत महासागर के भावी संघर्ष की जटिल समस्याओं का अध्ययन करने में लीन है। अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र की प्रतिनिधि-सभाओ ने अभी हाल ही में जंगी विभागों के लिए अरवों रुपये का अतिरिक्त ख़र्च स्वीकार किया है ताकि देश जल्द से जल्द पूर्व में जर्मनी और पश्चिम मे जापानी आक्रमणों का सामना करने के लिए पूरी तौर से तैयार हो जाय।

अमेरिका के महाद्वीप
ग्रीनलैंड
ऐलास्का
कैनाडा
न्यूफाउंडलैंड
ओटावा
हैलीफ़ैक्स
फिलेडेल्फिया
नौरफोक
चार्लस्टन
सैनडीगो
अटलांटिक महासागर
मैक्सिको की खाड़ी
मैक्सिको
कोलंबिया
वेनीज़ुएला
गायना
पनामा
प्रशांत महासागर
इक्वेडर
पेरू
बोलेविया
ब्राज़ील
रियो-डि-जैनेरो
पैरागुआ
उरुगुआ
मांटेविडियो
ब्यूनस एयर्स
चिली
वालपैरेज़ो
अर्जेन्टाइना
+ समुद्री अड्डा
⊙ राजधानी

अमेरिका के महाद्वीप

संसार के दो गोलार्द्ध हैं—एक पूर्वी और दूसरा पश्चिमी। पूर्वी गोलार्द्ध में ४ महाद्वीप हैं—अफ्रीका, एशिया, योरप और आस्ट्रेलिया। पश्चिमी गोलार्द्ध में दो विशाल महाद्वीप हैं—उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका जो एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। दोनों को मिलानेवाली नली मध्य अमेरिका के नाम से प्रसिद्ध है। उत्तरी अमेरिका के उत्तर में अँगरेज़ो का कैनाडा है और इसके नीचे संयुक्त-राष्ट्र फैला हुआ है। मध्य अमेरिका का प्रमुख देश मैक्सिको है जो मिट्टी के तेल और चाँदी के लिए प्रसिद्ध है। इसी भाग में पनामा नाम की नहर है जो अमेरिका के पूर्व में स्थित अटलांटिक महासागर को अमेरिका के पश्चिम में स्थित प्रशान्त-महासागर से मिलाती है। पनामा नहर संयुक्त-राष्ट्र के धन से बनी है और उसी का उस पर अधिकार है। दक्षिणी अमेरिका में कई छोटे-बड़े प्रजा-सत्तात्मक राष्ट्र हैं जिनमें ब्रेज़ील, अर्जन्टाइन, पीरू और चिली प्रधान हैं। दक्षिणी अमेरिका की करोड़ों वर्गमील उपजाऊ ज़मीन निर्जन पड़ी है। जापान और जर्मनी दोनों ही की आँखें दक्षिणी अमेरिका पर लगी हुई हैं और उसके सांपत्तिक महत्त्व को देखकर उनके मुँह में पानी आ जाता है। इसी लिए दक्षिणी अमेरिका की निर्बल रियासतों में वर्षों से नात्सी षड्यंत्र का चक्र ज़ोरों से चल रहा है। इसका उदाहरण यूरेगुआ है। (अगला नकशा देखिए।) संयुक्त राष्ट्र वर्षों से यह घोषणा करता चला आया है कि यदि कोई एशियाई या योरपीय राष्ट्र अमेरिका महाद्वीप के किसी अंश पर अधिकार जमाने की कोशिश करेगा तो उसका घोर—आवश्यकता पड़ने पर सशस्त्र भी—विरोध करने के लिए वह तैयार है।

उरैगुआ
सान्त्रोपौलो
पैरानागुआ
उरैगुआ नदी
पराना नदी
ब्यूनसएयर्स
मौंटेविडिओ
उ रै गु आ
दक्षिणी अटलांटिक महासागर
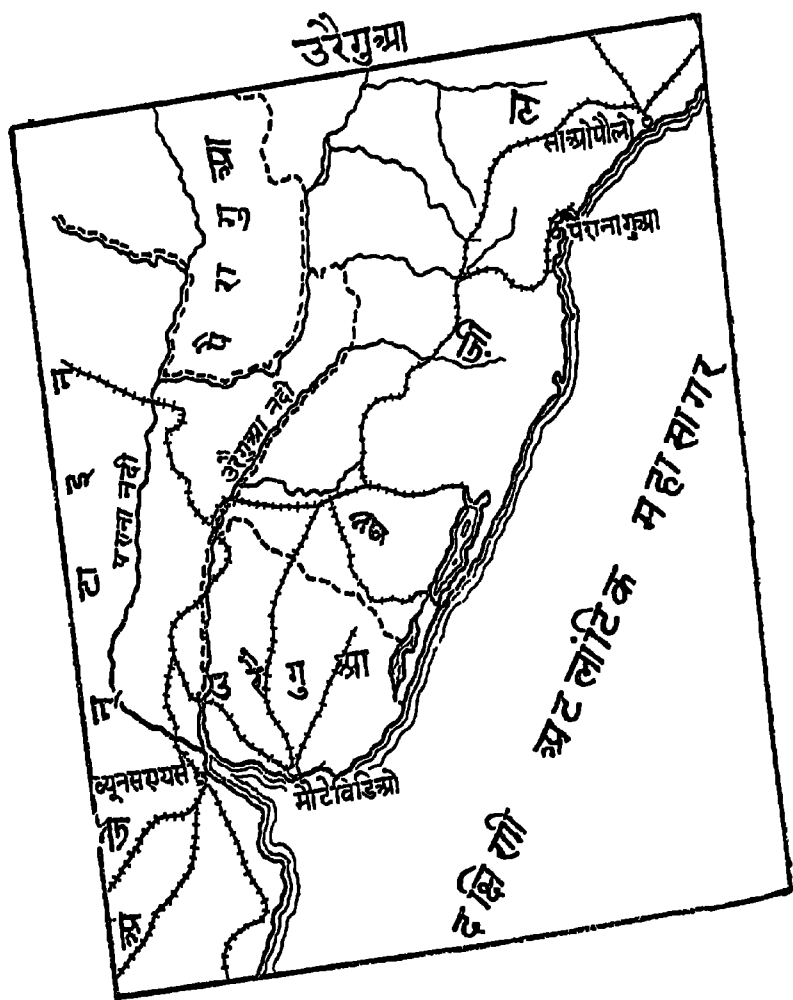
यूरैगुआ

बीसवीं सदी का सबसे बड़ा हड़बोग, हर हिटलर, विश्व-विजय का स्वप्न देख रहा है। योरप पर अपना आधिपत्य जमाने में अभी तक उसे काफी सफलता मिली है। आस्ट्रिया, चैकोस्लोवाकिया, पोलैंड, नार्वे, डैनमार्क, हालैंड, बैलजियम और, अब, फ्रांस की स्वाधीनता को उसने नष्ट कर दिया, और इन देशों में आज़ादी का चिराग कम से कम थोड़े दिन के लिए तो बुझ ही चुका। स्पेन में जर्मनी और इटैली ने मिलकर जनरल फ्रैंको को मदद दी और इस तरह उस देश में भी प्रजासत्ता का अन्त कर दिया। इस समय अकेला इँगलैंड दुर्जेय हिटलर का सामना करने के लिए मैदान मे डटा है। यदि इँगलैंड भी परास्त हो गया तो फिर उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका पर धावा करने का मार्ग हिटलर के लिए खुल जायगा।

बहुत दिनो से अमेरिका के विभिन्न राष्ट्रों में नात्सी षड्यंत्रों के समाचार अखबारों में प्रकाशित होते आते हैं। हाल ही में कैनाडा में इसी तरह के एक षड्यंत्र का भंडाफोड़ हुआ है। एक दूसरा समाचार १९ जून को प्रकाशित हुआ, जिससे काफी सनसनी फैल गई है। यूरैगुआ नाम का एक राष्ट्र दक्षिण अमेरिका के पूर्वी तट पर है। वहाँ की पुलिस ने नात्सियो के षड्यंत्र का पता लगाया है, जिससे यह मालूम हुआ कि जो लोग पहले जर्मन सेना में थे उनकी सहायता से यूरैगुआ मे सशस्त्र क्रांति की तैयारी थी। उसका उद्देश था उस राष्ट्र की स्वदेशी हुकूमत को हटा कर नात्सी शासन की स्थापना करना जिसमें यह देश जर्मन राष्ट्र का दक्षिण अमेरिका मे एक कृषि-प्रधान उपनिवेश हो जाय।

यूरैगुआ की प्रतिनिधि-सभा ने पुलिस की इस रिपोर्ट पर गुप्त अधिवेशन में विचार किया। स्थानिक नात्सियो को देश से निकालने का फैसला वहाँ के मंत्रि-मंडल ने किया है। जर्मनी ने इसका विरोध किया है। यूरैगुआ की सरकार ने अमेरिका के संयुक्त-राष्ट्र से जर्मनी के इस प्रतिवाद का मुकाबिला करने में सहायता माँगी और उसे पूरी मदद का वचन मिल भी गया।

जर्मनी कितना स्वावलंबी है

(अंक हजार टन में)

रुई — १.२, ५,३६,

ऊन — ४०, ८० २,६५,

मोटर का तेल — २६,४०, ३,४७, २०,६७

कच्चा मिट्टी का तेल — ६,२०, ४३, १५,१२,

ताँबा — ८०, १,१४ ६,०४

तेलहन — १,५६, १,३२ ३१ ६.४,

खाद्य — ४,८३,२०, १८,७७, ६२,६२

कच्चा लोहा — ३,१०,००, २,४५,१६ १,६३,३६

जर्मनी में पैदा हुये — सुगम देशों से प्राप्य — दुर्गम देशों से प्राप्य
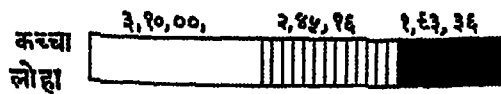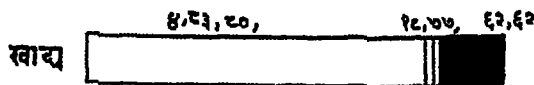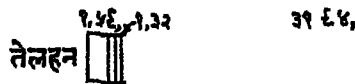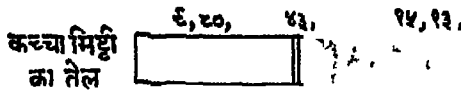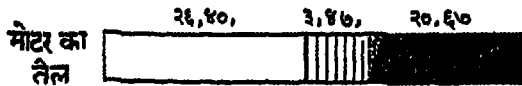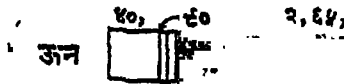
जर्मनी कितना स्वावलम्बी है ?

जब लड़ाई छिड़ी थी तभी लोगों का यह ख़्याल था कि जर्मनी अधिक समय तक टिक नहीं सकता। पौलैंड, नार्वे, डैनमार्क, हालैंड, बैलजियम और फ़्रांस के ऊपर कब्ज़ा कर लेने के बाद तो उसकी सांपत्तिक दशा सुधरने के बजाय और भी अधिक बिगड़ गई। संयुक्त-राष्ट्र, अमेरिका, के भूतपूर्व राष्ट्रपति मिस्टर हूवर ने कुछ दिन पहले बोलते हुए संसार को इस बात की चेतावनी दी है कि बैलजियम के पास इस समय अधिक से अधिक ६० दिन के लिए भोजन की सामग्री शेष है। उन्होंने यह भी बताया कि योरप में वह अकाल पड़नेवाला है जिसकी मिसाल संसार के इतिहास में मिलना कठिन है। इसके आगे उन्होंने अपने श्रोताओं को याद दिलाई कि विगत युद्ध के बाद सिर्फ़ बैलजियम के भुक्खड़ों को सहायता देने में प्रतिमास २½ करोड़ (२,५०,००,०००) डालर खर्च करना पड़ता था। २½ करोड़ डालर ५ करोड़ ८० लाख रुपये के बराबर हैं। इस समय बैलजियम की जो हालत है वैसी ही हालत पोलैंड, चैकोस्लोवाकिया, आस्ट्रिया, डैनमार्क, हालैंड, फ़्रांस और इटैली की हो गई या निकट-भविष्य मे हो जायगी। जर्मनी, इटैली और जर्मनी के विजित देशों का समुद्री मार्ग से जितना व्यापार था उस सबका गला इँगलैंड के जंगी बेड़े ने बड़ी बेदर्दी के साथ घोट दिया। फ़्रांस, बैलजियम और हालैंड के उपनिवेशो से जो माल अभी तक थोड़ा बहुत दुश्मनों को मिल जाता था उसका आना ही सिर्फ़ नहीं बन्द हो गया बल्कि उस सब पर इँगलैंड का एक मात्र अब अधिकार हो गया। इसी लिए जर्मनी का पतन निश्चित है यदि लड़ाई अधिक दिन तक जारी रही। जर्मनी ख़ुद इसी डर के कारण इस बात की जी-जान से कोशिश में लगा है कि जल्द से जल्द वह लड़ाई में विजयी हो जाय।

——

जर्मनी की आवश्यकतायें और रूस के साधन
(अंक हजार टन में)

	जर्मनी का कुल आयात	रूस का कुल निर्यात
गेहूँ और जौ	२६,२२,	२१,३२
मक्खन	१,७७,	३०,
तेलहन	३१,६०,	१.५८
मिट्टी का तेल मोटर और तेल इत्यादि	८६,७०,	३८,६०
कच्चा मैंगनीज	११.०८	२०,०२,
कच्चा लोहा	४,१२,४२	७,००,
कच्ची रुई	४,६०,	६०,
लकड़ी	८६,१६,	६८,४८

जर्मनी की आवश्यकतायें और रूस के साधन

सितम्बर में लड़ाई छिड़ने के कुछ दिन पहले रूस और जर्मनी मे संधि हो गई थी जिसके कारण रूस से कच्चे माल के मँगाने की सुविधा जर्मनी को प्राप्त हो गई। जो आँकड़े हम दे रहे हैं उनसे इस बात का हमे आसानी से पता लग सकता है कि किन ख़ास जिन्सों की जर्मनो को कितनी आवश्यकता है और उस आवश्यकता को कहाँ तक रूस पूरा कर सकता है।

हज़ार टनों में

	(१) जिन्स	(२) जर्मनी मे बाहर से आमदनी	(३) रूस से दूसरे देशों को रवानगी
१	गेहूँ और जो	१४,६१,	१०,६६,
२	मक्खन	८७,	१५,
३	तेलहन खली	१५,८०,	७९,
४	मिट्टी का तेल	४३,३५,	१९,३०,
५	मेगनीज़	५,५४,	१०,०१,
६	लोहा	२,०६,२१,	३,५,
७	कपास	२,४५,	४५,
८	लकड़ी	४३,०९,	४९,७४,

जर्मनी को अपनी आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए उन्हीं चीजों को रूस से लेना पड़ेगा, जिनको लड़ाई के पहले जर्मनी रूस के अलावा दूसरे देशों से भी मँगाया करता था। लेकिन जर्मनी की आवश्यकताओं को रूस उसी हद तक पूरा कर सकता है जिस हद तक अपनी घरेलू आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद उसके पास माल बच रहे।

विरोधी राष्ट्रों की साम्पत्तिक शक्ति

(अंक हज़ार में)

	ब्रिटेन	फ्रांस	जर्मनी
कच्चा लोहा	८६,६६,	२,३०,४०	६८,६२
लोहा और फ़ैरोएलॉय	१७२,५८	१,५८,३२	३,२६,८६
फौलाद	२,६३,८४.	१,५८,०४	४,००,२६,
कोयला	४८,८५,३४.	५,८६,२८,	३६,६६,८६
बिजली (किलोवाट)	२८,७६,००,००	१८,१६,२०,००,	५१,६४,६०,००,
मोटर	४,६३,	२,००,	३,३८,
व्यापारी जहाज़ की संख्या	१,७५,४४.	७८७०,	३६,३९,

टन में
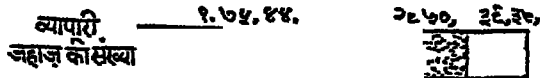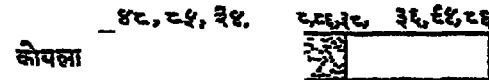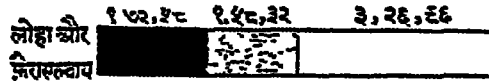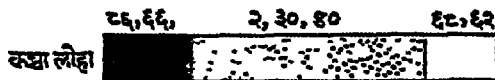
(अंक हज़ार में है)

विरोधी राष्ट्रों की साम्पत्तिक शक्ति

साम्पत्तिक साधनों की तुलना

१ व्यापारी जहाज़ (हज़ार टनों में) :—	
(अ) ब्रिटेन	१,७५,४४,
(इ) फ्रांस	२८,७०,
	२,०४,१४,
(उ) जर्मनी	३९,३७,
२ मोटरकार (हज़ार टनों में) :—	
(अ) ब्रिटेन	४,९३,
(इ) फ्रांस	२,००,
	६,९३,
(उ) जर्मनी	३,३८,
३ बिजली (लाख किलोवाटों में) :—	
(अ) ब्रिटेन	२८,७६,००,
(इ) फ्रांस	१८,१६,२०,
	४६,९२,२०
(उ) जर्मनी	५१,६४,९०,
कोयला (लाख टनों में) :—	
(अ) ब्रिटेन	२४,४३,
(इ) फ्रांस	४,४३,
	२८,८६,
(उ) जर्मनी	१८,४७,
५ कच्चा लोहा (लाख टनो में) :—	
(अ) ब्रिटेन	४३,
(इ) फ्रांस	१,१५,
	१,५८,
(उ) जर्मनी	३४,
६ लोहा और फौलाद (लाख टनों में) :—	
(अ) ब्रिटेन	२,२८,
(इ) फ्रांस	१,५८,
	३,८६,
(उ) जर्मनी	३,६३,

जर्मनी की वृद्धि

क्षेत्रफल
५,६३ हजार वर्ग मील
६,३० हजार वर्ग मील

शकर
१६ लाख टन
५०,४१ हजार टन

मिट्टी का तेल
५ लाख टन
५,१८ हजार टन

मोटर का पेट्रोल
१३,२० हजार टन
१४,७१ हजार टन

लकड़ी का भूरा
२५,९४ हजार टन
३१ ११ हजार टन

कच्चा लोहा
३४,३१ हजार टन
५३,४६ " "

जनसंख्या
७,५० लाख
१३,२१,६२ हजार

खाद्य पदार्थ
२,४२ लाख टन
५,७४,२७ हजार टन

कोयला
३६,६४,लाख टन
५२,८३ लाख टन

पिग आयरन
१,६३,४८ हजार टन
३,०३,५६, हजार टन

जर्मनी - म्युनिक... जर्मनी और उसके विजित देश
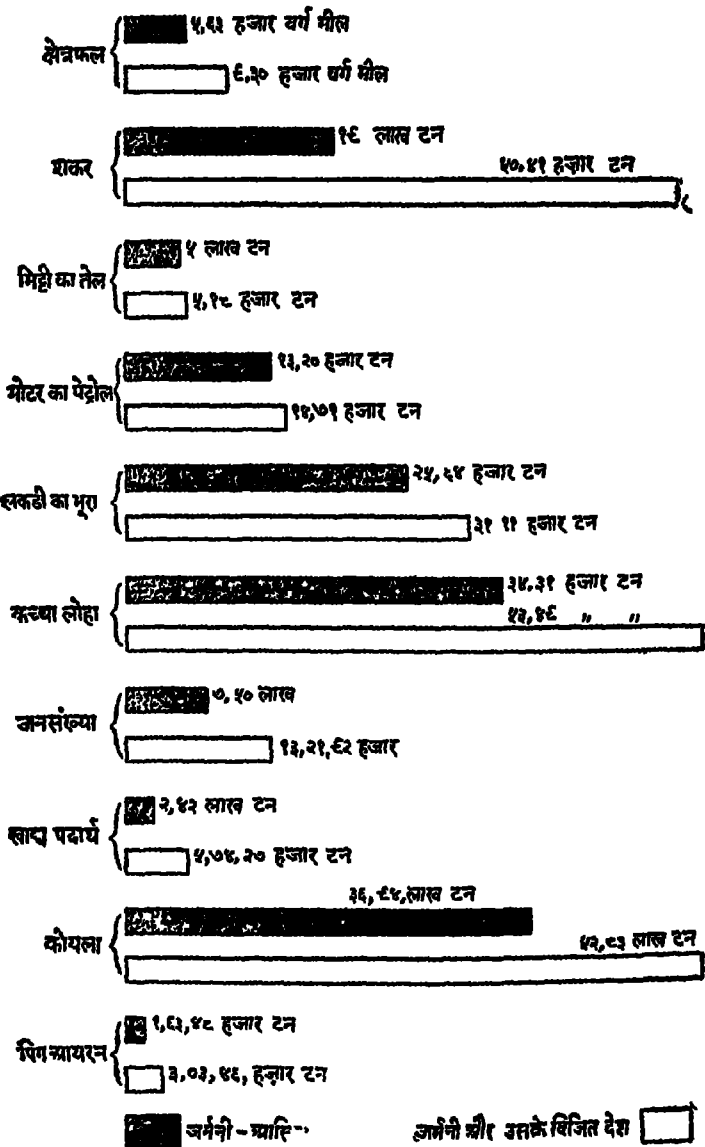
जर्मनी की वृद्धि

अब तक (अ) चैकोस्लोवाकिया, (इ) पोलैंड, (उ) हालैंड, (ए) नार्वे, (ओ) डैनमार्क और (अं) वैलजियम पर कब्ज़ा कर लेने से जर्मनी की जन-धन-सम्बन्धी आवश्यकतायें और साधनों में जो वृद्धि हुई है, उसका अन्दाज़ा नीचे के आँकड़ों से पाठकों को लगेगा :—

संख्या	मद्दे	जर्मनी-आस्ट्रिया	उपरोक्त देशों को जीतने से वृद्धि	कुल जोड़
१	क्षेत्रफल (हज़ार वर्गमील मे)	५,६३,	३,६७,	९,३०,
२	जन-संख्या (हज़ार मे)	७,५०,००,	५,७१,९२,	१३,२१,९२,
३	खाद्य पदार्थ (हज़ार टनो मे)	२,४२,००,	३,३२,२७,	५,७४,२७,
४	शकर (हज़ार टनों मे)	१९,००,	३१,४१,	५०,४१,
५	मिट्टी का तेल (हज़ार टनों मे)	५,००,	१८,	५,१८,
६	पैट्रोल (हज़ार टनों मे)	१३,२०,	१,५१,	१४,७१,
७	लकड़ी का भूरा (हज़ार टनो में)	२५,६४,	५,४७,	३१,११,
८	कोयला (सब तरह का हज़ार टनो में)	३६,९४,००,	१५,८८,५०,	५२,८२,५०,
९	कच्चा लोहा (हज़ार टनों मे)	३४,३१,	१९,१८,	५३,४९,
१०	पिग आयरन इत्यादि (हज़ार टनों में)	१,६३,४८,	१,३९,९८,	३,०३,४६,

---

जून, १९४०, में ग्रेट ब्रिटेन की साम्पत्तिक दशा
जो कठिनाई से प्राप्य है।
जो रुक गया है।
८३ करोड़ पौंड = सालाना आयात
१८०९, लाख पौंड
ग्रेट ब्रिटेन का सालाना औसत आयात
५३ करोड़ पौंड = सालाना निर्यात
२०,७८ लाख पौंड
ग्रेट ब्रिटेन का औसत सालाना निर्यात
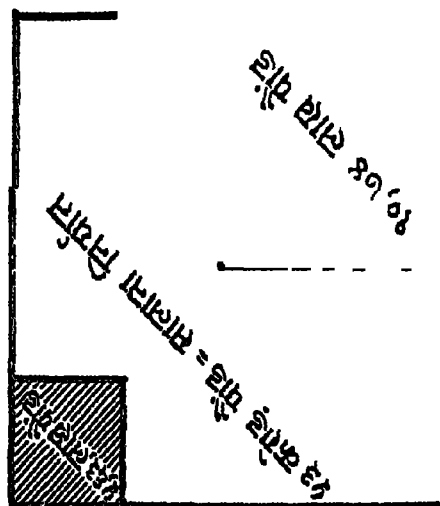
इँगलैंड के व्यापार की जून २६, १९४०, में स्थिति

अब तक की योरप में जर्मन सेनाओं की जीत के कारण इँगलैंड की व्यापारिक स्थिति मे बहुत कुछ उलट-फेर हो जायगा। नीचे हम तीन तालिकायें दे रहे हैं, जिनसे हमारे ऊपर के कथन को समझने मे पाठको को सुविधा होगी। इन तालिकाओ के सार को दोहरा देना अनुचित न होगा।

१९३५-३८ में इँगलैंड मे १३ देश-विशेषो से १८ करोड़ पौंड का माल आया, और इँगलैंड से उन देशो को लगभग ११ करोड़ पौंड के मूल्य का माल गया, अर्थात् ३९ करोड़ पौंड के इस व्यापार की कमी को पूरा करने के लिए इँगलैंड को अब सूदूर देशों के बाजारों को ढूँढ़ना पड़ेगा। इटैली का लड़ाई मे सम्मिलन भी इँगलैंड के व्यापार में काफी बाधक सिद्ध होगा, क्योकि जिन देशों के साथ इँगलैंड का व्यापार भूमध्य सागर के मार्ग से होता था उनसे आयात और उनके लिए निकासी में अब कठिनाई होगी। ऐसे आयात का सालाना मोल १९३५-३८ में ७॥ करोड़ पौंड और निर्यात ५॥ करोड़ पौंड था; अर्थात्, कुल १३ करोड़ पौंड था।

जर्मनी भी अँगरेजी जंगी बेड़े के कारण विदेशों के साथ जल-मार्ग से व्यापार नहीं कर सकता और इसके कारण उसकी सांपत्तिक दशा दिन पर दिन खराब होती जा रही है। जर्मन आक्रमण के पहले जो देश तटस्थ थे, उनके द्वारा विदेशो से जो माल जर्मनी को पहुँचा करता था उसका आयात भी अब एकदम से बंद हो गया है, क्योकि जर्मनी और उसके विजित देशों के व्यापारी जहाजों का समुद्र पर चलना भी अँगरेज़ी नाविक शक्ति के कारण एकदम बंद हो गया है। इस सांपत्तिक भार को जर्मनी कब तक सह सकेगा, यह कहना कठिन नहीं है। लेकिन साथ ही हमें यह भी न भूलना चाहिए कि फ़्रांस के पतन से इँगलैंड की सांपत्तिक कठिनाइयाँ भी बढ़ गई हैं।

तालिकाएँ

(१)

निम्नलिखित देशो के साथ इँगलैंड का व्यापार क़तई बन्द हो गया है:—

क्रम-संख्या	देश का नाम	मूल्य लाख पौंडों में आयात	मूल्य लाख पौंडों में निर्यात
१	नार्वे	१,१०,	७८,
२	स्वीडन	२,४६,	१,२८,
३	डैनमार्क	३,७९,	१,६४,
४	हालैंड	२,९३,	१,४८,
५	बैलजियम	१,०६,	८७,
६	एस्टोनिया	२१,	१२,
७	लैटविया	४६,	१८,
८	लिथुएनिया	३१,	२२,
९	पोलैंड	९५,	७५,
१०	फ्रांस	२,३६,	२,३४,
११	इटैली और इटैलियन साम्राज्य	७२,	६२,
१२	आस्ट्रिया	१७,	१८,
१३	चैकोस्लोवाकिया	६९,	२८.
	कुल जोड़	१८,०१,	१०,७४,

(२)

इटैली के लड़ाई में आ जाने के कारण इँगलैंड को निम्नलिखित देशो से व्यापार करने में कठिनाई होती है:—

क्रम संख्या	देश का नाम	मूल्य लाख पौंडों में आयात	मूल्य लाख पौंडों में निर्यात
१	रूस	१,९५,	१,७४,
२	फिनलैंड	१,९३,	५९,
३	स्विटजरलैंड	७४,	४३,
४	हंगेरी	२५,	७,

५	युगोस्लाविया	२५,	१४,
६	ग्रीस	२०,	३९,
७	बलगेरिया	५,	३,
८	रूमानिया	३८,	१४,
९	टर्की	१०,	२५,
१०	मिस्र	१,१६,	८९,
११	ईराक़	२७,	२५,
१२	ईरान	९१,	५५,
१३	फिलिस्तीन	३३,	१६,
	कुल जोड़	७,५२,	५,६३,

(३)

खाद्य पदार्थों का इँगलैंड में आयात

क्रम-संख्या	खाद्य पदार्थ	आयात का वज़न (लाख मन में)
१	गेहूँ	१४,०६,
२	,, का आटा	१,०८,
३	चावल	३६,
४	मक्खन	१,३२,
५	वानस्पतिक घी	२,
६	चाय	७०,
७	शक्कर	६,७७,
८	गोश्त	३,७७,
	कुल जोड़	२८,०८,

(४)

गेहूँ और आलू (वज़न लाख मन में) ग्रेट ब्रिटेन

क्रम-संख्या	मद	में पैदा हुआ	में बाहर से आया
१	गेहूँ	१,२२,	१४,०६,
२	,, का आटा	—	१,०८,
३	आलू	२०,	—
	कुल जोड़	१,४२,	१५,१४,

जर्मनी की साम्पत्तिक क्षय

जर्मनी की साम्पत्तिक दशा

इस लड़ाई में इटैली, जर्मनी और उसके विजित देशों—पोलैंड, चैकोस्लोवाकिया, नार्वे, डैनमार्क, हालैंड, बैलजियम और फ़्रांस के समुद्री व्यापार को जो माली धक्का लगा उसका असर जर्मनी की माली ताकत और अधिक दिन तक लड़ाई जारी रखने की शक्ति पर भी पड़ रहा है। अभी से अकाल की काली घटायें जर्मनी के विजित देशो पर मँडराने लगी हैं। इस समय जर्मनी के कब्ज़े में जो देश हैं वे दुर्भिक्ष की आशंका से व्याकुल हो उठे है।

तुलना भी कर लीजिए। युद्ध से इँगलैंड के आयात-निर्यात में जहाँ २८ करोड़ पौंड की घटी हुई है, वहाँ जर्मनी और उसके साथियो को २ अरब ९२ करोड़ की क्षति अँगरेजी नाविक बेड़े ने पहुँचाई है। अथवा यदि इँगलैंड का एक रुपये का समुद्री व्यापार बंद हो गया है तो इटैली, जर्मनी और उसके विजित देशो को १० रुपये का नुकसान हो रहा है। इस पर तुर्रा यह कि बैलजियम, हालैंड और फ़्रांस के उपनिवेशो का सब माल ब्रिटिश साम्राज्य को तो अब मिलने लगेगा, लेकिन उनका एक छटांक माल भी फ़्रांस, जर्मनी, इटैली, बैलजियम या हालैंड को न मिल सकेगा, क्योंकि समुद्रो पर ब्रिटिश जङ्गी बेड़े ने दुश्मनो के व्यापारी जहाज़ों का आना-जाना रोक रक्खा है।

तीसरा खंड

परिशिष्ट (१)

आगे के परिशिष्टों में प्रत्येक देश की (अ) सरकारी आमदनी और खर्च, (इ) आयात और निर्यात का मूल्य और (उ) रक्षा-संबंधी खर्चे का ब्यौरा उसी देश की प्रधान मुद्रा में दिया गया है। इन विषयो से संबंध रखनेवाले आँकड़ो को उस देश की प्रधान मुद्रा में मूल्य के आँकड़े समझना चाहिए। उदाहरण के लिए, फ्रांस के अन्तर्गत (अ), (इ) और (उ) से संबंध रखनेवाले आँकड़ों को फ्रांस की प्रचलित मुद्रा, 'फ्रैंक', में लेना होगा। मान लीजिए कि फ्रांस का रक्षा-संबंधी खर्च १० अरब दिखाया गया है। इसका अर्थ यह है कि फ्रांस रक्षा के ऊपर १० अरब फ्रैंक खर्च करता है। पाठकों की सुविधा के लिए सन् १९३७ या ३८ में 'फ्रैंक' की पौडों में जो प्रचलित दर थी, उसका ब्यौरा हम नीचे के कोष्ठक मे दे रहे है। जो पाठक चाहें वे तुलना के लिए प्रत्येक देश के (अ), (इ) और (उ) से संबंध रखने-वाले आँकड़ों को पौडों या रुपयों में बदल सकते हैं।

संख्या (१)	देश का नाम (२)	उस देश की प्रधान मुद्रा का नाम (३)	देश विशेष की कितनी प्रधान मुद्राएँ = १०० पौं० = १३३३ रु० (४)
१	बैलजियम	फ्रैंक्स	३,५००
२	बलगेरिया	लीवा	६७,३००

(१)	(२)	(३)	(४)
३	डैन्मार्क	क्रोनर	१,८००
४	एस्टोनिया	क्रून	१,८११'
५	फिनलैंड	फिन्शामार्क	२२,७००
६	फ्रांस	.फ्रैंक	२,५२२
७	जर्मनी	राइकमार्क	२,०४३
८	ग्रीस ,,	ड्रैकमैई	३७,५००
९	हंगैरी	पेंगा	२,७८४
१०	इटैली	लीरा	९,३००
११	यूगोस्लोविया	दीनार	२६,६६७
१२	लैटविया	लेट	२,५२२
१३	लिथ्योनिया	लिट	४,८६६
१४	हालैंड	गिल्डर	१००
१५	नार्वे	क्रोनर	१,८००
१६	पोलैंड	जलाटी	४,३६४

(१)	(२)	(३)	(४)
१७	पुर्तगाल	स्क्यूडो	११,३००
१८	रोमानिया	ली	८१,३५८
१९	रूस	रूबल	२,४७४
२०	स्पेन	पेस्ता	२,५२२
२१	स्वीडैन	क्रोनर	१,८१६
२२	स्विट्ज़रलैंड	फ़्रैंक	२,५००
२३	टर्की	तुर्की पौंड	१,०३०
२४	अफ़गानिस्तान	अफ़ग़ानी रुपया	५,३३३
२५	अरेबिया	—	—
२६	चीन	चीनी डालर	—
२७	डच ईस्टइन्डीज	गिल्डर	४,८६६
२८	फ़्रेंच इन्डोचीन	फ़्रैंक	२,५२२
२९	ईराक़	दीनार	१००
३०	जापान	यान	१७,९६०
३१	मलाया	डालर	८,५४१

(१)	(२)	(३)	(४)
३२	बाहरी मंगोलिया	तोग्ररिक	२,४७९
३३	ईरान	रियाल	८,०००
३४	फिलीपाइन	पेशो	—
३५	श्याम	बाट	१,१००
३६	साइबेरिया	रूबल	२,४७४
३७	सीरिया	सीरिया पौंड	७९
३८	ट्रांस-जार्डन	—	—
३९	मिस्र	मिस्र का पौंड	९७
४०	फ्रेंच उत्तरी अफ्रीका	फ्रैंक	—
४१	इटालियन पूर्वी अफ्रीका	लीरा	९,३००
४२	लीबिया	,,	९,३००
४३	स्पेनिश उत्तरी अफ्रीका	पेस्ता	२, ५२२
४४	अलास्का	डालर	४८९
४५	मैक्सिको	पेसास	९७७

(१)	(२)	(३)	(४)
४६	यूनाइटेड स्टेट्स	डालर	४८९
४७	क्यूबा	पेसास	४८९
४८	डोमनिकन रिपब्लिक	डालर	४८९
४९	हैयटी	गोर्द	२,४४५
५०	पोरटो रिको	डालर	४८९
५१	अर्जेन्टाइन	पेसास	१,५००
५२	बोलीविया	बॉलीयचनोज	१,२३१
५३	ब्रेजील	कंटोरा	६,०००
५४	चिली	पेसास	४,३००
५५	कोलम्बिया	पेसारा	५००
५६	इक्वाडर	सूक्र	२,४६०
५७	पैरेगुआ	पेरागा	३००
५८	पीरू	सॉल	१,७३८
५९	उरागुआ	पेगास	७६०
६०	वेनीजूला	बॉलीवर	२,५२५

परिशिष्ट (२) ब्रिटिश साम्राज्य

संख्या	देश का नाम	क्षेत्रफल ह० व० मी०	आबादी लाख में	आमदनी लाख पौंड में	खर्च लाख पौंड में	आयात लाख पौंड में	निर्यात लाख पौंड में
१	ग्रेट ब्रिटेन व उत्तरी आयलैंड	९५,	४,६०,	९४,८७,	९१,९९,	९२,०४,	४७,०९,
२	आयलैंड	२७,	३०,	३,१२,	३,२०,	४,४१,	२,२२,
३	लंका	२५,	५३,	७६,	८०,	१,६२,	२,२१,
४	भारतवर्ष	१८,०९,	३५,२८,	८,९६,	९,९५,	१३,६५,	१५,७२,
५	बर्मा	२,६२,	१,४७,	१,१९,	१,०९,	१,७९,	३,७४,
६	केनिया उपनिवेश	२,१२,	३३,	३७,	३६,	९८,	९७,
७	उगंडा (प्रोटैक्टरेट)	१,१०,	३७,	२०,	१७,	३६,	५७,
८	दक्षिण अफ़्रीका (यूनियन)	४,७२,	९६,	४,३०,	३,०८,	१०,३४,	१२,५५,
९	कैनेडा	३७,३०,	१,०४,	१२,०३,	९,९६,	२६,०४,	११,९८,
१०	आस्ट्रेलिया	२९,७५,	६९,	८,९५,	९,०५,	११,४०,	१२,५८,
११	न्यूजीलैंड	१,०५,	१६,	३,६१,	३,५३,	५,६२,	६,६७,
१२	योरप में शेष भाग	—	—	१५,	१५,	—	—
१३	एशिया में शेष भाग	३०,	८८,	२,६८,	२,७७,	६,६९,	२१,१६,
१४	अफ्रीका मे ,,	३०,२५,	४,४०,	२,०२,	४,४७,	८,२४,	८,५३,
१५	अमेरिका मे ,,	२,७८,	२९,	१,४६,	१,१९,	३,७७,	२,७१,
१६	आस्ट्रेलिया ,,	१,९९,	२०,	१७,	१७,	४९,	६५,
	कुल ब्रिटिश साम्राज्य	१,३३,५४,	५१,५०,	१,४४,८२,	१,४१,९५,	१,८७,४४,	१,४४,२५,

परिशिष्ट (२)

प्रधान देशों के क्षेत्रफल, आबादी, आदि

नीचे के कोष्टक में संसार के प्रधान देशो का (१) क्षेत्रफल, (२) उनकी आबादी और (३) सालाना सरकारी आमदनी तथा (४) खर्च के आँकड़े दिये जाते हैं। आमदनी और खर्च के आँकड़े उस देश की प्रधान मुद्रा में दिये गये हैं। भिन्न-भिन्न देशों की मुद्राओं के नाम और उनकी सन् १९३८ में विनिमय-दर जानने के लिए पाठकों को परिशिष्ट (१) देखना चाहिए।

संख्या	देश का नाम	क्षेत्रफल (हज़ार वर्ग-मील में)	आबादी	लाख में १९३८ में सरकारी आय	लाख में १९३८ में सरकारी खर्च
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
१ (अ)	ग्रेट ब्रिटेन	९४,	४,६१,	१४,८७, पौ०	११,९९, पौं०
(इ)	भारतवर्ष	१८,०९,	३५,२९,	८,९६, पौ०	९,९५, पौं०
(उ)	कैनाडा	३७,३०,	१,४०,	१२,०३, पौं०	९,९६, पौं०
(ए)	दक्षिण अफ्रीका	४,७२,	९६,	४,३१, पौं०	३,०८, पौं०

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
(ओ)	आस्ट्रेलिया				
(अं)	न्यूज़ीलैंड, आदि	३०,७९,	७४,	१२,५५, पौं०	१२,५८, पौं०
२	बैलजियम	१२,	८४,	११,४८,२७,	११,५८,३१,
३	बलगेरिया	४०,	६,६७,७९	७,७२,९०,	७,७२,९०,
४	डैनमार्क	१७,	३७,	५१,८९,	५१,३९,
५	एस्टोनिया	१८,	११,	९,९३,	९,२३,
६	फिनलैंड	१,३५,	३७,	५,२१,१३,	५,२०,९९,
७	फ्रांस	२,१३,	४,१९,	६६,३४,५२,	६६,५१,७४,
८	जर्मनी	२,२५,	७,६४,	—	—
९	ग्रीस	५०,	६२,	१४,५१,९१,	१५,१०,६४,
१०	हंगैरी	४१,	१,११,	१३,३४,९७,	१३,३३,८७
११	इटैली	१,२०,	४,३०,	२४,५६,७०,	२९,३१,६०,
१२	यूगोस्लाविया	९६,	१,५६,	१,२२,	१,२६,
१३	लैटविया	२५,	२०,	१९,९९,	१२,०५,

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
१४	लिथुएनिया	५५,	२५,	३६,७९,	३६,७९,
१५	हालैंड	१३,	८६,	६२,७५,	१,००,८७,
१६	नार्वे	१,२५,	२८,	५९,५६,	५९,५६,
१७	पोलैंड	१,५०,	३,२१,	२,५२,३०,	२,५२,३०,
१८	पुर्तगाल	३५,	६८,	२,८१,५२,	२,३१,३२,
१९	रूमानिया	१,१४,	१,९५,	३०,५४,९९,	३०,५४,९९,
२०	रूस	८०,९६,	१६,५८,	१,३२,६३,७०,	१,३०,१३,७०,
२१	स्पेन	३,२५,	२,५५,	४,४२,१०,	४,५६,९०,
२२	स्वीडैन	१,७३	६३,	१,६४,२४,	१,६४,२४,
२३	स्विटजरलैंड	१६,	४२,	५१,१८,	६०,०७,
२४	टर्की	७,६३	१,६२,	२६,१०,	२६,१०,
२५	अफग़ानिस्तान	२,६३,	१,००,	१५,००,	—
२६	अरेबिया	—	—	—	—
२७	चीन	४४,८१,	४५,७८,	८७,९७,	९४,९७,

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
२८	डच ईस्ट इन्डीज़	७,३५,	६,०७,	५६,०२,	६२,१०,
२९	फ्रैंच इन्डोचीन	२,८१,	२,३९,	८,९२,	८,९२,
३०	ईराक	१,१७,	३६,	६१,	५०,
३१	जापान	१,४८,	—	८,९६,४७,	८,९६,४७,
३२	मलाया	२८,	२०,	९४,	८३,
३३	बाहरी मंगोलिया	—	—	—	—
३४	ईरान	—	—	—	—
३५	फिलीपाईन आईलैंड	१,१४,	१,२१,	५,७१,	४,२१,
३६	श्याम	२,००,	१,५०,	९२,	९९,
३७	साइबेरिया	—	—	—	—
३८	सीरिया	६०,	३६,	—	—
३९	ट्रांस-जार्डन	३८,	३,	५,	५,
४०	मिस्र	३,८३,	१,५९,	४,०२,	४,१८,
४१	फ्रैंच उत्तरी अफ्रीका	९,५९,	३४,	२२,४६,	२२,४६,

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
४२	इटैलिन पूर्वी अफ़्रीका	१७,०८	७६,	१,५९,११,	१,५९,११,
४३	लीबिया	६,८५,	९,	४६,२३,	२३,४६,
४४	स्पेनिश उत्तरी अफ़्रीका	१२,८७,	९,	—	—
४५	ऐलास्का	५,८६,	१,		
४६	मेक्सिको	७,६९,	१,६६,	४४,५७,	४४,५७,
४७	यूनाइटेड स्टेट्स	३६,८५,	१३,०२,	१,७२,७०,	१,४७,३०,
४८	क्यूबा	४४,	४१,	८,३३	८,३२,
४९	डोमिनिकन रिपब्लिक	१९,	१५,	१,१६,	१,०६,
५०	हेयटी	१०,	३०,	५६,	५८,
५१	पोरटो-रीको	३,	१५,	१,९६,	२,०१,
५२	अर्जेनटाईन	१०,८०,	१,२८,	८५,४३,	१,०४,८८,
५३	बोलीविया	५,०७,	३२,	३०,०७,	३०,०७,
५४	ब्रैज़िल	३०,७६,	४,१६,	४१,	४१,
५५	चिली	२,९७,	४६,	१,६३,५९,	१,६३,५८,

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
५६	कोलंबिया	४,४९,	८,	८,९२,	८,९९,
५७	इक्वाडर	२, ७६,	२८,	१३,२७,	१३,२९,
५८	पैरागुआ	१,७५,	९,	१,०७,	१,०७,
५९	पीरू	४,८२,	६५,	१७,४७,	१७,४७,
६०	यूरागुआ	७२,	२१,	८,९०,	८,८८,
६१	वैनीजुला	३,५२,	३५,	३५,५३,	३५,५३,

परिशिष्ट (४)

नीचे की तालिका मे संसार के प्रमुख देशो की शिक्षा-सम्बन्धी स्थिति का ब्यौरा आँकड़ों के रूप में दिया जाता है। आँकड़े पाँच प्रकार के हैं। (१) सब प्रकार के स्कूलो की संख्या, (२) उनमे शिक्षा पाने-वाले विद्यार्थियों की संख्या, (३) कालेजों और विश्वविद्यालयों की संख्या, (४) इन उच्च श्रेणी की संस्थाओ के विद्यार्थियो की संख्या और (५) तमाम स्कूल, कालेजों और विश्वविद्यालयों के अध्यापको की संख्या अलग-अलग दे दी गई है। (३), (४), (५) और (१) के आँकड़े हज़ार में हैं। (५) के आँकड़े हज़ार में नहीं हैं। वे जैसे के तैसे रख दिये गये हैं।

हज़ार में

संख्या (१)	देश का नाम (२)	सब प्रकार के स्कूलों की संख्या (३)	(३) के विद्यार्थियों की संख्या (४)	कालेजों और विश्वविद्यालयों की संख्या (५)	(५) के विद्यार्थियों की संख्या (६)	स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालय के अध्यापकों की कुल संख्या (७)
१(अ)	ग्रेट ब्रिटेन	७६,	७३,५९,	१३३	५४,	२,२४,
(इ)	भारतवर्ष	२,४०,	१,३८,५१,	३३२	१,१८,	—
(उ)	कैनाडा	३३,	२१,९०,	—	१,००,	८१,
(ए)	दक्षिणी अफ़्रीका	९,	८,७५,	—	१७,	३०.

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
(ओ) (अं)	आस्ट्रेलिया न्यूज़ीलैंड, आदि	२५,	१३,९२,	—	४०,	३९,
२	बैलजियम	१०,	१५,३४,	३०,	१८,	१८,
३	बलगेरिया	८,	१७,७५,	१३,	३१,	१,२०,
४	डैनमार्क	५,	५,४८,	२४,	११,	—
५	एस्टोनिया	१,	—	२,	४,	—
६	फिनलैंड	१३,	४,८९,	३,	७,	४,
७	फ्रांस	९२,	६१,१४,	१७,	७२,	—
८	जर्मनी	५६,	८७,५६,	२५,	४३,	२,४३,
९	ग्रीस	१,	१०,५७,	२२,	१३,	२२,
१०	हंगैरी	१५,	१३,३५,	४२,	१३,	२१,
११	इटैली	१,१७,	६६,४९,	२७,	७५,	१,९७,
१२	यूगोस्लाविया	१०,	१५,९५,	३६,	१९,	५५,
१३	लैटविया	२,	२,६४,	१,	७,	१२,

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
१४	लिथुएनिया	३,	३,३७,	९	४,	८,
१५	हालैंड	११,	२५,३६,	६	११,	१४,
१६	नार्वे	६,	४,०४,	३	४,	—
१७	पोलैंड	३२,	५२,१८,	२८	४८,	१४,
१८	पुर्तगाल	८,	५,३६,	४	७,	१४,
१९	रूमानिया	२२,	३०,१०,	२७	३४,	७०,
२०	रूस	१,६९,	२७,३०,	१,३८९	३७,	—
२१	स्पेन	५,	४७,४८,	१३	३२,	—
२२	स्वीडैन	—	६,७३,	४	१०,	३०,
२३	स्वीटजरलैंड	—	५,४८,	७	९,	१७,
२४	टर्की	६,	८,०२,	१७	९,	२०,
२५	अफग़ानिस्तान	—	—	—	—	—
२६	अरेबिया	—	—	—	—	—
२७	चीन	२,६२,	१,६९,२५,	—	—	—

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
२८	डच ईस्ट इंडीज	२०,	२०,८९,	३	—	४५,
२९	फ्रैंच इंडोचीन	७,	४,७६,	१	—	१२,
३०	ईराक	१,	५१,१८,	८	२,	—
३१	जापान	४६,	१,४८,८१,	६	१९,	३,०५,
३२	मलाया	—	६९,	२	—	—
३३	बाहरी मंगोलिया	—	—	—	—	—
३४	ईरान	—	—	—	—	—
३५	फिलीपाईन आईलैंड	८,	१३,६४,	२८	८,	३३,
३६	श्याम	१,०६,	३०,१०,	२	—	३२,
३७	साइबेरिया	—	—	—	—	—
३८	सीरिया	—	—	—	—	—
३९	ट्रांस-जार्डन	—	—	—	—	—
४०	मिस्र	४,	७,२३,	५	५,	—
४१	फ्रैंच उत्तरी अफ्रीका	—	१९,	—	—	—

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
४२	इटैलियन पूर्वी अफ्रीका	—	—	—	—	—
४३	लीबिया	—	—	—	—	—
४४	स्पेनिश उत्तरी अफ्रीका	—	—	—	—	—
४५	ऐलासका	—	—	—	—	—
४६	मेक्सिको	२९,	—	२	१०,	—
४७	यूनाइटेड स्टेट्स	२,१४,८७,	३,४८,७५,	१,३३३,	१,०८३,	—
४८	क्यूबा	१०,	५,०४,	—	—	११,
४९	डोमीनिकन रिपब्लिक	१,	—	१	—	२,
५०	हेयटी	१,	१,०५,	—	—	—
५१	पोरटो-रीको	५,	२,६२,	१	—	—
५२	अर्जन-टाईन	२,	१६,३२,	५	२८,	४,
५३	बोलीविया	१,	—	—	—	—
५४	ब्रैज़िल	३४,	—	४	—	—
५५	चिली	५,	६,६८,	—	६,	—

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)
५६	कोलम्बिया	१०,	६४,	—	—	—
५७	इक्वाडर	३,	२,१०,	—	११,	—
५८	पैरागुया	—	१,४२,	—	—	२,
५९	पीरू	५,	—	५	४,	—
६०	उरागुआ	—	—	१	१७,	—
६१	वैनीज़ूला	४,	२,३८,	२	२,	—

परिशिष्ट (५)

विभिन्न देशों का विदेशी व्यापार और उनके सौदागरी जहाज़

इस परिशिष्ट मे हम विभिन्न देशो में माल की आमदनी और उनसे विदेशों को माल की निकासी से सम्बन्ध रखनेवाले आँकड़े दे रहे हैं। आयात और निर्यात के आँकड़े दो प्रकार के हैं—(अ) वज़न और (इ) कीमत। व्यापारी जहाज़ों की संख्या और उनका टनों में वज़न भी नीचे मिलेगा। मूल्य देश-विशेष की प्रधान मुद्रा में है, जिसकी विनिमय दर परिशिष्ट (१) में दे दी गई है। आँकड़े सन् १९३८ के हैं।

(१)	(२)	(३) आयात		(४) निर्यात		(५) व्यापारी जहाज़	
नम्बर	देश का नाम	वज़न लाख टनों में (अ)	मूल्य देश की लाख मुद्राओं में (आ)	वज़न लाख टनों में (इ)	मूल्य देश की प्रधान मुद्रा में लाख में (ई)	संख्या (उ)	वज़न लाख टनों में (ऊ)
१ (अ)	ग्रेट ब्रिटेन	१८,४८,	९२,०४,	१८,११,	५३,२५,	३०,०००	१,०८,
(इ)	भारतवर्ष	१,०७,	;१,८१,९४,	१,०८,	२,०९,५३,	३५०	१,
(उ)	कैनाडा	७,७१	७९,९१,	७,७३,	१,०८,४८	९,३७३	१४,

(१)	(२)	(३ अ)	(३ आ)	(४ इ)	(४ ई)	(५ उ)	(५ ऊ)
(ए)	दक्षिणी अफ्रीका	२,४९,	९,५८,	२,४९	८,३४	—	—
(ओ) (अं)	आस्ट्रेलिया न्यूज़ीलैंड, आदि	८६,	१७,००	८९,	१८,४२	—	—
२	बैलजियम	—	३०,१६,५७,	—	२१,७२,३९,	५०६	४,
३	बलगेरिया	—	४९,८४,	—	५५,७८,	१४	—
४	डैन्मार्क	—	१,३६,९६,	—	१,६०,६५,	२,०५३	१२,
५	एस्टोनिया	—	११,११,	—	१०,६०,	३४६	२,
६	फिनलैंड	—	८,६१,२३,	—	८,४३,११,	३,४३१	५,
७	फ्रांस	३६	८,८२,	—	४,	११,३०७	२९,
८	जर्मनी	६,१२,	५,४४,९०,	५,१२,	५,२५,६०,	२,४२०	५५,
९	ग्रीस	—	१,५२,०४,३६,	—	९५,५५,२९,	१,३१८	१९,
१०	हंगैरी	१,	४१,८१,६९,	२१,	५,२१,९३,५०,	—	—
११	इटैली	—	१०,९१,८०,	—	७,९५,९०,	३,५४२	२०,
१२	युगोस्लाविया	—	४,९७,५३,	—	५,०४,७६,	१७९	२,

(१)	(२)	(३ अ)	(३ आ)	(४ इ)	(४ ई)	(५ उ)	(५ ऊ)
१३	लैटविया	—	१२,१७,	—	१२,१७,	१०३	७,
१४	लिथुएनिया	—	२२,३६,	—	२३,३२,	१,४१४	८,
१५	हालैंड	—	१,१४,८१,	—	१,०३,९२,	८९३	३५,
१६	नार्वे	—	१,१८,८४,	—	१७,५०,	४,३०८	४८,
१७	पोलैंड	२,	१,२९,९८,	१६,७०,	१,१८,४७,	१५१	२,
१८	पुर्तगाल	—	२,३५,२६,	—	१,२०,१५,	२५४	३,
१९	रूमानिया	—	३१,५६,८४,	—	३१,२२,७४,	३२	१,
२०	रूस	१२,	१,३४,१०,	१३,	१,७२,८०,	७४४	१३,
२१	स्पेन	—	३४,४३,	—	१९,२७,	८६७	११,
२२	स्वीडैन	—	२,०६,८१,	—	१,८३,८९,	२,२७०	१६,
२३	स्विटजरलैंड	—	१,६०,६९,	—	१,३१,६६,	—	—
२४	टर्की	—	१४,९८,	—	१४,४९,	१८५	२,
२५	अफ़ग़ानिस्तान	—	—	—	—	—	—
२६	अरेबिया	—	—	—	—	—	—

(१)	(२)	(३ अ)	(३ आ)	(४ इ)	(४ ई)	(५ उ)	(५ ऊ)
२७	चीन	—	८८,६२,	—	७६,२६,	२४९	५,
२८	डच ईस्ट इन्डीज़	—	४९,१२,	८,०२,	१,००,६७,	—	—
२९	फ्रैंच इन्डोचीन	—	१,५७,८१,	—	२,५८,९२,	—	—
३०	ईराक	—	९६,	—	- ५६,	—	—
३१	जापान	—	२,६६,३३,	—	२,६८,९७,	१८	५९,
३२	मलाया	—	८६,	—	१,९८,	—	—
३३	बाहरी मंगोलिया	—	२,४०,	—	—	—	—
३४	ईरान	—	—	—	—	—	—
३५	फिलीपाइन आईलैंड	—	२०,२३,	—	२९,५४,	—	—
३६	श्याम	—	१,६८,	—	१,५४,	१२	८,
३७	साइबेरिया	—	—	—	—	—	—
३८	सीरिया	—	—	—	—	—	—
३९	मिस्र	—	३,६९,	—	२,९३,	५२	१,
४०	फ्रैंच उत्तरी अफ्रीका	—	—	—	—	—	—

(१)	(२)	(३ अ)	(३ आ)	(४ इ)	(४ ई)	(५ उ)	(५ ऊ)
४१	इटैलिन पूर्वी अफ़्रीका	—	—	—	—	—	—
४२	लीबिया	५,	६२,३३,	१,	१२,२४,	—	—
४३	स्पेनिश उत्तरी अफ़्रीका	—	—	—	—	—	—
४४	एलास्का	—	—	—	—	—	—
४५	मेक्सिको	—	६१,३९,	—	८९,२४,	५१	—
४६	यूनाइटैड स्टेट्स	—	२,३६,१३,	—	३,४०,११,	२६,५८८	१,४७,
४७	क्यूबा	—	१०,६०,	—	१४,२७	४२	—
४८	डोमीनिकन रिपब्लिक	—	१,१६,	—	१,८१,	१२०	—
४९	हेयटी	—	९०,	—	७०,	७२२	१६,
५०	पोर्टो-रीको	—	९,३३,	—	८,२१,	—	—
५१	अर्जन-टाइन	—	१,४६,०९,	—	१,४०,०३,	३३५	३,
५२	बोलीविया	—	५,०३,	—	१२,४६,	—	—
५३	ब्रैजिल	४५,	४,०६,	३१,	४,२५,	२९७	५,

(१)	(२)	(३ अ)	(३ आ)	(४ इ)	(४ ई)	(५ उ)	(५ ऊ)
५४	चिली	—	४२, ८९,	—	९४, ७६,	९९	—
५५	कोलम्बिया	—	१६, ९७,	—	१५, २२,	—	—
५६	इक्वाडर	—	१४, ७०,	—	१६, ५९,	—	—
५७	पैरागुआ	—	१, २४,	—	१, २१,	—	—
५८	पीरू	—	२६, ०२,	—	३४, २१,	३३	१,
५९	यूरागुआ	—	·७, ४४,	—	९, ६३,	५०	१,
६०	वैनीज़ूला	—	३०, ४६,	—	८७, ६५,	४८	—
६१	ट्रांस-जार्डन	—	—	—	—	—	—

परिशिष्ट (६)

विभिन्न देशों का रक्षा-सम्बन्धी ख़र्च

नीचे की तालिका में विभिन्न देशों का सन् १९३८ में रक्षा-विभाग पर व्यय का ब्यौरा दिया जाता है। ये आँकड़े पूरे नहीं हैं। कई देश थल-सेना और जल-सेना पर ख़र्च के साथ ही हवाई बेड़ों का ख़र्च मिलाकर दिखाते हैं। ऐसी दशा में तीनों विभागों का अलग-अलग ब्यौरा देना कठिन है।

प्रत्येक देश का ख़र्च उस देश की प्रधान मुद्रा के आँकड़े में समझना चाहिए। मुद्रा के नाम और उसकी सन् १९३८ में विनिमय-दर के लिए परिशिष्ट (१) को देखिए।

देश-विशेष की प्रधान मुद्रा में—लाख में आँकड़े

संख्या	देश का नाम	थल-सेना पर ख़र्च	जल-सेना पर ख़र्च	हवाई-सेना पर ख़र्च
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१ (अ)	ग्रेट ब्रिटेन	१४,८२,	१२,९७,	२२,०६,
(ब)	भारतवर्ष	५०,७८,	—	—
(उ)	कैनाडा	२,०८,	८५,	२,९८,
(ए)	दक्षिण अफ्रीका	१८,	—	—

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
(ओ) (अं)	आस्ट्रेलिया न्यूजीलैंड, आदि	१६,३७,	५८,	—
२	बैलजियम	१,५४,८६,	—	—
३	बलगेरिया	१,७५,०६,	—	—
४	डैन्मार्क	३,९०,	२,९१,	—
५	एस्टोनिया	१,८५,	—	—
६	फिनलैंड	१,४०,९५,	—	—
७	फ्रांस	७,५०,००,	४,४६,००,	—
८	जर्मनी	—	—	—
९	ग्रीस	—	—	—
१०	हंगैरी	१५,५१,	—	—
११	इटैली	३,४०,६०,	१,९४,३०,	२,१६,५०,
१२	युगोस्लाविया	२,६३,९६,	—	—
१३	लैटविया	—	—	—

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
१४	लिथुएनिया	—	—	—
१५	हालैंड	—	—	—
१६	नार्वे	२,४८,	१,९७,	—
१७	पोलैंड	—	—	—
१८	पुर्तगाल	—	—	—
१९	रूमानिया	११,८३,५०,	—	—
२०	रूस	—	—	—
२१	स्पेन	—	—	—
२२	स्वीडेन	—	४,९४,	—
२३	स्विटज़रलैंड	१९,३९,१२,	—	—
२४	टर्की	७,१४,	६३,	७८,
२५	अफ़ग़ानिस्तान	७,६२,	—	—
२६	अरेबिया	—	—	—
२७	चीन	—	—	—

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
२८	डच ईस्ट इन्डीज़	—	—	—
२९	फ़्रैंच इंडोचीन	—	—	—
३०	ईराक	१५,	—	—
३१	जापान	४९,५०,	६५,३०,	—
३२	मलाया	—	—	—
३३	बाहरी मंगोलिया	—	—	—
३४	ईरान	—	—	—
३५	फिलीपाइन आईलेंड	—	—	—
३६	श्याम	२,६०,	—	—
३७	साइबेरिया	—	—	—
३८	सीरिया	—	—	—
३९	ट्रांस-जार्डन	—	—	—
४०	मिस्र	४५	—	—
४१	फ़्रैंच उत्तरी अफ़्रीका	—	—	—

(१)		(३)	(४)	(५)
४२	इटैलियन पूर्वी अफ्रीका	—	—	—
४३	लीबिया	—	—	—
४४	स्पेनिश उत्तरी अफ्रीका	—	—	—
४५	ऐलास्का	—	—	—
४६	मेक्सिको	८,४०,	—	—
४७	यूनाइटेड स्टेट्स	३८,४९,	५०,७८,	७,०६,
४८	क्यूबा	—	—	—
४९	डोमिनिकन रिपब्लिक	१०,	—	—
५०	हेयटी	६८,	—	—
५१	पोरटो-रीको	—	—	—
५२	अर्जेनटाईन	—	—	—
५३	बोलीविया	—	—	—
५४	ब्रैजिल	—	—	—
५५	चिली	—	—	—

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)
५६	कोलम्बिया	—	—	—
५७	इक्वाडर	१,६८,	—	—
५८	पैरागुआ	—	—	—
५९	पीरू	२,३०,	—	—
६०	यूरागुआ	—	—	—
६१	वैनीजूला	—	—	—

———

परिशिष्ट (७)

प्रमुख सात महाराष्ट्रों की सामरिक शक्ति

नीचे सात महाराष्ट्रों की जल थल, और हवाई सेनाओं तथा बेड़ों का सविस्तर ब्यौरा दिया जाता है। इससे पाठकों को तुलना में सुविधा होगी। आँकड़ो को देखते समय पुस्तक के आरम्भ में दिये हुए साम्राज्यों के विस्तार और वितरण के मानचित्र को भी देख लेना चाहिए, क्योंकि जहाँ रूस की सारी शक्ति देश ही के अंदर संगृहीत है, वहाँ फ़ांस और इँगलैंड की सेनायें संसार के विभिन्न देशों में तितर-बितर हैं।

(१) जर्मनी

(अ) फ़ौज :—

(१) ४५ डिवीज़न्स	६३०,०००
१ केवलरी ब्रिगेट	२,०००
६ मेकनाज़ डिवीज़न्स	४४,०००
फ़ोर्टट्रूप्स	८०,०००
(२) रिज़र्व ४५ डिवीज़न्स	—
२० होम गार्डट्रूप्स	
कुल रिज़र्व फ़ौज की शक्ति	२२,५०,०००
कुल जोड़	३०,०६,०००

(इ) जल-सेना और जहाज़—

(१) वैटिलशिप्स	४
हैवीक्रूज़र	५
लाइट क्रूज़र	६
डेस्ट्रोयर	४३
सबमेरीन	५९
प्लेन कैरियर	२

(२) परसानल :—

(१) एक्टिव	५०,०००
(२) रिज़र्व	२०,०००
जोड़	७०,०००

१८ कोआपरेटिव स्क्वाड्रन

हैवी वाम्बर	१२० शिप
लाइट वाम्बर	७२ ,,

(उ) जंगी हवाई बेड़ा

(१) स्क्वाड्रन :—

९६ हैवी वाम्बर	१,००० शिप
३० लाइट ,,	३६० ,,
१०८ फाइटर	१,२९६ ,,
३० रेकानेशेन्स	४०० ,,
जोड़	३,०५६ ,,

(२) रिज़र्व प्लेन :—

फर्स्ट लाइन	३,०५६ ,,
सेकेन्ड लाइन	२,५०० ,,
जोड़	५,५५६ ,,

(३) परसानल :—

मिलीटरी पाइलेट	१०,००० शिप
अन्य अन्य	५५,००० „
जोड़	६५,००० „

(४) ऐन्टीएयर क्रेफ्ट आर्टिलेरी :—

३४ मोबिल रेजीमेंट १२ फार्टी फाइड एरिया या कोस्टल रेजीमेंट	१,००,०००
९ वार्निंग इन्टेलिजेन्स यूनिट	२०,०००
२८ एयर डिपो यूनिट	२१,०००
	कुल २,०६, परसानल

(२) फ्रांस

(अ) फ़ौज :—

(१) मेट्रोपोलिटन आर्मी

३० डिवीज़न ४ केवलरी डिवीज़न ३ मोबिल	४,००,०००
फोर्टेस्ट्रूप	१,८०,०००
३० कोआपरेटिव स्क्वाड्रन जन्डार्मेरी वा गोर्ड मोबिल	५०,०००
जोड़	६,३०,०००

(२) रिज़र्व :—

२१ डिवीज़न ५० आर्टलेरी रेज़ीमेंट	५,००,०००
कुल टोटल (मेट्रो पोलिटन आर्मी)	११,३०,०००

(३) कलोनियल आर्मी :—

५ डिवीज़न वा १ ब्रिगेट १ केवलरी डिवीजन	७०,०००

(४) कलोनियल रिज़र्व :—

ग्लोबल कोटेशियल ट्रेन्ड मैन पावर	६०,००,०००

(६) जल-सेना और जहाज़ :—

(१) बैटिल शिप — ८

हैवी क्रूज़र	७
लाइट ,,	११
डेस्ट्रोयर	६३
सबमेरीन	८०
प्लेन कैरियर	१
कोआपरेटिव स्क्वाड्रन	२५

(२) परसानल :—

(१) एक्टिव	७३,६८३
(२) रिज़र्व	४४,२५०
जोड़	१,१७,९३३

(७) जंगी हवाई बेड़े

(१) स्क्वाड्रन :—

७० बाम्बर	७७० शिप
६० फाइटर	१,२०० ,,
६० रेकानेशेन्स	७३० ,,
टोटल फर्स्ट लाइन	२,७०० ,,
रिज़र्व प्लेन	१,००० ,,
कुल जोड़	३,७०० ,,

(२) परसानल :—

मिलिट्री पाइलेट	६,०००
अन्य अन्य	५८,६५०
जोड़	६४,६५०

५ रेज़ीमेंट एयरक्रैफ्ट आर्टिलेरी :—

(फ़ौज का हिस्सा)

(३) यूनाइटैड स्टेट्स

(अ) फ़ौज :—

(१) रेग्यूलर अर्मी :—

(क) ग्राउन्ड ट्रूप

४ डिवीज़न व ५ ब्रिगेड	६८,५००
१ केवेलरी डिवीज़न	४,८००
१ मैकनाइज्ड ब्रिगेड	२,२००
४ एयरक्रैफ्ट रेज़ीमेंट	३,२००
फोर्टस्ट्रूप	५,८००
सर्विस कमांड	३१,०००
जोड़	१,१५,५००

(ख) ओवरसी गेरिज़न ४४,०००

(ग) एयर कार्प

स्क्वाड्रन

२२ वाम्बर

१५ फाइटर

१० रेकेनेशेन्स

१३ आवज़रवेशन

टोटल फर्स्ट लाइन प्लेन १,२०० शिप

ट्रेनिंग व कार्गो „ ८०० „

परसानल :—

पाइलट	रेग्युलर आर्मी	१,६५०
	रिज़र्व	८५०
	अन्य अन्य	२०,०००
	कुल रेग्युलर आर्मी का जोड़	१,८२,०००

(२) नेशनल गार्ड :—

१८	डिवीज़न	१,४७,०००
४	केवेलरी डिवीज़न	११,५००
१०	एन्टीक्रैफ्ट रेज़ीमेंट	७,०००
	फोर्ट्रेस्ट्रप	५,५००

एयर कोर :—

१९ आवजरवेशन स्क्वाड्रन	१८५
परसानल :–	
मिलिट्री पाइलट	३००
अन्य अन्य	१,७००
जोड़	२,०००
कुल नेशनल गार्ड	१,७१,०००
,, कुल रेग्यूलर आर्मी नेशनल गार्ड	३,५३,०००

(३) रिजर्व :—

रेग्युलर आर्मी रिजर्व	२०,०००
आफिसर्स रिजर्व कोर	८०,०००
टोटल ट्रेन्ड मैन पावर	४,५३,०००
रिज़र्व आफिसर्स ट्रेनिंग कोर	×

(इ) जल सेना और जहाज़ः—

वैटिल शिप	१५
हैवी क्रूज़र	१९
लाइट ,,	१०
डेस्ट्रौयर	२११
सब मेरीन	८४
एयरक्रेफ्ट केरियर	६
,, ,, टेन्डर	१
स्लोप	२३
माइन लेयर	६

परसानल :—

एक्टिव मेरिन कोर	१,४१,०००
रिज़र्व	५२,०००
जोड़	१,९३,०००

एयर कोर—

स्क्वाड्रन—

३९ वाम्बर

७ फाइटर

३ आवज़रवेशन

स्काउटिंग और स्पाटिंग

फर्स्ट लाइन के कुल लड़ाकू जहाज	१,१००० शिप
यूटिलिटी	४०० ,,
नैवेल पाइलट	३,५०० ,,

—०—

(४) ग्रेट ब्रिटेन

(अ) फ़ौजः—

(१) रेग्यूलर आर्मी :—

५ डिवीज़न	७३,०००
१ मोविल डिवीज़न } १ मैकनाइज्ड ब्रिगेड }	१२,०००
फोर्टेस्ट वा कोस्ट डिफेंस ट्रूप	१५,०००
एन्टी एयर क्रैफ्ट आर्टिलेरी	७५,०००
टोटल रेग्यूलर आर्मी	१,७५,०००

(भारतवर्ष की ब्रिटिश आर्मी नहीं सम्मिलित है)

१० कोआपरेटिव स्क्वाड्रन

(२) टेरी टोरियल आर्मिः—

१२ डिवीज़न	२,००,०००
२ कैवेलरी ब्रिगेड	५,०००
२ मैकनाइज्ड डिवीज़न	१०,०००
५ मोविल ,,	७०,०००
जोड़	२,१५,०००

(इ) जल-सेना और जहाज़ :—

बैटिल शिप	१५
हैवी क्रूज़र	१७
लाइट क्रूज़र	४२
डिस्ट्रावायर	१५८
सवमेरीन	५४
प्लेन कैरियर	६
	२९२

परसानल :—	१,२१,६५०
(१) एक्टिव	६७,४००
(२) रिज़र्व	१,८९,०५०
जोड़	
फ्लीट एयर आर्मी :—	४५० शिप
पैट्रोल प्लेन	
(उ) जङ्गी हवाई बेड़े :—	८०० शिप
बाम्बर	२,१००
कंबाट	४००
रेकानेशेन्स	३,३००
टोटल फर्स्ट लाइन	३,८००
रिज़र्व	७,१००
कुल जोड़	
परसानल :—	५,०००
पाइलट	८३,०००
अन्य अन्य	८८,०००
जोड़	

(५) सोवियट रूस

(अ) फ़ौज :—

(१) रेग्यूलर आर्मी :—	३,९०,०००
२६ डिवीज़न	१,४०,०००
१४ कैवेलरी डिवीज़न	४२,०००
३ मैकनाइज़्ड डिवीज़न	१५,०००
टैंक कोर	५०,०००
फोर्टेस्ट्रूप	२८,०००
२८ मोबिल रेजीमेंट	—
कोआपरेटिव स्क्वाड्रन	६,६५,०००
जोड़	

(२) रिज़र्व :—

२१ डिवीज़न	१,५८,०००
१५ कैवेलरी डिवीजन	७५,०००
इन्टीरियर गार्ड	१,५०,०००
जोड़	३,८३,०००
मोबिल	१२.८१,०००

(३) टेरी टोरियल आर्मी :—

४२ डिवीज़न	७.३०,०००
टोटल आर्गनाइज़्ड स्ट्रेंथ	२०,२१,०००
पोटेंशियल ट्रेंड मैनपावर	१,४०,००,०००

(इ) जल-सेना और जहाज :—

वैटिल शिप	५	
हैवी क्रूज़र	७	
लाइट क्रूजर	४	
डेस्ट्रॉयर	२३	
सबमेरीन	२००	
कोस्टल मोटर बोट	८०	
गन बोट	३२	
आर्म्ड लांच	७५	
परसानल		६०,०००
कोआपरेटिव स्क्वाड्रन		—

(उ) जङ्गी हवाई वेड़े :—

स्क्वाड्रन :—

१४० बाम्बर	४२० शिप
६० लाइट बाम्बर	१,००० ”
४६० फाइटर	३,०३० ”
रेकोनेशेन्स	१,१०० ”
कुल जोड़	५,५५० ”

परसानल :—

पाइलट	८,०००
अन्य अन्य	५१,०००
जोड़	५९,०००

(६) इटैली

(अ) फौज :—

(१) रेग्यूलर आर्मी :—

३७ डिवीजन	५,००,०००
कैवेलरी "	
४ मैकनाइज्ड "	४०,०००
५ फोर्टस्ट्रूप	६०,०००
एन्टीएयर क्रैफ्ट डिफेंस	२०,०००
१० कोआपरेटिव स्क्वाड्रन	—
कुल रेग्यूलर आर्मी	६,२०,०००

(२) रिजर्व :—

फैसिस्ट मीलीशिया	५,००,०००
अन्य ट्रेंड रिजर्व	३,३०,०००
टोटल मोबीलाइज़ेबुल	१४,५०,०००

(३) कलोनियल आर्मी :—

रेग्यूलर यूनिट	१७,०००

(इ) जल-सेना और जहाज़ :—

बैटिल शिप	४
हैवी क्रूज़र	७
लाइट क्रूज़र	१५
डेस्ट्रॉयर	६२
सबमरीन	८७
एयर क्रैफ्ट टेंडर	१

२६ कोअपरेटिव स्क्वाड्रन १८० शिप

परसानल :—

(१) एक्टिव	७०,०००
(२) रिजर्व	३५,०००
जोड़	१.०५,०००

(उ) जंगी हवाई वेड़े

स्क्वाड्रन :—

८० वाम्बर	८०० शिप
७० फाइटर	९६० "
रेकानेशेंस	४०० "
कुल फर्स्ट लाइन	२,१६० "

रिज़र्व—

सब तरह के	१ ८००
कुल जोड़,	३,९६०

परसानलः—

पाइलट	८,०००
अन्य अन्य	५४,०००
जोड़	६२,०००

(७) जापान

(अ) फौज :—

(१) रेग्यूलर आर्मी—

१७ डिवीज़न	४,२५,०००
४ कैवेलरी ब्रिगेड	२०,०००
मैकनाइज़्ड एलीमेंट	
एन्टीएयर क्रैफ्ट	
आर्टिलरी कोर	११,०००
फोर्टे स्ट्रूप	१५,०००
४ ब्रिगेड हैवी आर्टिलरी	१०,०००

एयर फोर्स—

स्क्वाड्रन—

११ आबज़रवेशन	१६५	शिप
११ फाइटर	,,	,,
४ वाम्बर	४०	,,
टोटल फर्स्ट लाइन	२७०	,,
,, सेकेन्ड ,,	८००	,,
कुल जोड़	१०७०	,,

परसानल—

पाइलट	१,५००
अन्य अन्य	११,०००
जोड़	१२,५००

(२) रिज़र्व—

१७ डिवीज़न	४,२५,०००

(३) मंचूको गैरीजन—

४ डिवीज़न	८०,०००
२ कैवलरी ब्रिगेड	१०,०००
२ टैंकरेज़ीमेंट	२,१००
फोर्टेस्ट्रूप	५,०००
२० ब्रिगेड	१,००,०००
टोटल मंचूको गैरीजन	१,९७,१००

(४) कैरिया गैरिज़न—

२ डिवीजन } फोर्टेट्रूस्प }	५०,०००

(५) फार्मोसा गैरिजन—

३ रेजीमेंट इन्फैन्ट्री फोर्टस्ट्रेप एन्टी ऐयर क्रैफ्ट	८,०००
कुल जोड़ (गैरिजन्स)	११,७३,६००
टेरिटोरियल रिजर्व	१०,००,०००

(६) जल-सेना और जहाज़—

वैटिल शिप	१०
हैवी क्रूज़र	१२
लाइट ,,	२५
कोस्ट डिफेंस शिप	५
डेस्ट्रॉयर	११२
एयर प्लेन कैरियर	५
सीप्लेन ,,	३
एयर क्रैफ्ट टेन्डर	२
सब मेरीन	७०

नेवल एयर फोर्स—

फर्स्ट लाइन नेवल एयर फोर्स	१,००० शिप
सेकेण्ड ,, ,,	१,००० ,,
जोड़	२,००० ,,

नेवेल परसानल :—

(१) एक्टिव	१,०७,०००
(२) रिजर्व	५३,०००
जोड़	१,६०,०००

—

परिशिष्ट (८)

सन् १९३८ ई० में निम्न देशों में जितना सोना निकला, उसके आँकड़े नीचे दिये जाते हैं।
आउंस = २॥ (ढाई) तोला

नम्बर	देश का नाम	कितना सोना निकला—हज़ार (आउंसो में)
१	आस्ट्रेलिया	१५,७०,
२	कैनेडा	४६,८०,
३	गोल्ड कोस्ट	६,६८,
४	भारतवर्ष	३,२२,
५	न्यू गाइना	२,२०,
६	दक्षिणी अफ्रीका	१,२१,५७,
७	दक्षिणी रोडेशिया	८,१४,
८	दूसरे साम्राज्य	६,४९,
९	ब्रिटिश कामन वेल्थ के अन्य देश	२,१०,८०,
१०	चिली	२,७०,
११	कोलंबिया	५,१५,

नम्बर	देश का नाम	कितना सोना निकला—हज़ार आउंसों में
१२	कांगो	४,५०,
१३	जापान	८,००,
१४	कोरिया	७,३०,
१५	मेक्सिको	९,५०,
१६	फिलीपाइन	८,६२,
१७	यूनाइटेडस्टेट्स	४२,४४,
१८	रूस	५०,००,
१९	अन्य देश	१८,४९,

परिशिष्ट (९)

संसार में कपास की पैदावार

सन् १९३८ में किस देश में कितनी कपास पैदा हुई, इसका ब्यौरा हम नीचे देते हैं। रुई का आधुनिक संसार में जो महत्त्व है उसको हम सब आसानी से समझ सकते हैं। लड़ाई के दिनों में जिन देशों में कपास नहीं पैदा होती, उनके लिए इसका मोल सोने से भी अधिक हो जाता है। इस दृष्टि से इन आँकड़ों को आज दिन विशेष ध्यान से पाठक देखेंगे। कपास का वजन पौंड में दिया गया है। १६५ पौंड = २ मन।

संख्या	देश का नाम	(कपास की पैदावार करोड़ पौंडो में)
१	यूनाइटेड स्टेट्स	९,३५,
२	हिन्दुस्तान	२,६३,
३	चीन	१,३१,
४	रूस	१,५५,
५	मिस्र	१,०८,
६	ब्रैजील	
		१,०४,

परिशिष्ट (१०)

निम्न देशों में सन् १९३८ मे (१) लोहे और (२) फौलाद की तैयारी के आँकड़े नीचे दिये जाते हैं :—

		लोहा—हजार टनो में	फौलाद—हजार टनो मे
१	यूनाइटेड स्टेट्स	१,९६,००,	२,८८,००,
२	ग्रेट ब्रिटेन	६८,७२,	१,०५,६१,
३	फ्रांस	६०,२७,	६१,००,
४	बैलजियम	२४,६३,	२२,८४,
५	लेक्सिमबर्ग	१५,५४,	१४,४०,
६	इटैली	९,३०,	२४,००,
७	स्वीडैन	७,१३,	९,७५,
८	जर्मनी	१,८६,५५,	२,२९,५१,
९	चैकोस्लोवाकिया	१२,२५,	१७,५०,
१०	पोलैंड	९,७१,	१५,७०,
११	रूस	१,५०,००,	१,८२,००,
१२	जापान	३३,००,	६०,००,

परिशिष्ट (११)

सन् १९३८ में किस देश में कितना पैट्रोल निकला :—

नम्बर	देश का नाम	कितना पैट्रोल निकला (लाख टनों में)
१	यूनाइटेड स्टेट्स	१६,५०,
२	सोवियट रूस	२,९०,
३	वैनीजूला	२,७७,
४	ईरान	१,००,
५	रूमानिया	६६,
६	डच इन्डीज़	७३,
७	मैक्सिको	४८,
८	ईराक	४३,
९	कोलंबिया	३०,
१०	पीरू	२१,
११	अर्जनटाइन	२४,
१२	ट्रिनीडाड	२५,
१३	भारतवर्ष	३,
१४	अन्य देश	६३,

परिशिष्ट (१२) (अ)

जंगी जहाज़—जो तैयार थे

निम्न देशों के उन जंगी जहाज़ों का ब्यौरा नीचे दिया जाता है, जो अप्रैल १,१९३९, को बन चुके थे।

संख्या		ब्रिटिश साम्राज्य	यूनाइटेड स्टेट्स	जापान	फ्रांस	इटैली	जर्मनी
१	बैटिल शिप	१२	१५	९	७	४	५
२	लड़ाकू क्रूज़र	३	—	—	—	—	—
३	एयर क्रेफ्टकेरियर	९	५	८	२	१	—
४	क्रूज़र	६४	१५	३८	१८	२१	६
५	माइन डालनेवाले क्रूज़र	१	—	६	१	—	—
६	माइन लेयर	६	—	५	२	१०	—
७	मानीटर	३	—	—	—	५	—
८	नेटलेयर	२	—	—	१	—	—
९	डिस्ट्रायर व फ्लोटिला लीडर	१७४	२०८	१००	५९	६३	३४

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)	(८)
१०	टारपीडो बोट	१९	२	१२	१४	१४६	६
११	सब-मेरिंग्न	५५	९०	५९	७७	१०३	६५
१२	स्कोर्ट वेसिल	३७	५	—	९	१	२
१३	रिवरगन बोट	१८	५	७	९	१	—
१४	माइनस्वीपर	४२	४१	१६	२	४४	२६
१५	पेट्रोलवेसेल	८	२	२	२९	१०	१०

परिशिष्ट (१२) (ङ)

जंगी जहाज़ जो बन रहे हैं

निम्न देशों के उन जंगी जहाज़ों का ब्यौरा नीचे दिया जाता है, जो अप्रैल १,१९३९, को बन रहे थे।

संख्या		ब्रिटिश साम्राज्य	युनाइटेड स्टेट्स	जापान	फ्रांस	इटैली	जर्मनी
१	बैटिलशिप	७	६	२	४	४	३
२	एयर क्रैफ्ट कैरियर	५	४	३	२	—	२
३	क्रूज़र	१९	६	६	३	१२	९
४	माइनलेयर	४	—	१	—	—	—
५	डेस्ट्रौयर वा फ्लाटिला लीडर	२३	३८	१२	२०	८	८
६	टारपीडो बोट	९	—	८	४	२	२४
७	सबमेरीन	१४	१६	१०	१७	२०	६
८	एस्कोर्टवैसैल	१४	—	—	१	—	—
९	रिवर गन बोट्स	४	—	—	१	—	—
१०	माइन-स्वीपर	४	२	२	—	—	१८
११	पैट्रोल वैस्सैल	३	—	—	२२	—	—

परिशिष्ट (१२) (उ)

जंगी जहाज़ जो प्रस्तावित थे

निम्न देशों के उन जंगी जहाजो का व्यौरा नीचे दिया जाता है, जिनके बनने की मंजूरी अप्रैल, १९३८, मे मिल चुकी थी।

संख्या		ब्रिटिश साम्राज्य	युनाइटेड स्टेट्स	जापान	फ्रांस	इटैली	जर्मनी
१	बैटिल शिप	२	२	२	—	—	१
२	एयर क्रैफ्ट कैरियर	१	—	१	—	—	—
३	क्रूज़र	४	—	—	—	—	—
४	माइन-लेयर	—	१	—	—	—	—
५	डेस्ट्रॉयर फ्लोटिला लीडर	१८	—	—	४	—	—
६	टारपीडो बोट	१०	३	—	—	—	—
७	सब-मेरीन	४	—	—	—	—	—
८	एस्कोर्ट वैसेल	१२	—	—	—	—	—
९	रिवर गन बोट	१	—	—	—	—	—
१०	माइन-स्वीपर	१०	—	—	—	—	—
११	पैट्रोल वैसेल	—	२	—	—	—	—

परिशिष्ट (१३)

व्यापारी जहाज

भिन्न-भिन्न देशो के पास कितने व्यापारी जहाज़ जून ३०, १९३८, में थे, उनकी तालिका नीचे दी जाती है।

संख्या	देश का नाम	१९३८ जहाज़ों की संख्या	१९३८ कुल वज़न (१,००० टन मे)	सन् १९३८ और सन् १९१४ का अन्तर जहाज़ों की संख्या	सन् १९३८ और सन् १९१४ का अन्तर वज़न (हज़ार टन में)
१	ग्रेट ब्रिटेन और आयलैंड	६,८४३	१,७६,७५,	– १,७४४	+ १२,१७,
२	ब्रिटश साम्राज्य	२,२१८	३०,४३	+ ६२२	+ १४,१२,
३	डैनमार्क	६९४	११,३०,	+ ११८	+ ३,५९,
४	फ्रांस	१,२४६	२८,८१,	+ २२१	+ ९,५८,
५	जर्मनी	२,३२१	४२,३२,	+ २३१	– ९,०३,
६	ग्रीस	६३८	१८,८९,	+ २३१	– १०,६८,
७	हालैंड	१,४७३	२८,५२,	+ ७६४	+ १३,८०,

संख्या	देश का नाम	१९३८		सन् १९३८ और सन् १९१४ का अन्तर	
		जहाज़ों की संख्या	कुल वज़न (१०००) टन में	जहाज़ों की संख्या में	वज़न (हज़ार टन में)
८	इटैली	१,१५६	३२,५९	+ ५१९	+ १८,२९,
९	जापान	२,१८७	५०,०७,	+ १,०८४	+ ३२,९८,
१०	नार्वे	१,९६३	४६,१३,	+ ३०७	+ २६,५६,
११	स्पेन	७९३	९,४८	+ २०४	+ ६४,
१२	स्वीडैन	१,२३९	१५,७१,	+ १५१	+ ५,५६,
१३	यूनाइटेड स्टेट्स	२,८५७	१,१४,०३,	+ १,१६५	+ ७१,१७,
१४	अन्य देश	३,७८१	६३,६६,	+ १,०३२	+ २८,८९,